"वैदिक ज्योतिष"

लेखकः- मुकुन्द त्रिवेदी

किसी वस्तु को देखने का वैज्ञानिक आधार है; परन्तु भारतीय दर्शन आध्यात्म, योग और ज्योतिष शास्त्र, किसी चीज को जानने के लिए; एक और अंग को भी महत्वपूर्ण मानता है। और वह है मन। मन हमारी तीसरी सूक्ष्म दृष्टि है। इसे आप मनोविज्ञान समझें या अर्न्तदृष्टि या इन्टचुशन (Intution) कहें। जीवन में ऐसे रहस्य हैं, जिन्हें भौतिक विज्ञान नहीं समझ सकता। इसके लिए मानसिक चेतना आवश्यक है। योगी इसे आज्ञा चक्र कहते हैं। इसका निवास स्थान भ्रू-मध्य है। अर्थात दोनों आँखों के मध्य से थोड़ा ऊपर। इसे दिव्य दृष्टि का केन्द्र भी कहते हैं।

चाहे कोई भी शास्त्र या विज्ञान हो। मनुष्य किसी भी विषय विशेष पर; कितना भी अध्ययन कर ले किन्तु वह पारंगत नहीं हो सकता। आप चाहें डाक्टर हों या प्रोफेसर, आप पढ़ लिखकर महान नहीं हो सकते। किसी भी विषय को पढ़कर सिर्फ पचास या साठ प्रतिशत ही अधिक से अधिक सीखा जा सकता है। चालीस प्रतिशत तो आपकी अपनी सुक्ष्म अर्न्तदृष्टि ही काम करती है। कुछ लोग इसे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण कहते हैं। परन्तु ज्योतिष की भाषा में इसे इन्टचुशन "अन्तःचेतना" कहते हैं। इसे आप छठ्ठी इन्द्रिय या सिक्स्थ सेंस (Sixth Sense) भी मान सकते हैं। इसे आप कुछ भी माने; कुछ भी कहें। भारतीय योग शास्त्रियों ने इसे आज्ञा चक्र माना है।

हमारे दोनों स्थूल नेत्रों से अधिक सक्षम एक तीसरा नेत्र प्रत्येक मनुष्य के पास होता है। परन्तु यह जागृत नहीं रहती। इस तीसरी दृष्टि को खोलने या आज्ञाचक्र को जाग्रत करने के लिए विभिन्न योग साधना एवं अनुष्ठानों का विधान है। इस अर्न्तज्योति के विकाश द्वारा कोई भी जीवित प्राणियों की मनःस्थिति, भावना, कल्पना, योजना, इच्छा, आस्था, एवं प्रकृति को समझा जा सकता है।

हमारे दोनों नेत्रों के मध्य में तीसरे नेत्र का परिचय भारतीय योगियों ने ईसा से हजारों वर्ष पहले जाना और माना। दोनों भौहों के मध्य भाग में जो स्थान है, उसे भृकुटि कहते हैं। इसके नीचे अस्थिआवंरण के बाद एक बैर की गुठली जैसी ग्रन्थि है, इसे ही आज्ञा चक्र कहते हैं। शरीर शास्त्रियों ने इसका वैज्ञानिक कार्य और प्रयोजन अभी तक नहीं जाना है। परन्तु यही सूक्ष्म एवं दिव्य दृष्टि का संस्थान है। यही कारण है कि योगी, पुजारी इस भ्रूमध्य स्थान पर चन्दन का टीका लगाते हैं ताकि वह शीतल और शान्त रहे। अन्दर से मस्तिष्क मुख्यतः दो भागों में बाँटा है। बीच की दीवार यदि निकाल दें, तो याददास्त रहेगी किन्तु विवेक के बिना कोई काम खुद ठीक से नहीं कर पायेगा।

पुरातन भारतीय ग्रन्थि में भगवान शिव का प्रसंग आया है। सब जानते है कि उनको तीसरी दृष्टि थी। कथा के अनुसार इसी तीसरी दृष्टि को खोलकर शिव ने काम देव को अग्नि में भस्म कर दिया था। महाभारत के प्रसंग में संजय ने युद्ध के सारे दृष्य (टेलिविजन की तरह) धृतराष्ट्र को अर्न्तदृष्टि से देखकर सुनाये थे। यह सारी बातें शायद आज हम काल्पनिक मान लें। परन्तु आधुनिक जगत में ढेरों ऐसे उदाहरण देखने और सुनने को मिलते हैं; जिस पर सहज ही विज्ञान विश्वास नहीं करता।

कुछ दिन पूर्व रूस में प्रकाशित होने वाली समाचार पत्र इजवेस्तिया में एक समाचार प्रकाशित हुआ था। इसमें निझनी तागिल नामक स्थान में रहनेवाली रोजा नाम की युवती की चर्चा की गई थी। यह युवती उँगलियों से छूकर किसी भी पुस्तक को पढ़ सकती थी। आश्चर्य यह था कि बिना देखे, किसी भी पत्र पत्रिका या किताब की तस्वीरों को छूकर वह बता देती थी कि यह तस्वीर किसकी है। मनुष्य के आकृति का वर्णन वह सहज रूप में कर देती थी। वैज्ञानिकों ने कई कठिन जांच करने के बाद उसकी आँखों पर पट्टी बांध कर भी देखा। परन्तु रोजा ने हर बार सही जानकारी दी।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक मिस्टीक प्रो. फौब्शन ने एक ऐसे अन्धे व्यक्ति का परीक्षण किया जो उँगलियों से छूकर ऐसे विवरण बताया करता था, जो साधारण आँखों के बिना नहीं जाना जा सकता।

भूमिगत अदृष्य वस्तुओं को देखने तथा भूगर्भ में छुपी जलधारा और अनेक वस्तुओं का जानकारी देनेवाली विद्या को रेण्डी मेंसी कहते हैं। ऐसे कई लोगों के पास सूक्ष्म दृष्टि होती है; जिन्हें भूगर्भ विद्या की कोई जानकारी नहीं होती; फिर भी वह बता सकते हैं कि किसी भूमि पर खुदाई करने पर पानी प्राप्त हो सकता है। यह सब सूक्ष्म शरीर की दिव्य दृष्टि, आज्ञा चक्र का चमत्कार है। इसकी मर्यादा और क्षमता बहुत बढ़ी-चढ़ी है।

भाग्योदय कब, कहाँ कैसे ?

किस व्यक्ति का भाग्योदय कब, कहाँ और कैसे होगा यह कोई नहीं जानता। एक मामूली व्यक्ति भी निम्न स्थान से उठकर उच्च स्थान पर पहुंच जाता है। इन का कारण उसके मजबूत ग्रह है। कभी-कभी किसी को थोड़े समय के लिए लाभ एवं प्रगति होती है। कुछ लम्बे समय तक सुख भोगते हैं। इसे हम विवेचन द्वारा समझ सकते हैं।

जातक की कुंडली में उसके जन्म लग्न तथा चन्द्र लग्न में एक या दो ग्रह अवश्य कारक होता है। कारक का अर्थ केवल शुभ ग्रह ही नहीं, बल्कि क्रूर ग्रह भी हो सकते हैं। जैसे कर्क लग्न में मंगल एवं बृषभ लग्न में शनि जैसे ग्रहों को भी हम कारक कह सकते हैं, क्योंकि यह जहाँ भी बैठेगे वहीं शुभ फल प्रदान करेगे। इसकी दशा भी अच्छी जाती है। अतः कुंडली में कारक ग्रह की शुभ स्थिति जातक को अपनी दश में अक्सर उपर उठा देती है। चाहें वह ग्रह नीचे के ही क्यों न हो। हाँ, अपवाद में ऐसे वक्री ग्रह कभी-कभी प्रगति में व्यवधान देते हैं।

यदि कुंडली में किसी कारक ग्रहों की स्थिति शुभ हो तो गोचर वश अपने भ्रमण के दौरान यह ग्रह जिन-जिन राशियों से गुजरेगा, वहाँ-वहाँ शुभ फल प्रदान करेगा। जैसे कर्क लग्न में मंगल और कुंभ लग्न में शुक्र ग्रह कारक है। यह ग्रह गोचर में भ्रमण के दौरान कुंडली

में जिन-जिन राशियों से गुजरेगा, वहीं लाभ एवं प्रगति देता जायेगा। यदि यह ग्रह स्वग्रही या उच्च के या किसी शुभ स्थान में बैठे हो तो अवश्य गोचर भ्रमण के दौरान उस भाव संबंधी फल में लाभ देता रहेगा। चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल जैसे ग्रह अधिक समय तक किसी राशि में नहीं बैठते, अतः वह भाव संबंधी विशेष फल कुछ समय के लिए ही प्राप्त होता है।

यहाँ एक बात बहुत महत्वपूर्ण है। कुंडली के कारक ग्रह गोचर वश जब-जब शुभ भाव से गुजरेंगे तो शुभ फल प्रदान करते हैं। इसी प्रकार अशुभ भाव (3.6.8.12) से जब भी भ्रमण के दौरान पारित होगे तो उस भाव संबंधी फल में असर करेंगे। यदि कारक की स्थिति शुभ न हो, वक्री हों या अकारक दशा चल रही हो तो तृतिये में परेशानी, षष्ठ भाव में शत्रु तथा रोग भय, द्वादश में खर्च एं झंझट होती है। कई बार कुंडली का कारक ग्रह बहुत अधिक या कम अंश का हो तो भी कई बार निष्फल हो जाता है।

कुंडली में अकारक ग्रह की दशा अच्छी नहीं जाती। गोचर भ्रमण के दौरान यह शुभ भावों से गुजरते वख्त अशुभ तथा परेशानी वाला फल देता है। परन्तु यही ग्रह गोचर भ्रमण में यदि त्रिक स्थानों (3,6,8,12) से गुजरे तो बूरा फल नहीं मिलता इस विषय में अनुसंधान एवं अनुभव की आवश्यकता है।

अब भाग्योदय का एक और पहलू को देखे दशम भी कर्म भाव है। इस भाव में यदि कोई ग्रह उच्च का स्वग्रही या शुभ अवस्था में कोई ग्रह बैठा हो तो उसकी दशा अच्छी जाती है। दशमेश यदि उच्च का होकर एकादश लग्न या द्वितीय भाव में बैठे तो भी दशा अच्छी जाती है। दशम भाव चूंकि कर्म संबंधी भाव है। अतः इसकी दशा में व्यक्ति कार्य करके प्रगति करता है। परन्तु इसके लिए दशम या दशमेश पाप प्रभाव में न हो, यह देखना चाहिए।

सप्तम स्थान पत्नी भवन है। इसके साथ-साथ यह एक गुप्त स्थान भी है। एक अदृष्य और रहस्यमय शक्ति को अन्दर में छुपाया

हुआ स्थान है। सप्तम भाव का संबंध जब दशम भाव से किसी भी प्रकार से हो तो राजयोग प्रदान करता है। यह संबंध युति-प्रतियुति या दृष्टि संबंधी कहं भी किसी भी भाव में हो सकता है। ठीक इसी तरह सप्तम भाव का संबंध यदि लग्न से किसी भी प्रकार से हो तो भी उसकी दशा अन्तर्दशा में राजयोग प्राप्त होता है।

उदाहरण स्वरूप हम इंन्दिरा गांधी की कुंडली की कुंडली को ले सकते हैं। इनका कर्क लग्न है। लग्नेश चन्द्रमा सप्तम भाव में बैठा है और सप्तम भाव का स्वामी शनि लग्न में बैठा है। इस तरह दोनों ग्रह (चन्द्र और शनि) एक दूसरे के घर में बैठ कर एक दूसरे को देख भी रहे है। शनि की महादशा भी इनकी कुछ वर्षो से चल रही है। अतः यह राजयोग प्रदान करती है। ऐसे अनेको उदाहरण सप्तम और लग्न से सम्बन्धित मिल सकते है। सप्तम तथा दशम का सम्बंध भी राजयोग वाली कुण्डलियों में मिलेगें।

परन्तु सप्तम स्थान का सम्बन्ध यदि चतुर्थ से हो। यह सम्बन्ध युति-प्रति युति या दृष्टि सम्बन्धा भी हो सकता है। तब वह अच्छा नहीं। बूरा फल प्राप्त होता है। विशेष कर उसकी दशा में व्यक्ति को बदनामी तथा अपयश मिलता है। बदनामी का कारण कोई भी स्त्री पक्ष हो सकता है। इसी प्रकार सप्तम का सम्बन्ध द्वादश भाव के साथ भी ठीक नहीं।

अब हम ग्रहों से सम्बन्धित भाग्योदय वर्ष पर ध्यान दे। हर ग्रह की अपनी विशेषता होती है। प्रत्येक कुण्डली में कोई एक ग्रह आवश्य कारक या आलकारक होता है। उसी प्रकार कोई एक ग्रह आलकारक हो, भाग्येश हो, लग्नेश हो या कर्मेश हो उसी ग्रह के अनुरूप वह कार्य करता है। जैसे सूर्य ग्रह 22 वर्ष की उम्र में भाग्योदय देता है। उसी प्रकार अन्य ग्रहों में चन्द्रमा 24 वर्ष की उम्र में, शुक्र 25 वर्ष, गुरू 18 वर्ष, बुध 32, मंगल 28, शनि 36 वर्ष, राहु 42 वर्ष तथा केतु 48 वर्ष में भाग्योदय देता है। भाग्योदय वर्ष से सम्बंधित ग्रह की यदि दशा भी चल रही हो तो शुभ फल प्राप्त होता है। परन्तु इसके लिए यह आवश्यक

है कि सम्बंधित ग्रह किसी पाप ग्रह से पीड़ित न हो तथा शुभ स्थान में बैठा हो।

जैसे चन्द्रमा किसी शुभ कारक या उच्च ग्रह के साथ या अकेले ही दशम भाव में बैठा हो तो उस व्यक्ति को 24 वर्ष की उम्र में कोई कर्म (चन्द्रमा से सम्बंधित) लाभ होता है। ऐसे में यदि चन्द्रमा की महादशा भी चल रही हो तो बहुत शुभ फल मिलता है परन्तु यहाँ दो शर्त भी है। प्रथम तो चन्द्रमा किसी पाप ग्रह से पीड़ित न हो। दूसरा चन्द्रमा उस लग्न कुंडली में अकारक ग्रह न हो। इसकी दशम भाव में स्थिति भी अपने घर से तृतिये, षष्ठ, अष्ठम तथा द्वादश की न हो। तब ही यह शुभ फल देगा।

इसी प्रकार यदि नवम भाव में राहु हो तो 42 वर्ष की उम्र में भाग्योदय होगा अर्थात उस समय कुछ विशेष आर्थिक लाभ होता है। एक कुंडली (बृश्चिक लग्न) में नवम स्थान में गुरू उच्च का होकर बैठा है। नवम भाव का स्वामी मंगल लग्न में बैठा है। इस जातक को 19 वर्ष की उम्र से गुरू की महादशा शुरू हुई। गुरू वक्री है। गुरू 18 वर्ष में भाग्योदय देता है। अतः वह व्यक्ति अधिक पढ़ा लिखा न होते हुए भी 18 वर्ष की उम्र से कमाने लगा। इसका गुरू चूंकि वक्री है अतः 19 वर्ष में जब गुरू की दशा शुरू हुई तो उस धंधे में भी इसने बहुत रूपये कमाये। उस समय गोचर में गुरू की स्थिति भी शुभ थी। यदि इस जातक का गुरू वक्री न होता तो यह गलत ढंग से आर्थिक प्रगति न करते। बल्कि अच्छे ढंग आगे बढ़ते।

****

नैसर्गिक मित्रता

लेखकः- मुकुन्द त्रिवेदी

	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
सूर्य	-	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	-	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	सम	सम
शुक्र	शत्रु	मित्र	-	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	सम	-	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरू	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	-	सम	मित्र	मित्र	सम
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	-	शत्रु	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	-	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	-	शत्रु
केतु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-

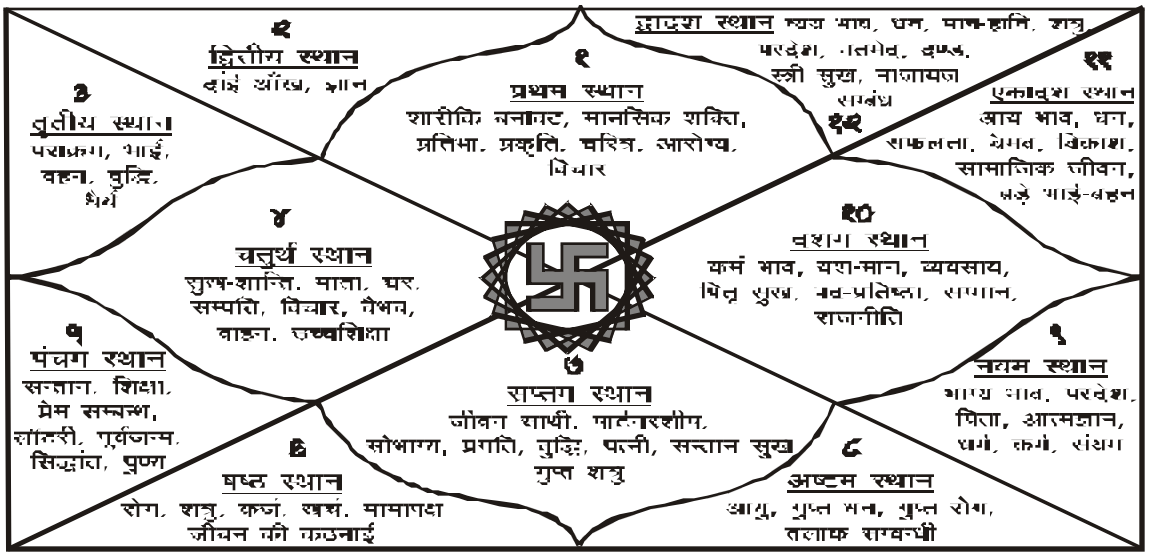

हस्त रेखा ज्ञान

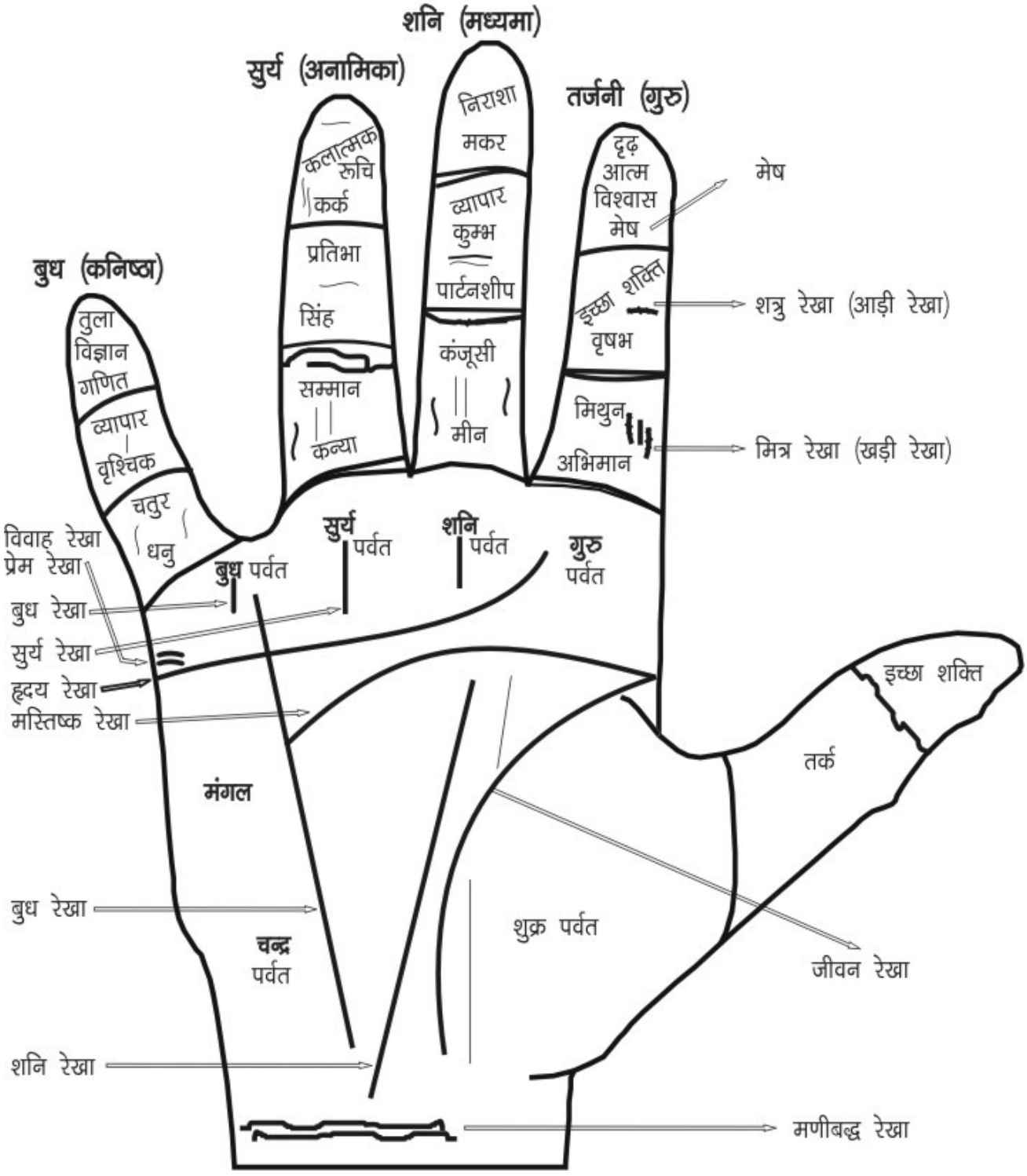

शनि (मध्यमा)
सुर्य (अनामिका)
तर्जनी (गुरु)
बुध (कनिष्ठा)
निराशा
मकर
व्यापार
कुम्भ
पार्टनशीप
कंजूसी
मीन
कलात्मक रुचि
कर्क
प्रतिभा
सिंह
सम्मान
कन्या
दृढ़ आत्म विश्वास
मेष
इच्छा शक्ति
वृषभ
मिथुन
अभिमान
तुला
विज्ञान
गणित
व्यापार
वृश्चिक
चतुर
धनु
मेष
शत्रु रेखा (आड़ी रेखा)
मित्र रेखा (खड़ी रेखा)
विवाह रेखा
प्रेम रेखा
बुध रेखा
सुर्य रेखा
हृदय रेखा
मस्तिष्क रेखा
बुध पर्वत
सुर्य पर्वत
शनि पर्वत
गुरु पर्वत
मंगल
इच्छा शक्ति
तर्क
शुक्र पर्वत
चन्द्र पर्वत
बुध रेखा
जीवन रेखा
शनि रेखा
मणीबद्ध रेखा

जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली में बारह भाव होते हैं, जो हमारे जीवन के विभिन्न विषय के बारे में जानकारी देते हैं। जैसे प्रथम भाव, कुण्डली के ऊपर रहता है, दूसरा भाव उसकी बाईं ओर (एंटी क्लाक) के रूप में चलता है। घड़ी का यह काँटे की तरह क्रमशः तीसरा भाव, चौथा... और बारहवें भाव में यह समाप्त हो जाता है। इन्हीं बारह भावों में हमारे जन्म समय के तमाम ग्रह बैठे रहते हैं। इन ग्रहों का फलादेश हमें आगे के अध्याय में करेंगे।

इसी प्रकार चन्द्र कुण्डली, भाव कुण्डली, नवांश कुण्डली आदि 16 प्रकार की कुण्डलियाँ बनती है। ज्योतिष शास्त्र में यह विभिन्न कुण्डलियाँ हमारे जीवन के विभिन्न विषयों, व्यक्तियों, परिस्थितियों की जानकारी देते हैं। हर ज्योतिष की अपनी एक विधा और पकड़ होती है। सामान्यतः लोग सब प्रकार की कुण्डली बनवाते हैं। किन्तु मेरे विचार से जन्म कुण्डली, नवांश एवं भाव कुण्डली प्रमुख है। इसके बाद उन तमाम का अध्ययन जरूरी है। फिर विशोत्तरी महादशा अर्न्तदशा-प्रत्यंतर दशा के अलावा योगिनी दशा भी जान लेनी चाहिए तो फलादेश करना सरल होता है।

सिद्धान्तों का व्यवहारिक वर्णन

1. जन्म लग्न में प्रथम भाव; जातक का प्राण होता है। चन्द्र लग्न उसका शरीर है। सूर्य उस प्राण की आत्मा है और चन्द्रमा उसका मन। अतः सूर्य की शुभ स्थिति जहाँ व्यक्ति को शरीर में उग्रता, साहस, दृढ़ता और जीने की शक्ति देता है। वहीं चन्द्रमा हृदय को जीने की कला प्रेरण देता है। केन्द्र में चन्द्रमा की शुभ स्थिति चंचलता, भावुकता और अनिश्चता देता है। मंगल एक शक्ति का प्रतीक है। यह चूंकि क्षत्रिय ग्रह है, अतः यह साहसी, क्रोधी, निर्भिक और शीघ्रता से कार्य करवाता है। धैर्य का अभाव उसे पराक्रम से कभी-कभी विपत्ति में डालता है। बुध एक नपुंसक ग्रह होते हुए भी बुद्धि में सबसे आगे है। यह बोलने या लिखने की श्रेष्ठ कला देता है।

केतु के साथ इसके बल में बीस गुनी शक्ति आ जाती है, किन्तु विपरित वक्री होने पर बुध बलिष्ठ हो जाता है। यह जिस भाव, राशि या अन्य ग्रहों के साथ बैठेगा, उसी के अनुसार शुभ-अशुभ फल देता है।

2. यदि शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो नैसर्गिक शुभ ग्रह बलवान होते हैं। कृष्ण पक्ष में पापी ग्रह बलिष्ट होते हैं। शुक्ल पक्ष की तिथियों के अनुसार शुभ ग्रह की शक्ति बढ़ती है, कृष्ण पक्ष में घटती है।
3. यदि जन्म दिन के प्रथम भाग प्रातः हो तो बुध कुण्डली में बली होता है। दोपहर में जन्म होने पर सूर्य बली होता है। सूर्यास्त के समय का जन्म शनि को शक्तिशाली रूप देता है। रात्री के प्रथम भाग में चन्द्रमा, मध्य रात्री में शुक्र और सूर्योदय के पहले सारा बल मंगल को प्राप्त होता है।
4. चर राशी मेष, कर्क, तुला, मकर की अपेक्षा स्थिर, बृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि बलवान होती है। उससे बलवान द्विस्वभाव, मिथुन, कन्या, धनु, मीन राशियाँ होती हैं।
5. मंगल, बुद्ध, गुरू, शुक्र और शनि ग्रह, उत्तरोत्तर वक्री होने पर बलिष्ठ होते जाते हैं। मंगल एक मात्र ऐसा ग्रह है, जो अपने घर या मित्र ग्रह की अपेक्षा शत्रु ग्रह में अधिक क्रूर, बलवान और साहस दिखाता है।
6. वायु तत्व मिथुन, तुला, कुम्भ विचारशील राशि है। वायु, हवा में हमारे सोचने की शक्ति बढ़ जाती है। द्विस्वभाव राशियों के स्वामी बुध, गुरू में बुद्धि और ज्ञान का सागर है। जहाँ वायु तत्व विचार और विवेचन देता है, वहाँ चर, मेष, कर्क, तुला, मकर राशि उन विचार या भावनाओं को कार्य रूप प्रदान करने की शक्ति देता है। इन लोगों में परीक्षण और निरीक्षण की अन्तरदृष्टि होती है। स्थिर राशियों विचारों में स्थिरता और धैर्य देता है। अग्निय, मंगल, सूर्य, धनु का गुरू राशि शक्ति, साहस और उत्साह देता है। अग्निय राशि यदि चर, मेष हो तो पुरूषार्थ, स्पष्टवादी, निर्भिक और परिश्रमी होता है।

स्थिर राशि, सिंह, रोब अभिमान, धैर्य और आत्मविश्वास पैदा करता है।

7. अब ग्रहों के विषय में विचार करें। शुक्र ग्रह षष्ट या द्वादश में जातक को जीवन में ऐश्वर्य, सुख, सुविधा, भोजन, वस्त्र और आवासी की अच्छी सुविधा देता है। किन्तु जीवन में एक सुख से व्यक्ति वंचित हो जाता है। शनि ग्रह द्वितीय और अष्टम में ऊँची आयु प्रदान करता है। विशेषकर यह तृतीय, षष्ट, अष्टम या द्वादश भाव का स्वामी हो तो योग कारी होता है। केतु ग्रह तृतीय भाव में अपना साहस और शौर्य दर्शाता है। राहु की शुभ स्थिति चतुर्थ, सप्तम, नवम, दशम और एकादश भाव है। वृषभ, मिथुन और कन्या का राहु अच्छा है।

8. क्रूर या पापी ग्रह यदि तृतीय, षष्ट या एकादश भाव में हो, तो व्यक्ति अवश्य कभी झंझट या परेशानी में फंसेगा, किन्तु उससे बचकर भी निकल जाता है। ऐसा जातक भंयकर भूल से फंसता भी है और निकलता भी है।

9. जन्म कुण्डली में लग्न से सप्तम भाव तक पुरुष का दांया भाग और स्त्री का बांया भाग दर्शाता है। उसी प्रकार सप्तम से आगे प्रथम भाव तक पुरुष का बांया भाग और स्त्री का दांया हिस्सा होता है। इसके द्वारा रोग या लाभ हानि के विषय में जाना जा सकता है।

गुरु ज्ञान का प्रतीक है। गुरु जनों से हम ज्ञान लेते हैं। गुरु के द्वारा व्यक्तित्व का विकाश होता है। यह सहनशीलता, परिपक्वता, व्यवहारिकता, अनुभव, ज्ञान और विचारों का विवेचन की शक्ति देता है। मनुष्य में दृढ़ता, धैर्य, प्रेम, आदर भावन, सत्यता, नेतृत्व, साहस और उच्च अभिलाषा प्रदान करता है।

शुक्र एक सुसंस्कृत, कलाप्रिय और आनन्द कारक ग्रह है। यह प्रेम, सहानुभूति, विलासी तथा ऐश्वर्य कारक है। शरीर की अपेक्षा बुद्धि और कला द्वारा यश, मान और धन प्राप्त करता है।

शनि को लोग स्वार्थी और मलिन ग्रह मानते हैं। किन्तु मेरे विचार से शुभ स्थिति में शनि शिव का प्रतीक है। यह धीमा अन्तर्मुखी ग्रह की शुभ स्थिति, अपनी दशा में जातक के हृदय में आन्तरिक हृदय में अच्छी

प्रेरण देता है, जिसके द्वारा वह पुरातन शास्त्रों, इतिहास, दर्शन, कला, धर्म या कोई गुढ़ रहस्यमय विद्या का सृजन करता है। व्यक्ति अपनी बुद्धि परिश्रम एवं लगन द्वारा यश प्राप्त करता है। धर्म और ज्ञान का उदय होता है किन्तु अन्य ग्रहों से प्रभावित या पीड़ित होकर शनि अपनी बुद्धि और ज्ञान का उपयोग भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए करता है। शनि का संबंध यन्त्र, मशीनरी आदि से है। किन्तु इसके लिए अन्य ग्रहों का शुभ-अशुभ प्रभाव अधिक महत्व का है। शनि किस भाव या राशि में बैठा है यह भी जान लेना आवश्यक है। इसके अलावा शनि की दशा महत्व की है। गोचर में शनि की स्थिति भी जान लेनी आवश्यक है।

राहु एक मलिन विचारों वाला ग्रह है। यह जातक को पाप की तरफ अर्थात गलत रास्ते पर भी कई बार ले जाता है। किन्तु सदैव नहीं, इसकी दशा को लोग ठीक नहीं मानते। यह सच है कि राहु की दशा उथल-पुथल मचा देती है। किन्तु शुभ स्थिति का राहु व्यक्ति को बहुत ऊँची स्थिति में ले जाता है। वैसे राहु का चरित्र ठीक नहीं। यह कभी शुभ कार्य में सफलता नहीं देता। वैसे राजनीति, तस्करी या ऐसे व्यापार में अधिक सफलता देगा, जिसमें दो नम्बर की कमाई हो, अर्थात सरकार से छूपाया पैसा हो। राहु विष है। रहस्यमय है। अतः राहु की शुभ स्थिति में व्यक्ति रहस्यमय, ज्योतिषी, तन्त्र ज्ञान, धर्म आदि विषय में सफलता देता है। ऐसा व्यक्ति परदेश में रहकर प्रगति करता है। अच्छे विज्ञानिक आविष्कार भी करते हैं। यह अविष्कार या संशोधन किसी भी विषय का हो सकता है जैसे तकनिकी, टेकनिकल, भौतिकी, केमिकल, दवा, दारू या आध्यात्म, साहित्य आदि विषय में।

राहु अपना असर विशेषकर अपनी दशा में बताता है। राहु की अशुभ स्थिति अपनी महादशा या अन्तर्दशा में व्यक्ति को झकझोर देता है। जीवन में बहुत उतार चढ़ाव आते हैं। जातक शारीरिक या मानसिक कष्ट, चिन्ता, परेशानी में रहता है। उसके कार्य में रूकावट, मदभेद, दुर्घटना, और शत्रु से भय होता है। बार-बार स्थान परिवर्तन या नौकरी रोजगार में तब्दिली या झटका लगता है घर से दूर रहना पड़ता है। मन में असन्तोष या नौकरी रोजगार में तब्दिली या झटका लगता है। घर से

दूर रहना पड़ता है। मन में असन्तोष, निराश, उदासी रही है। मन चिड़चिड़ा, हताश, क्रोधी, एकांकी और अन्तर्मुख हो जाता है। व्यर्थ की भटकन और यात्राएं होती रहती है। कभी-कभी बहुत रोने को जी करेगा। मन में अपराध भावना जागृत होगी, जिससे किसी को मार देने या मर जाने की इच्छा भी होगी। शिक्षा काल में व्यवधान आयेगा। राहु जहर होने के कारण अपनी दशा में दुर्घटना या फूड प्वायज़न हो जाता है, या व्यक्ति आत्महत्या का प्रयास करता है। राहु छाया ग्रह है तथा इसमें शनि के गुण दोष भी है।

किन्तु राहु की दशा अचानक लाभ भी देती है। राहु की स्थिति राशि और भाव देख लेना चाहिए। गोचर में राहु की स्थिति बदलती रहती है। अतः यह शुभ स्थिति में अच्छा फल देती है। कुण्डली में राहु किस नक्षत्र में है, यह जान लेना चाहिए, उसके स्वामी का फल प्राप्त होता है। यह किसके साथ बैठा है, यह भी जाने।

केतु ग्रह के विषय में फलाफल करते वक़्त इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। यह मंगल जैसा प्रभाव तो देता है, किन्तु अपने नक्षत्र स्वामी का असर अवश्य देगा। यह एक चालाक, साहसी, तेज, स्वार्थी, लोभी और बुद्धिमान ग्रह है। यह अपना असर राशि और भाव के अनुसार देता है। केतु का खराब असर चमड़ी और हड्डी पर देता है। यह किस ग्रह के साथ बैठा है, यह भी जानना चाहिए। वैसे केतु अपना प्रभाव गोचर में भ्रमण के दौरान राशि बदलने तथा अपनी दशा में देता है। केतु दशा में चिन्ता, दुविधा, एकाग्रता का अभाव, एवं ध्यान इधर-उधर भटकता है। पहले से हटकर काम में परिवर्तन आता है।

यदि किसी कुण्डली में शनि ग्रह तुला में उच्च का हो और जातक को शनि की महादशा भी चल रही हो, तो कुछ ज्योतिषी वह समय उसके लिए निश्चय ही अच्छा कहेंगे। किन्तु नहीं उस वक़्त यदि गोचर में शनि ग्रह कन्या राशि में बैठा हो तो कम से कम अढ़ाई वर्ष तक का वह समय कष्ट, खर्च, चिंता दायक रहेगा। शनि एक राशि पर लगभग अढ़ाई वर्ष तक रहता है। यह समय हम ठीक नहीं कहेंगे।

क्योंकि कुण्डली में गोचर का शनि का (कन्या राशि) में अपने से द्वादश स्थिति होगी। कोई भी ग्रह का अपने से द्वादश (व्यय) स्थान में बैठता अशुभ होता है। मान लीजिए कुण्डली में गुरू वृश्चिक राशि में बैठा है और उस समय गोचर तुला राशि का हो तो वह समय जातक के लिए ठीक नहीं, क्योंकि गुरू की स्थिति अपने से द्वादश होगी। यह स्थान परिवर्तन कराता है। किन्तु जन्म स्थान से दूर यह शुभ फल देता है।

इस तरह कुण्डली में फलादेश देते वक्त गोचर ग्रहों की स्थिति जान लेना आवश्यक है।

दूसरी आवश्यक बात ध्यान देने योग्य यह है कि जातक की कौन सी दशा अन्तर्दशा चल रही है, यह जान लेना आवश्क है। इसके लिए भी छः बातें जान लेनी ज़रूरी है।

1. किसी ग्रह की महादशा जा रही है ?
2. वह ग्रह शुभ है या अशुभ ?
3. वह ग्रह किस भाव का स्वामी है तथा किसमें बैठा है ?
4. वह ग्रह कुण्डली में नीच का है, उच्च का है या वक्री है ?
5. उस पर किस ग्रह की शुभ-अशुभ दृष्टि है ?
6. वह ग्रह लग्न या चन्द्र कुण्डली में कारक है या अकारक ?

इन सब बातों को देखने के बाद ही कुछ फलादेश करना ठीक होता है। कुछ लोग यह समझते हैं कि राहु-केतु या शनि-मंगल जैसे क्रूर या पापी ग्रहों की दशा, कष्ट कारक या मारक होती है। किन्तु यह बात नहीं है। इनकी दशा उन्नतिदायक और शुभ भी हो सकती है। शर्त यह है कि जातक काम क्या करता है।

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। स्वरशास्त्र में बताया गया है कि जिसका जन्म शुक्ल पक्ष में हो उसको अष्टोंतरी दशा द्वारा तथा जिसका जन्म कृष्ण पक्ष में हो उसका विशोंतरी दशा के द्वारा शुभा-शुभ कहना चाहिए।

जिस ग्रह की महादशा जा रही हो उसे लग्न मानकर, अन्तर्दशा या प्रत्यंतरदशा सम्बंधी ग्रह की स्थिति जान लेनी चाहिए। यदि महादशा

नाथ से अन्तर्दशा नाथ अपने से ग्रह शुभ स्थान में हो तो वह भाव सम्बंधी फल अच्छा प्रदान करता है। यदि वह अपने से तृतीय, षष्ठ, अष्टम या द्वादश स्थान में बैठा हो तो परिणाम बूरा होगा॥ द्वितीय, चतुर्थ, नवम, दशम, एकादश स्थान में बैठा है तो शुभ होगा

फलादेश के नियम

जन्म कुण्डली देखते वक्त पहले कौन सा लग्न है यह देखें। फिर ग्रहों की स्थिति देखें। कुण्डली में कारक और अकारक ग्रह को परखो। फिर शुभ-अशुभ ग्रहों का निरिक्षण करें। कई बार मंगल, शनि, राहु-केतु जैसे क्रूर ग्रह भी कारक बनते हैं और गुरू, शुक्र बुध जैसे शुभ ग्रह भी अकारक होते हैं। जन्म लग्न में जो शुभ एवं कारक ग्रह होता है, वह अपनी दशा अन्तर्दशा में शुभ फल देता है। अशुभ एवं अकारक ग्रह अपनी दशा में खराब फल देता है। यह खराबी कैसी होगी, यह उस ग्रह की दशा और भाव पर निर्भर करता है, जिसका वह स्वामी है। अतः लग्न कुण्डली में शुभ ग्रहों की शुभ स्थिति आवश्यक है। अकारक ग्रह मंगल, राहु, शनि, केतु की अशुभ 3, 6, 8, 12, भाव की स्थिति अच्छा फल देता है। इन भावों में सौम्य ग्रह (शुक्र, बुद्ध, गुरू) शुभ फल अपनी दशा में नहीं देते।

जन्म लग्न का शुभ ग्रह गोचर में जिन राशियों में (कुण्डली में) भ्रमण करेगा, वह उस कुण्डली के उन भावों को प्रभावित करेगा और शुभ फल देगा। जैसे कुंभ लग्न में सबसे शुभ ग्रह शुक्र है। वह जिस भाव में बैठेगा और जिस पर दृष्टि डालेगा, उसे मजबूत बनायेगा। गोचर में भी यह शुक्र भ्रमण के दौरान; यह जिन-जिन राशियों से गुजरेगा उस भाव से संबंधित अच्छा फल प्रदान करेगा। जैसे द्वितीय भाव में धन-सुख; सप्तम में स्त्री सुख; दशम में प्रगति आदि। इसी प्रकार कर्क लग्न का शुभ, ग्रह मंगल कुण्डली में उन भावों को तो शुभ बना ही देता है, जिसमें बैठता है, और जिसे देखता है। इसके साथ-साथ, गोचर के भ्रमण के दौरान यह मंगल कुण्डली के जिन-जिन भावों से गुजरेगा, उससे संबंधी शुभ फल देगा। शुभ ग्रहों की दशा अन्तर्दशा भी शुभ जाती है। किन्तु उसकी स्थिति अच्छी होनी चाहिए। किसी क्रूर ग्रह से वह दृष्ट या पीड़ित न हो। अकारक ग्रहों की दशा कई बार अशुभ फल देती है। किसी-किसी लग्न में क्रूर पापी ग्रह, शनि, मंगल गोचर में जिन-जिन भावों से गुजरेगा, उसके संबंध में अशुभ फल देगा। उसकी दशा अन्तर्दशा भी अच्छी नहीं जायेगी।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि कौन सी दशा अन्तर्दशा अच्छी या बुरी जायेगी। या किस दशा को हम माने ! हमारे शास्त्र में मुख्यतः तीन दशाओं का वर्णन है - प्रथम जो देश के उत्तर या मध्य भारत तथा कई प्रदेशों में मानी जाती है। वह है विशोंतरी महादशा जो 120 वर्ष की होती है। दूसरी है अष्टोंतरी महादशा जो 108 वर्ष तक चलने वाली तीसरी योगिनी दशा है। इसका प्रचलन प्रायः बन्द है। प्राचीन काल में इसके महत्व को बल दिया जाता था। यह दशा 36 वर्ष की होती है। कुछ लोग इसे 36 वर्ष की उम्र के बाद भी मानते हैं। इसे भी ज़रूर देखना चाहिए !

अनादिकाल से विद्वानों ने हमारे समक्ष यहाँ एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी कर दी है। काल चक्र के साथ-साथ मान्यताएं तो बदलती गई, किन्तु अंततः प्रश्न वहीं खड़ा रहा। विशोंतरी या अष्टोंतरी दशा में किसे माना जाये। यह समस्या आधुनिक ज्योतिषियों के समक्ष कई बार होता रहा है। वैसे स्वर शास्त्र में कहा गया है कि जिसका जन्म शुक्ल पक्ष में हो उसे अष्टोंतरी दशा द्वारा तथा जिसका जन्म कृष्ण पक्ष में हो उसे विशोंतरी महादशा द्वारा शुभ-अशुभ फल कहना चाहिए। परन्तु इसके बावजूद भी हज़ारों वर्ष पूर्व हमारे ग्रन्थकारों ने अपने-अपने ढंग से विशोंतरी या कभी अष्टोंतरी दशा को महत्व दिया है। आज भी कई विद्वानों दक्षिण या पूर्व में, अष्टोंतरी दशा द्वारा सही फल करते हैं। कुछ लोगों का विशोंतरी महादशा द्वारा सटीक भविष्यवाणी होती है। कई बार लग्न का कारक ग्रह, शुभ स्थिति के बावजूद भी दशा अन्तर्दशा में शुभ फल नहीं देता। कई बार लग्न का अकारक ग्रह शुभ स्थिति और दृष्टि में भी बूरा फल नहीं देता। कदाचित इसका कारण विशोंतरी, अष्टोंतरी और योगिनी दशा में किसी एक को मानना है। ऐसे में चाहिए कि दोनों दशाओं द्वारा प्रयोग कर लें। कई बार जन्म लग्न से सूर्य लग्न अथवा चन्द्र लग्न अधिक बली होता है। अतः नवांश भी देखना आवश्यक है। ऐसे भी आधुनिक ज्योतिषी को चाहिए की केवल ज्योतिष के निश्चित सिद्धान्तों को नहीं, व्यवहारिक ज्ञान एवं प्रामाणिक अपने प्रयोग को माने। जाने पहचाने लोगों की कुण्डलियों में तीनो दशाओं को निकालकर अध्ययन करना चाहिए।

किसी भी कुण्डली में सूर्य जब गोचर में चलते हुए पुनः अपने घर में आ जाता है, तो वह भाव मजबूत हो जाता है। तब नई प्रेरणा अन्तर में जगती है। नया काम, नई प्रगति मिलती है। यदि किसी भी भाव, भाव का कारक और भावेश ग्रह शुभ स्थिति में हो तो उस भाव सो संबंधी फल पूर्ण मात्रा में प्राप्त होती है। यदि तीनों में से दो शुभ स्थिति में हो तो मध्यम फल मिलता है। यदि तीनों में सिर्फ एक की स्थिति अच्छी हो तो भाव संबंधी फल बहुत कम मात्रा में प्राप्त होगा। जैसे यदि तृतीय भाव, तृतीयेश और तृतीय का कारक मंगल ग्रह यदि अशुभ स्थिति में हो, क्रूर दृष्टि से हीन भी हो तो तृतीय भाव संबंधी फल निर्बल हो जायेगा। इसका दुष्प्रभाव भाई, मित्र, पराक्रम आदि पर पड़ेगा। इसी प्रकार अन्य भावों के संबंध में फल जानना चाहिए।

फल-कथन

लग्न एवं चन्द्र लग्न से दशम स्थान बहुत महत्व का होता है। यह सिर्फ कर्म स्थान नहीं, कुछ और भी है। इसमें राहु+केतु को ध्यान में नहीं रखा गया है। यहाँ बैठा ग्रह यह भी बताता है कि धन कैसे और कहाँ से आयेगा। यहाँ चन्द्र माता से धन दिलाता है, तो शुक्र पत्नी से धन प्राप्त करायेगा। गुरू यहाँ भाई से तो सूर्य पिता से एवं बुध किसी मित्र से, तो मंगल शत्रु से, व्यवसाय में धन का लाभ देता है। उसी प्रकार शनि सेवक से धन का श्रोत पाता है। विशेष परिस्थिति में मंगल हो तो भाई एवं शुक्र+चन्द्र स्त्री की तरफ से लाभ दिलाता है। गुरू कभी सन्तान एवं अपने ज्ञान के उपयोग से धन लाभ देता है। यदि पाप पीड़ित हो एवं नवमांश निर्बल हो अथवा शत्रु राशि में है तो यह फल नहीं मिलेगा।

हमारे जीवन में तीन भाग होते हैं :-

1) पिछला जनम 2) वर्तमान जन्म 3) दूसरा आने वाला जन्म !

प्रथम स्थान	हमारे मानसिक वृत्ति बताता है।
दूसरा स्थान	धन संचय की वृत्ति बताता है।
पांचवा स्थान	व्यवसाय की वृत्ति बताता है।
सप्तम स्थान	व्यवसाय की सरलता एवं कठनाई बताती है।

इन स्थानों में बैठे कारक अकारक ग्रह और शुभ-अशुभ ग्रह इसके फल को प्रभावित करता है।

जन्म कुण्डली में सबसे अधिक अंश के ग्रह को आत्मकारक ग्रह कहते हैं। उससे कम अंश को आजिविका कारक मानते हैं।

सूर्य ग्रह राज्य या राजा से तो चन्द्र धनिक से, गुरू वेदान्त , कमिशन, शुक्र धनिक, मौज-शोक, शनि विधि टेक्नीकल, मंगल साहस, <u>दवा</u> साहस आदि। शुक्र+शनि का अक्सर लेखन, कला, सगीत एवं प्रेम सम्बन्ध बताता है।

फलित नियम

1. केन्द्रेश शुभ ग्रह यदि गुरू, शुक्र, बुध हो और केन्द्र में ही हो तो उसकी आधी शुभता नष्ट हो जाती है। जैसे यदि मिथुन, धनु, कन्या, मीन लग्न हो और गुरू, बुध केन्द्र में ही हो। एक दूसरे की राशि में तो गुरू या बुध की दशा शुभ नहीं जाती, बल्कि कई बार परेशानी होती है। (चित्र नं. 1)

   यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। केन्द्रेश शुभ ग्रह यदि लग्न चतुर्थ, सप्तम, दशम में अपनी ही राशि में बैठे, तो कुछ शुभता बनी रहती है। जैसे धनु लग्न में यदि गुरू प्रथम भाव में बैठे, तो गुरू की दशा अच्छी जायेगी। (चित्र नं. 2)
2. उसी प्रकार केन्द्रेश यदि पाप ग्रह हो और केन्द्र में ही हो तो उस ग्रह और भावेश सम्बन्धी फल अच्छी मात्रा में प्रदान करता है। इसकी दशा भी शुभ एवं उन्नतिदायक होती है। (चित्र नं. 3)

चित्र नं. : 1-2-3

3. केन्द्र का स्वामी यदि त्रिकोण में हो तो उस भाव सम्बन्धी में फल अच्छा प्रदान करता है। जैसे दशमेश यदि नवम में हो या चतुर्थेश,

पंचम में या नवम-दशमं में परस्पर राशि परिवर्तन हो तो इसकी दशा शुभ जायेगी। (चित्र नं. 2) यहाँ मंगल शुभ पंचम में कारक है। अपनी दशा में शुभ फल देता है।

चित्र नं. : 4-5-6

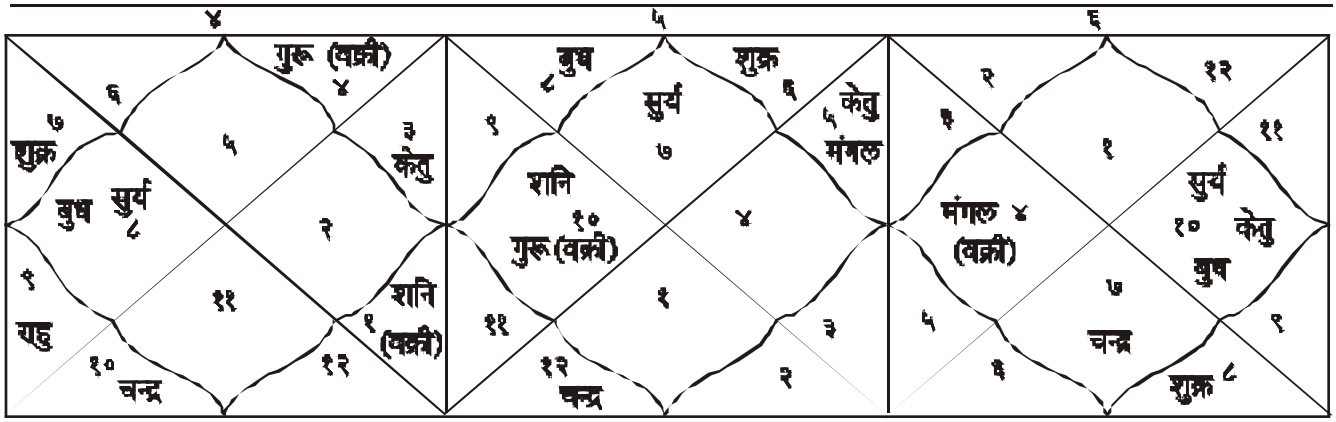

4. किसी भी वक्री ग्रह में अधिक बल होता है। ऐसा ग्रह उस भाव सम्बन्धी फल को प्रचुर मात्रा में देता है। यदि कोई ग्रह नीच होकर वक्री हो जाये तो वह अक्सर भाव सम्बन्धी उच्च का फल देता है। उसी प्रकार यदि कोई ग्रह उच्च का होकर वक्री हो जाये तो भाव सम्बन्धी नीच का फल देता है। ऊपर कुछ कुण्डलियां देखने से पता चलेगा। (चित्र नं. 4, 5, 6)
5. यदि एक ग्रह दो भावों का अलग-अलग स्थान का स्वामी हो तो पहले लग्न से जो राशि आये उसका फल प्रदान करता है और दूसरी राशि का बाद में फल देगा। जैसे तुला लग्न में धनु राशि (पराक्रम, भाई, मित्र, कान।) सम्बन्धी फल, गुरू की दशा में पहले देगा। फिर षष्ठ भाव, शत्रु रोग आदि का गुण दोष प्रदान करता है। इसके लिए उस ग्रह सम्बन्धी महादशा को दो बराबर भागों में बांटना चाहिए।

दशा के प्रथम भाग में :- पहले आने वाली राशि का शुभ-अशुभ फल देगा और दशा के दूसरे भाग में दूसरी राशि का फल देगा। जैसे कुम्भ लग्न में मंगल की दशा का प्रथम भाग साढ़े तीन वर्ष, तीसरे भाव का फल देगा और दूसरे भाग में साढ़े तीन वर्ष, दशम भाव सम्बन्धी फल देगा। किन्तु यहाँ एक बात और ध्यान देने योग्य है कि मंगल ग्रह खुद

किस भाव में बैठा है, तथा अपने भाव से कितनी दूर पर शुभ-अशुभ स्थिति में बैठा है, यह देख लेना भी आवश्यक है। इसी प्रकार सिंह लग्न में गुरू अपनी दशा का आधा हिस्सा पंचमेश सम्बंधी फल देगा और दूसरा हिस्सा अष्टम भाव का फल देगा। (चित्र 4)

6. यदि कोई ग्रह दो भावों का स्वामी हो तो वह अधिक फल उसी का प्रदान करेगा, जो कुण्डली में मूल त्रिकोण राशि हो। जैसे मिथुन लग्न में शनि भाग्य, नवम भाव का फल देगा। उसी प्रकार कर्क लग्न में शनि सप्तम की अपेक्षा अष्टम का फल देकर मारक बन सकता है। विशेषकर यदि शनि की दशा जा रही हो या गोचर का शनि भी अशुभ स्थिति में हो। (चित्र नं. 8)
7. यदि कोई ग्रह जिस राशि में है, उसी नवांश में भी हो तो उसका शुभ फल देता है।
8. लग्न में बुध या गुरू, चतुर्थ में चन्द्र, शुक्र, सप्तम में शनि तथा दशम में सूर्य, मंगल बलवान होते हैं।
9. कुण्डली में 3, 6, 8, 12 भाव पाप स्थान होते हैं। यदि इन त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह बुध, गुरू, शुक्र बैठे तो उस भाव सम्बंधित फल को शुभ बना देते हैं। इसकी दशा शुभ नहीं जाती। उसी प्रकार यदि त्रिक स्थानों में पाप ग्रह शनि, राहु, मंगल, केतु आदि ग्रह हो तो यह उस स्थान को पापी बना देते हैं, पर स्वयं शुभ बने रहते हैं। यह अपनी दशा में शुभ फल देते हैं।
10. चन्द्र और सूर्य को अष्टमेश दोष नहीं लगता। यदि अष्टमेश, लग्नेश भी हो तो उसका दोष समाप्त हो जाता है। जैसे मेष लग्न का मंगल और तुला लग्न में शुक्र की शुभता बनी रहती है। इसकी दशा अन्तर्दशा में शुभ फल देखने को मिलता है। माओ-त्से-तुंग की कुण्डली में सुर्य अष्टमेश है, तथा लाल बहादुर शास्त्री की कुण्डली में चन्द्रमा अष्टम भाव में अपनी दशा में बहुत उठा दिया। कुण्डली का 9 नम्बर माओ की है और कुण्डली 7 शास्त्री की हे।

चित्र नं. : 7-8-9

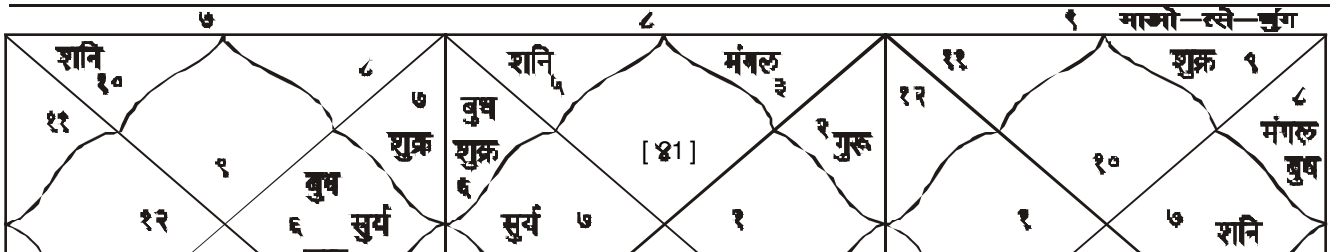

11. यदि अशुभ भाव का स्वामी अशुभ 3, 6, 8, 12 भाव में परस्पर एक दूसरे की राशि में विपरीत राज योग प्रदान करता है। जैसे यदि मीन लग्न में शुक्र तृतीय भाव में बैठे तो उसकी दशा शुभी जायेगी। प्रस्तुत 10 नम्बर की कुण्डली में मेष लग्न है। इनमें अधिकतर पापी ग्रह त्रिक स्थानों में बैठा है। कोई भी इस कुण्डली को अच्छा नहीं कहेगा। किन्तु यह एक धनी घराने के स्वस्थ और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले बुद्धिशाली युवक की कुण्डली है, जो तेज और तन्दुरुस्त है।
12. यदि कुण्डली में किसी भाव का स्वामी अपने स्थान से उतनी ही दूर पर दूसरे के घर में बैठे तो उस भाव में सम्बन्धी फल निष्फल हो जाता है। जैसे द्वितीय भाव का स्वामी तृतीय भाव में, द्वितीय से द्वितीय में बैठे या चतुर्थका स्वामी अपने से चतुर्थ अर्थात सप्तम में बैठे तो उसका शुभ फल नहीं मिलता। इस प्रकार पंचम भाव का स्वामी नवम भाव में, षष्ट का एकादश में, नवम का पंचम में बैठे तो अशुभ होता है। किन्तु यहाँ एक अपवाद है। यदि अशुभ का स्वामी यदि अशुभ में बैठे, जैसे तृतीय का स्वामी पंचम में, तृतीय से तृतीय, या अष्टम का तृतीय में, अष्टम से अष्टम, द्वादश का एकादश में शुभ फलदायी होता है। इस विपरीत राज योग अशुभ + अशुभ = शुभ कहते हैं।
13. जो ग्रह अपनी दोनों राशियों से बूरे स्थान में बैठे तो अशुभ फल दायी होता है। विशेषकर उस स्थिति में जब वह त्रिक स्थान का स्वामी न होकर, केन्द्र या त्रिकोण का स्वामी बन जाये।

चित्र नं. : 10-11-12

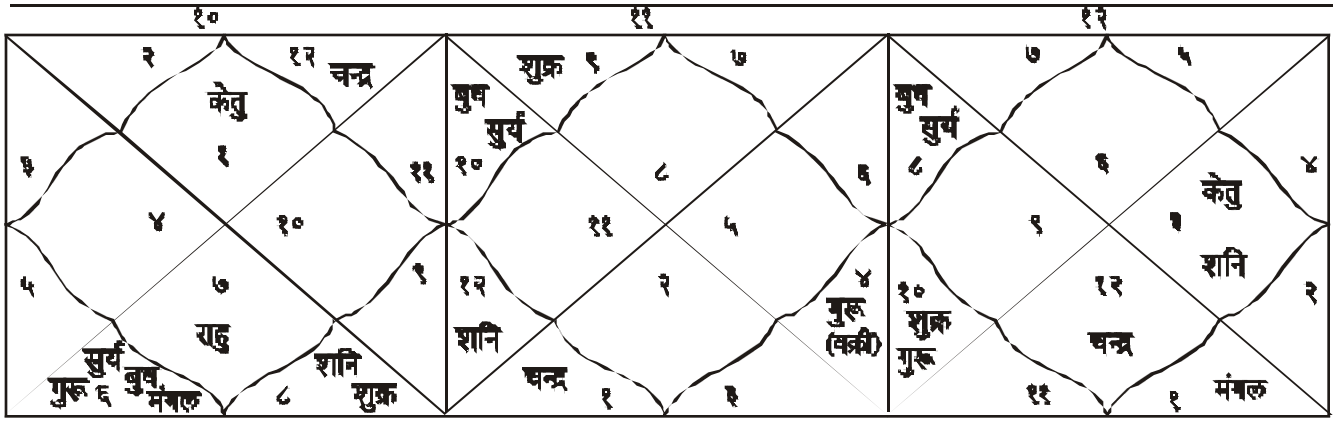

इसे हम यूं समझ सकते हैं... मान लीजिए कन्या लग्न हो (चित्र 12) और लग्नेश तृतीय भाव में बैठ जाये तो यह लग्नेश की अशुभ स्थिति शरीर के लिए कष्ट कारक होगी। बुध ग्रह कन्या लग्न, तनुभाव शरीर से तृतीय में बैठा है तथा उसकी दूसरी राशि मिथुन से, दशम भाव से षष्ट भाव अर्थात तृतीये अशुभ में होने से बुधा की दशा संघर्ष देती है। इसी प्रकार मेष लग्न में द्वादश का सूर्य या दशम एकादश में गुरू का बैठना अशुभ होता है। इसकी दशा मारक बनती है। मेष का सूर्य पंचमेश होकर अपने से अष्टम (मृत्यु) द्वादश अस्थान में बैठा है, उसी प्रकार दशम का गुरू आयु ख्याति (अष्टम) से तृतीय और तृतीय भाव से अष्टम स्थान में बैठना अकारक होता है। उसी प्रकार कन्या एवं कुंभ लग्न में दशम भाव स्थित मंगल और तुला लग्न में षष्ट भाव का शुक्र अपनी दशा में मारक होता है। विशेषकर उस स्थिति में जब किसी पापी ग्रह की दृष्टि पड़ जाये।

14) हर भाव के अपने-अपने नैसर्गिक कारक ग्रह होते हैं। जैसे लग्न का सूर्य, द्वतीय, पंचम, नवम तथा एकादश का गुरू, तृतीय का मंगल, चतुर्थ का चन्द्र-बुध, षष्ट का शनि-मंगल, सप्तम का शुक्र, अष्टम का शनि नवम का सूर्य, दशम का सूर्य-बुध, गुरू, शनि आदि ग्रह उस भाव के कारक होते हैं। यदि कुण्डली में किसी भाव का कारक ग्रह उसी घर में बैठे, जिसका वह कारक है, तो उसका आधा फल नष्ट हो जाता है। जैसे यदि पंचम भाव (विद्या, पुत्र स्थान) में चाहे

उच्च का ही गुरू क्यों न बैठे, तो भी जातक की शिक्षा बहुत ऊँच नहीं होगी। उसे कन्या सन्ताने अधिक होगी। जबकि गुरू पुत्र कारक है। उसी प्रकार तृतीय भाव में मंगल और सप्तम में शुक्र का बैठना क्रमशः छोटे भाई तथा वैवाहिक जीवन के लिए सुखमय नहीं है।

15) हर भावों की तरह ग्रहों का भी अपना कारक तत्व होता है। जैसे सूर्य से पिता, आत्मा, आँखा, शरीर, चन्द्र से मन, बुद्धि, माता, मंगल से साहस, रोग, छोटा भाई मित्र बुध से विवेक, बुद्धि, वाणी, गुरू से ज्ञान, सन्तान, शिक्षा, धन, पुत्र, शुक्र से पत्नी, वाहन प्रेम, शनि से आयु जीविका आदि।

किन्तु हर लग्न में लग्नेश ग्रहों का अपना गुण-दोष होता है। जैसे यदि मेष लग्न हो तो लग्नेश मंगल केवल साहस, मित्र या भाई की अपेक्षा, शरीर के पुट्ठें की जानकारी देगा। उसी प्रकार सिंह लग्न में सूर्य हड्डी का प्रतिनिधि होगा, क्योंकि हड्डी शरीर में आँख और दिल की अपेक्षा अधिक विस्तृत है। उसी प्रकार कर्क लग्न में चन्द्रमा, छाती की अपेक्षा रक्त का प्रतिनिधित्व करेगा। उसी प्रकार लग्नेश बुध चर्म तथा पेट का, शुक्र से वीर्य, गुरू से मेदा और शनि से शरीर की नसों तथा टांगों की स्थिति की जानकारी मिल सकती है।

16. जब कोई भाव, भावेश या भाव का कारक ग्रह विशेष पाप प्रभाव में हो तो उस वस्तु से सम्बंधित फल अच्छा नहीं देते। जैसे लग्न, लग्नेश और षष्ट भाव पीड़ित हो तो शरीर कष्ट होता है। उसी प्रकार पंचम भाव, पंचमेश तथा गुरू पीड़ित हो तो सन्तान सम्बंधी चिंता या शिक्षा में व्यवधान संभव है। इसी प्रकार यदि पुरूष की कुण्डली में शुक्र सप्तमेश तथा सप्तमभाव की अशुभ स्थिति हो तो वैवाहिक जीवन या पत्नी सम्बंधी चिंता संभव है। स्त्री की कुण्डली में गुरू, सूर्य तथा सप्तम भाव पीड़ित हो तो विवाह में बिलम्ब या कटू वैवाहिक जीवन हो सकता है।

17. वह भाव जिसका कारक लग्न से द्वादश में स्थित हो तो शुभ फल देता है। किन्तु यहाँ एक अपवाद है। सप्तमेश का द्ववादेश में बैठना वैवाहिक जीवन के लिए मतभेद का कारण बनाता है। किन्तु अन्य

किसी भी भाव का द्वादश में बैठना उस भाव सम्बंधी फल को अच्छी मात्रा में देता है, किन्तु इससे जातक को कोई विशेष लाभ नहीं होता है। जैसे कुंभ लग्न में द्वादश का शुक्र चतुर्थ तथा नवम भाव का स्वामी होने से बच्चे कुल के माता-पिता प्रदान करता, जो समाज में श्रेष्ठ और आढ के पात्र होते हैं। परदेश में भाग्योदय होता है। किन्तु इसमें जातक को माता-पिता और उनके धन का सुख नहीं के बराबर मिलता है।

18) कुण्डली में 3, 6, 8, 12 भाव के स्वामी किसी शुभ स्थान में बैठ जाये तो उस भाव सम्बंधी फल को अलग कर देते हैं। अतः इन भावों के स्वामी को त्रिक स्थान में बैठना ही योग कारक है।

19) जब दो विभिन्न भावों के स्वामी एक दूसरे के घर में बैठे तो शुभ फल प्रदान होता है। जैसे लग्नेश यदि भाग्य भाव में बैठे और भाग्येश लग्न में हो। उसी प्रकार द्वतीय तथा एकादश भाव में राशि परिवर्तन हो या चतुर्थ-पंचम में या नवम, दशम में परिवर्तन योग शुभ फल देता है।

20) षष्ट या द्वादश भाव में बैठा हुआ शुक्र व्यक्ति को जीवन में भौतिक सुख प्रचुर मात्रा में देता है। किन्तु यहाँ एक शर्त है। षष्ट का शुक्र स्वग्रही न हो तथा द्वादश भाव में शनि की राशि में शुक्र नहीं हो। जैसे कुम्भ या मीन लग्न में द्वादश का शुक्र योग कारक नहीं होता। उसी प्रकाचर वृषभ लग्न में षष्ट का शुक्र मारक सिद्ध हो सकता है। विशेषकर अपनी दशा में।

21) द्वादश भाव व्यय का भाव है। इसमें जो ग्रह बैठता है, व्यक्ति उससे सम्बंधित वस्तु का खर्च करता है। उसी प्रकार द्वादश का स्वामी जहाँ बैठता है, तो जातक को उस भाव सम्बंधी बातों से पृथक कर देता है।

द्वादश में सूर्य के बैठने से व्यक्ति अपनी आँखों का पढ़ने में अधिक खर्च करके चश्में का पावर बढ़ता है। भौतिक सुख व्यवहारिकता बड़ी यात्राओं में अधिक खर्च करता है। उसी प्रकार द्वादश में बैठा चन्द्र व्यक्ति में तर्क शक्ति चंचलता, कला और भावूकता तो देता है,

किन्तु आशंकित स्वाभाव सुअवसर गँवाने और बे-मतलब का भय या भ्रम मन में पाले रहता है। मंगल साहस और शक्ति का प्रतीक, द्वादश में बाहू बल (प्रिश्रम) से कन्धों का अधिक प्रयोग कराता है। वह साहसी-पराक्रमी शरीर में मसल्स की तकलीफ मोल लेता है। बुध वाणी तथा बुद्धि का प्रतीक बनकर द्वादश में हर वक्त दूसरों को सीख देने या भाषण देने की प्रवृति देता है। ज्ञान का परिचायक गुरू भावूकता के साथ दार्शनिक बातें एवं गुप्त दान दिलवाता है। द्वादश में शुक्र ग्रह जो स्वयं भौतिक सुखों का कारक है, बैठने से, जातक खर्चीला, सुन्दरता प्रिय और अपने वीर्य का अधिक व्यय करने वाला होता है। शनि शिव है। यदि वह बुध (बुद्धि के घर, शरण) में हो तो व्यक्ति शंकर भक्त होता है, या पाप करने से डरता है। शनि द्वादश में स्नायु के अधिक प्रयोग से व्यक्ति को थोड़ा रूखा और चिड़चिड़ा बना देता है, किन्तु व्यवसाय में सफलता भी देता है (जन्म स्थान से बाहर)।

22. यदि किसी व्यक्ति का जन्म शुक्ल पक्ष में हो तो नैसर्गिक शुक्र बलवान होते हैं। यह बात बीतने वाली तिथियों के अनुपापत में घटता है। कृष्ण पक्ष में बात उल्टी होती है। जैसे अमावस की तरफ तिथियाँ बढ़ती जाती हैं, वैसे-वैसे बल घटता जाता है।

23. हर लग्न के अपने कारक या अकारक ग्रह होते हैं। यह कोई आवश्यक नहीं कि शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में अच्छा फल ही दें। जैसे वृष या तुला लग्न में गुरू पापी होता है। यदि यह शुभ स्थान में बैठे तो भाव सम्बंधी हानि होती है। इसकी दशा अन्तर्दशा मारक भी बन सकती है। उसी प्रकार मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्न की कुण्डली में शुक्र अकारक होता है। कर्क लग्न में बुध जैसा शुभ ग्रह भी पापी होता है और मंगल जैसा क्रूर ग्रह शुभ फल दायी होता है, या तुला लग्न में शनि जैसा पापी ग्रह भी योग कारक होता है।

इस प्रकार हम देखें तो हर लग्न के अलग-अलग शुभ-अशुभ ग्रह होते हैं, जो किसी स्थान विशेष में बैठकर, अच्छा-बुरा फल देते हैं।

कई बार शुभ ग्रह अकारक होते हैं, तो कई बार अशुभ ग्रह योग कारक।

आवश्यकता इस बात की है कि हमारी तेज निगाहें कुण्डली के हर भाव में बैठे ग्रहों पर घुमनी चाहिए। हमें यह भी देख लेना चाहिए कि भावेश अपने स्थान से कितनी दूर पर बैठा है। अपनी दोनों मूल राशियों से तृतीय, षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में तो नहीं बैठ गया। यदि ऐसा हो तो शुभ फल की आशा नहीं करनी चाहिए।

कई बार शुभ लग्न में भी शुभ ग्रहों का अशुभ परिणाम देखने को मिलता है। कई बार पापी ग्रहों (शनि, मंगल, राहु, केतु) की दशा भी शुभ और उन्नतिदायक देखने को मिलती है। सैकड़ों कुण्डलियों को देखने के बाद, मैं कुछ निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ। किसी भी कुण्डली के विषय में फलादेश करते वक़्त चार बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

क) उस वक़्त गोचर में ग्रहों की क्या स्थिति है ? वह किस-किस राशि में बैठे हैं ?

ख) जातक की कुण्डली में कौन सी दशा और अन्तर्दशा चल रही है?

ग) कुण्डली में चल रही दशा सम्बंधी ग्रह, किस भाव के स्वामी हैं तथा किसके घर में बैठे हैं, उस पर किसकी दृष्टि है ?

घ) उस लग्न विशेष में कौन से कारक अकारक ग्रह हैं और कौन से शुभ एवं पापी ग्रह है।

अब हम कुछ उदाहरण द्वारा :- ऊपर लिखे सिद्धान्तों की, एक के बाद एक व्याख्या करेंगे। सबसे पहले हम गोचर ग्रहों की स्थिति वाला सिद्धान्त लागू करते हैं।

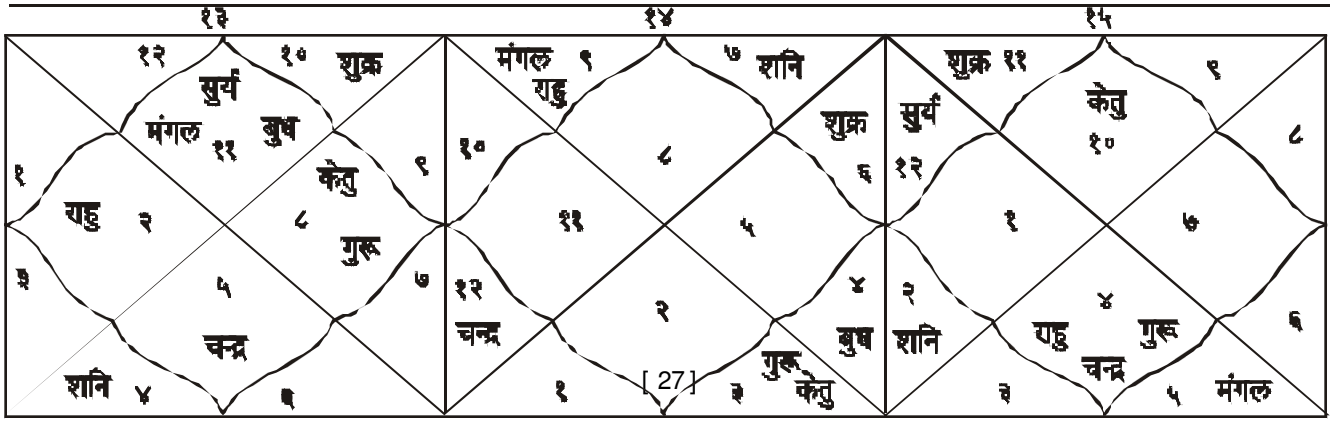

चित्र नं. : 13-14-15

उस भाव का स्वामी जिसका दशा जा रही हो, अपनी किसी दृष्टि से, उस विशेष ग्रह को देखें तो, दशा अच्छी जाती है। इसे हम यूं समझ सकते हैं। जैसे किसी मकर लग्न की कुण्डली (चित्र नं. 15) में पंचम भाव में वृषभ का शनि हो और शनि की महादशा जा रही हो तो इसे हम शुभ कहेंगे। क्योंकि लग्नेश त्रिकोण में शुभ फल देगा। दूसरा वह शनि अपनी मूल राशि (कुम्भ) तथा शुक्र ग्रह को दशम दृष्टि से देख रहा है, जिसके घर में वह बैठा है। ऐसे में शनि की दशा उन्नतिदायक होगी। (चित्र 15)

चित्र नं. : 16-17-18

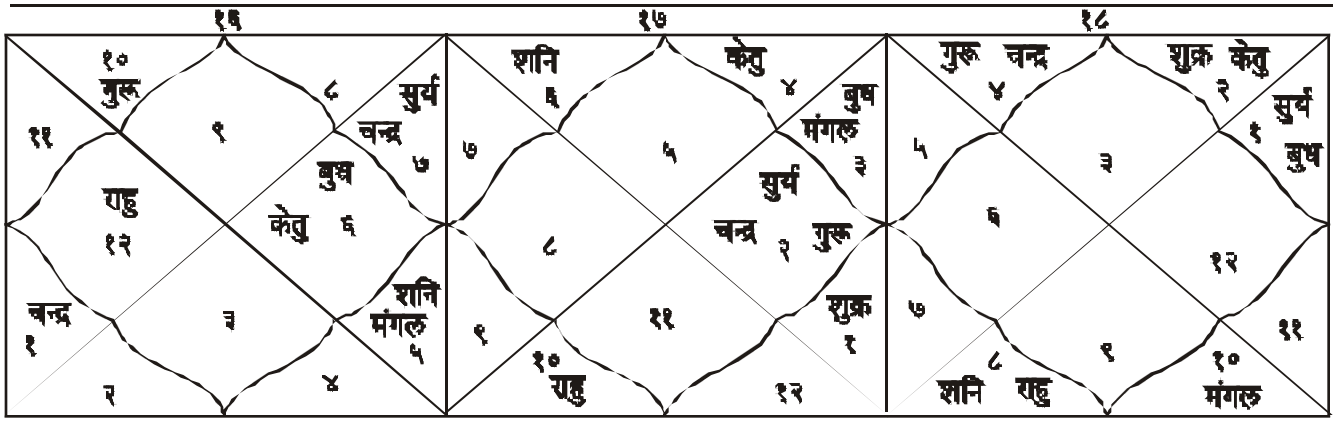

कुम्भ लग्न में राहु चतुर्थ भाव में हो तथा चतुर्थेश यदि द्वादश भाव में हो तो राहु की दशा सुख कारक तथा धन कारक होगी, क्योंकि राहु की नवम दृष्टि शुक्र (चतुर्थेश) को देख रहा, जिसका वह स्वामी है। (चित्र नं. 13)

धनु लग्न की एक कुण्डली में नवम स्थान में शनि बैठा है। भाग्येश सूर्य एकादश स्थान में बैठा है। इस युवक का शनि की महादशा प्रारम्भ होते ही विधान सभा में सफलता मिली तथा अच्छा मंत्री पद प्राप्त हुआ। उस समय गोचर में शनि सिंह राशि में बैठा था। कुण्डली में शनि अपनी

तृतीय दृष्टि से सूर्य (नवमेश) तथा कुम्भ राशि को देख रहा है। यह दशा तो श्रेष्ठ जायेगी ही। प्रगतिदायक कही जायेगी। (चित्र नं. 16)

इसके विपरीत, सिंह लग्न की एक कुण्डली में ग्रहों की बूरी स्थिति देखी जा सकती है। (चित्र नं. 17) इस करोड़पति व्यक्ति के दशम भाव में गुरू बैठा है। उस पर राहु की दृष्टि है। दशमेश शुक्र अपने से द्वादश स्थान अर्थात नवम भाव में स्थित है तथा गुरू की महादशा भी चल रही है। दोनों ही स्थितियाँ अशुभ कही जायेगी। पंचमेश (धनु राशि) का स्वामी अपने से षष्ठ तथा अष्टमेश (मीन राशि) का स्वामी अपने से षष्ठ तथा अष्टमेश (मीन राशि का स्वामी गुरू) अपने से तृतीय स्थान (दशम भाव) में बूरी स्थिति कही जायेगी। ऐसे में गुरू की दशा प्रारम्भ होते ही जातक का सारा व्यापार बिखर गया और लाखों का नुकसान हुआ।

ऊपर एक मिथुन लग्न की कुण्डली एम.एल.ए. की है, जिसकी पिछली जिन्दगी बदनामियों से भरी थी। (चित्र नं. 18) इस युवक का लग्नेश बुध आय भवन में उच्च के सूर्य के साथ बैठा है। गुरू, मंगल भी उच्च के हैं तथा चन्द्रमा और शुक्र स्वग्रही हैं। इस व्यक्ति का पंचमेश शुक्र (अपने से अष्टम) द्वादश भाव में होने से शिक्षा अपूर्ण रही। शनि, राहु की सप्तम दृष्टि इस बात की पुष्टी करता है, किन्तु बुध की महादशा में जब गुरू की अन्तर्दशा आई तो इस उदण्ड युवक ने एक प्रतिष्ठित पार्टी में चुनाव से खड़े होकर विजय प्राप्त की। बुध से गुरू की स्थिति चतुर्थ स्थान पर है। बुध ग्रह उच्च के सूर्य के साथ शुभ एकादश भाव में है और गुरू भी उच्च का होकर दूसरे भाव में विराजमान है, जो शुभ फल देता है। इस जातक की बुध, शनि की अन्तर्दशा में शुभ फल जाता रहा। केतु की महादशा में द्वादश का केतु ने आसमान से ज़मीन पर गिरा दिया।

बुध ग्रह :-

बुध ग्रह अकेला विशेष फल नहीं देता। किन्तु स्वग्रही एवं उच्च ग्रह के अलावा मित्र एवं मित्र राशि में अपनी दशा के अन्तर्गत शुभ फल प्रदान करता है। बुध को ठंडी, खट्टी चीजे़ पसन्द हैं यह उत्तर दिशा

का स्वामी है। इस ग्रह के जातक को भीड़ या शोरगुल पसन्द नहीं। पयर्टन आनन्द-प्रमोद, व्यवहारिक, दिल की अपेक्षा दिमाग से काम लेते हैं। अतः भावूकता में नहीं बहते। बड़े हिसाबी-किताबी, योजना बद्ध रूप से काम करने वाले कंजूस, धन बचाना आता है। झुठी शान में नहीं पड़ते। अपनी सीमा में पुरा आनन्द लेते हैं। बुध ग्रह कलाकर को सुझ देता है। यह वेदान्त, वाणिज्य एवं बुद्धि से सम्बन्धी कार्य में रूचि देता है।

बुध ग्रह : (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि में) कुमार अवस्था में होने से मनुष्य में ऊँची कक्षा की बुद्धि; दृढ़ निश्चय, हिसाबी कभी-कभी जिद्दी क्रोधी एवं वाचाल बनाता है।

बुध ग्रह : (मेष, सिंह, धनु राशि में) तरूण अवस्था का होता है यह जातक को अभिमानी, कम सहन शक्ति वाला और झगडालू बनाता है।

बुध ग्रह : (वृषक, कन्या, मकर राशि में) प्रौढ़ अवस्था में होने से जातक को शान्त, बुद्धिशाली, विश्वासी, व्यहवारिक, साफ दिल के एवं अच्छी सलाह देने वाला होता है। ऐसे लोग की ग्रह शक्ति एवं नया सीखाने की कला आती है।

बुध ग्रह : (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में) वृद्धावस्था में निन्दाखोर, बुद्धिमान होते हुए अनुचित कार्य करने वाला बन जाता है।

(मिथुन का बुद्ध) सतो गुणी होता है। यह संगीत, नृत्य में रूचि देता है।

(कन्या का बुध) रजो गुणी होता है। यह दूसरी कला में भी रस देता है।

स्त्रियों के प्रकार:

प्राचीन काल में शास्त्रों में चार प्रकार की स्त्रियों का शास्त्र में वर्णन किया गया है।

1. प्रथम पद्मिनी :- यह उत्तम प्रकार की स्त्री का खिला हुआ सुन्दर चेहरा है। देखने में सात्विक, शान्त, सौम्य और आकर्षक होती हैं। ऐसी स्त्री अपने पति एवं परिवार के प्रति वफादार होते हैं। इनका गोरा भरा शरीर सौंदर्य के साथ प्रत्येक अंग प्रमाण में होते हैं। हाथ, पांव मांसल लम्बें, भरावदार, गोरे। चमकदार चेहरा कुछ लम्बा सुन्दर। आँखें आकर्षक काले घने और लम्बे बाल। इनके जन्म के बाद माँ-बाप और शादी के बाद पति की उन्नति होती है।

2. हस्तनीः इनकी शारीरिक बनावट बहुत विशाल भारी और मजबूत। चेहरा गोल, मांसल और ऊपरी भाग भरावदार एवं उन्नत होता है। ऊपर से शान्ति और अन्दर से अशान्त, चंचल एवं भोग विलास प्रमोद में इन्हें रस होता है। परिश्रम कर सकती हैं। उसे कई प्रकार के रोग होते रहते हैं। पति अक्सर दूर देश में भी रहते हैं या उसका संग ज़्यादा नहीं रहता। यह निडर, स्पष्ट और मुंह फट भी होती हैं।

3. चित्रिशी :- ऐसी स्त्रियाँ, खुशमिजाज, प्रत्येक कार्य को कुशलता से करने वाली, पति एवं परिवार के प्रति समर्पित, सजग, दृढ़, शिक्षित एवं कला-संगीत में रूचि होती है। धर्म, दान, व्यवहारिक ज्ञान स्वज्जनों एवं मित्रों से सम्बन्ध रखती हैं। कुछ नया और अच्छा करना। घर के साथ-साथ; बाहर भी अपने ज्ञान एवं दक्षता से शोहरत पाती हैं। यह भाग्यशाली होती हैं। कार्य व्यवस्था में कुशल होती हैं।

4. शंखिनी :- इनकी मुख मुद्रा कभी प्रसन्न नहीं होता। ऊँची आवाज़ में बात करना, बेडोल शरीर, सबसे नाराज़, डाँट फटकार लगाने वाली और जब चले तो चप्पल की आवाज़ होती है। सुख को भोग नहीं पाती। चरित्र कमज़ोर होता है। अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकती हैं। कभी-कभी हाथ-पांव, चेहरा और शरीर बड़ा दुर्बल या बेडोल होता है। व्यवस्थित जीवन जी नहीं पाती। अतः संघर्ष, दुःख और परेशानी झेलती हैं।

आयुर्वेद एवं जातक

आयुर्वेद में तीन प्रकार रोगों में जातक के व्यवहार को बाँधा गया है।

1. कफ प्रकृति :- यह मिलनसार, क्षमाशील, सत्य चाहने वाले, स्नेही और सादगी का जीवन चाहने वाले। प्रभावशाली, मजबूत व्यक्तित्व होता है समाज और परिवार की प्रतिष्ठा के साथ इन्हें अपने कुल के रित-विाज का ध्यान रहता है। नियमित एवं संयम भरा जीवन होता है। समाज में इज्जत होती है। किसी एक विषय में वह पारंगत होते हैं।

2. पित प्रकृति :- सदैव खुले दिल के, आनन्दी, गोरा, बुद्धिशाली, उग्र जल्दी बातों को समझने और संक्षेप में समझा देने वाले ! चंचल मन के यह ज्ञानी, नाजुक, सुगन्ध एवं मिष्ठान के साथ पेट भर खाते हैं, ठंडा पसन्द करते हैं। सदैव नवीन विषय पर शोध एवं चिन्तन करने वाले। भावूक, क्रोधी एवं क्रियाशील रहते हैं। सादे एवं साफ सुथरे कपडे पसन्द करते हैं। आभूषण के शौक होते हैं। थोड़े रोमांटिक, एवं बातों में दक्ष होते हैं। तर्क संगत, सच्चाई पसन्द एवं महत्वाकांक्षी। चाहे कैसी भी परेशानी हो, लेकिन समुह में खुश गंवार बातों से मन मोह लेते हैं। इन्हें पसीना बहुत आता है।

3. वायु प्रकृति :- यदि वायु का विकार हो तो ऐसे अपने शरीर का ध्यान नहीं रखते। बड़ा अनियमित जीवन होता है। नींद पुरी नहीं होती। कभी भी कुछ भी खाना-पीना, सोना बड़ा अजीब होता है। स्वभाव भी कुछ विचित्र होता है। घर-परिवार और समाज में सिर्फ अपनी शिकायत करते हैं। पति और परिवार को खुश नहीं रख सकते। सदैव दूसरों से कुछ पाने की अपेक्षा रखते हैं। अल्प केश होते हैं। जल्दी चलना, अधिक बोलना खोटे विचार एवं पाँव के तलवे फटना निशानी है। यह नास्तिक, जीद्दी, चंचल होते हैं हास्य, गायन एवं गर्म भोजन के शौकिन होते हैं।

नम्बर और आप

1. सूर्य :- दृढ़ निश्चयी, क्रियाशील, आत्मविश्वासी, स्पष्टवाद, महत्वाकांक्षी, स्वतन्त्र मन के प्रगतिशील

(1,10,19) विचारवाले, प्रभावशाली, स्वालम्बी, एवं धैर्यशील।

(Creative-Strong, Determind, Leadership Qualities, Definite Viiew.)

2. चन्द्र :- कल्पनाशील, चंचलमन, अन्तरमुखी, भावूक, दयालु, सहज, विचार, मृदुल, शान्त, अनुशासन प्रिय, कला-संगीत में

(2,20,29) रूचि होती है।

(Imaginative, Gentle Modest, Restless, Cooperative.)

3. गुरू :- दृढ़, आत्मविश्वासी, परिश्रमी, आशावादी, लोकप्रिय, चिन्तक ज्ञानी, बुद्धिमान, महत्वकांक्षी,

(3,12,21) उत्साही, क्रियाशील।

(Ambitious, Independent, Versatile, Happy.)

4. हर्षल :- स्पष्ट वक्ता, विचारशील, उतारचढ़ाव, सघर्षशील, खुले दिल के, सिद्धान्तप्रिय, एकान्तप्रिय,

(4,13,31) चिन्तक एवं उग्रस्वभाव। रूढ़िवाद, कठोर मन के और जीद्दी !

(Rebellion, Cautious, Determind, Sensitive, Responsive.)

5. बुध :- उदार, ज्ञानी, सुझबुझवाले, शान्त, स्वतन्त्रप्रिय, न्यायप्रिय, तार्किक, कार्यशील, सुव्यवस्थित।

(5,14,23) **(Friendly, Clever, Quik in Thought and Decision.)**

6. शुक्र :- शौकिन, आलसी, आकर्षक, स्वच्छताप्रिय, आनन्दी, मनमौजी, कला-संगीत, खर्चिले, धुन के पक्के (6,15, 24) व्यवस्थित जीवन एवं मिलनसार।

(Generous, Determind, Fix Viws, Balanced.)

7. नेप्चून :- कल्पनाशील, भावूक, दयालु, बुद्धिशाली, चंचलमन के दृढ़, साहसी, कलासंगीत, प्रिय, (7,16, 25) स्पष्टवादी।

(Very Independent, Loves Change and Traevl, Restless.)

8. शनि :-साहसिक, एकान्तप्रिय, गम्भीर, सहनशली, सेवाभावी, ज्ञानी, महात्वाकांक्षी, कार्यशली, (8,17, 26) व्यवहार- कुशल।

(Religious, Sacrificing. Deep & Intense, Kind.)

9. मंगल :- साहसी, निडर, दृढ़ निश्चयी, उदार, मेहनती, उग्रस्वभाव, वचननिठ, व्यवहार कुशल। (9,18, 27) **(Impulsive, Broad-Minded, Short Temered, Generous.)**

जीवन के नियम

पूर्व दिशा में सर रखकर सोने से विद्या लाभ होता है। दक्षिण दिशा में धन का लाभ होता है। पश्चिम दिशा में चिन्ता देता है एवं उत्तर दिशा में स्वास्थ एवं दूसरी चीजों के लिए अमंगल होता है।

घर के आगे-पीछे काँटे वाला या विशाल वृक्ष नहीं होना चाहिए। घर में यदि मंदिर या भगवानक मूर्ति या फोटो हो तो उसकी पूजा होना चाहिए।

ज्योतिष को सर्व कला सीखनी चाहिए। ब्राह्मणहोना सौभाग्य की बात है, लेकिन जिसने ब्रह्म अर्थात परमज्ञान को पा लिया वह विद्धान ब्राह्मण तुल्य ही है। स्वस्थ विचार सिर्फ स्वस्थ मन एवं स्वस्थ शरीर में ही रह सकते हैं। इसके लिए विचार भी स्वस्थ होने चाहिए। सिंहनी का दुध सोने के पात्र में ही समा सकता है। यह पवित्र विज्ञान शुद्ध हृदय से सीखकर, सच्चाई से किसी को समझाना चाहिए। झुठी सलाह अथवा अपने लाभ के लिए पूजा-पाठ, तन्त्र-मन्त्र या अंगूठी के नाम भाग्य बदल डालने का निरर्थक प्रयास से विद्या नाशा होता है। ज्योतिष को सम्मान से देखा जाता है। और कष्ट में ही लोग निवारण के लिए श्रद्धा और विश्वास से आते हैं। उन्हें उचित मार्ग दर्शन देना हमारा नैतिक कर्तव्य है। ज्योतिष को क्षण भर के आर्थिक लाभ के बाद जीवन भर के लिए परिवार को किसी भी प्रकार से दुःख दर्द रोग अथवा दूसरी परेशानियां झेलनी पड़ती है। दान में मिले धन से पेट तो पाला जा सकता है, किन्तु यह धन तीसरी पीढ़ी तक नहीं टिकता। जैसे सरलता से आता है, वैसे ही सरलता से चला भी जाता है। अतः झुठ बोलकर किसी को खुश करने का प्रयास न करें। सच बोलना और सुनना मुश्किल ज़रूर है, लेकिन असंम्भव नहीं है।

यदि ज्योतिष को जातक के प्रश्न का उत्तर का पता न हो तो बेशक चुप रहे, किन्तु झुठ न बोलें। सामने वाले को इस शास्त्र के अनुसार ही सलाह दें। झुठी कसम कभी न खायें।

घर से बाहर निकलते समय बायें अथवां दायें जो छिद्र से सांस चल रही हो, वह पांव पहले उठाये। घर से बाहर कहीं दूर निकलने या परदेश जाने से पहले दुध का सेवन न करें। घर में झगड़ा कलह न हो। स्त्री से विवाद या सम्भोग न हो। घर से बाहर निकलकर न थूंके।

मार्ग में आने वाले अन्धे, रोगी, बुजुर्ग, वृद्ध और गाय के साथ आदर्णीय-पुज्य व्यक्ति को पहले रास्ता दें।

मित्रों को शुद्ध मन से बड़ों को सम्मान से, छोटों को प्यार से नौकरों का दान से एवं ब्राह्मण-ज्योतिष को दक्षिणा से वश में किया जा सकता है। मित्रता बहुत सोच समझकर करने की चीज़ नहीं, लेकिन दुश्मनी करने के पूर्व कई बार सोचना चाहिए।

प्राचीन शास्त्रों में 64 (चौंसठ) कलाओं का वर्णन है, किन्तु इनमें आठ कलाऐं अपने अभ्यास से सीखी जाती है। इनमें प्रथम है संगीत राग कला, दूसरा न्याय करने की सूझ, तीसरा नाड़ी परीक्षण, शत्रुओं को परखने एवं न्याय करने की समझ, चौथा पगड़ी पहनना, पाँचवा रत्न सोना एवं आदमी को पहचानने का हूनर, छठा गहरे पानी में तैरने का अभ्यास, सातवां प्रेम से किसी को वश में करने की अदा और आठवाँ चोरी करने की कला।

इन सबके लिए संयम, नियम और गहरी सुझ-बुझ के साथ इच्छा-शक्ति एवं एकाग्रता की भी ज़रूरत होती है। इन कामों में किताबी ज्ञान काम नहीं आता। इसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान भी आत्मज्ञान एवं आत्मबल से सीखा जाता है। इसमें सीखने की इच्छा नहीं, भूख चाहिए। यह सरल नहीं, जिस तरह समुन्दर में डूबकर गहराई से मोती को सीप से बाहर लाते हैं और धरती का सीना चीरकर पानी निकालते हैं, उसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

बुराई कहीं पाठशाला में सीखाई नहीं जाती, बल्कि इस कचरे को तो अपने विवेक रूपी झाड़ू से बाहर निकाला जाता है। ज्ञान के लिए ध्यान की ज़रूरत पड़ती है, तभी मान मिलता है। इसके लिए योग्य गुरू की आवश्यक है। हमारे अन्दर जन्म से कुदरती एक या दो खुबियां होती है, बाकी की हम देखकर, सुनकर, पढ़कर या अभ्यास से सीखते हैं, किन्तु अन्दर की खुशियों को यादि हम पुरी मेहनत, लगन एवं बुद्धि के साथ-साथ इमान्दारी से प्रयोग करें तो यह हथियार संसार रूपी रणभूमि में विजयी बनाता है। यदि नियत अच्छडी हो तो नियात भी अच्छी होगी। सफलता के लिए कोई (short cut) छोटा रास्ता नहीं। अक्सर छोटा रास्ता लम्बी अन्धेरी राह पर खड़ा कर देता है। सब्र से सुअवसर को पकड़ना एक हूनर है। सही वक़्त पर क्षण भर में सही निर्णय लेना बुद्धिमान व्यक्ति का काम है। काम छोटा या बड़ा नहीं होता, अच्छा या बूरा होता है।

कलाकार बनने का योग

कलाकर बनना सरल नहीं ! वह भी सरलता एवं सहजता से कला का उत्पन्न होना और फिर उसे दुनिया के समक्ष प्रदर्शित करना, यह दो अलग चीजे़ महत्व की है। सर्व प्रथम तो जन्म लग्न में शुक्र की अनुकूल स्थिति महत्व की है। यह जातक को विभिन्न कला, संगीत, ग्लेमर, नृत्य रचनात्मक अभि रूचि देता है। वह स्वभाव से शौकिन, वाह्यमुखी और सुन्दरता प्रदान करता है। इसे बाद में शुक्र द्वारा बल, दृष्टि से साथ रहकर मिलता है। दूसरे ग्रहों का साथ उसे और मजबूती देता है। इसमें मंगल का विशेष महत्व है।यह कल्पना शक्ति को अपने पराक्रम, उत्साह और जोश देता है। इसके बगैर शुक्र को बल नहीं मिलता। इसके बाद बुध ग्रह उस कला की गहराई को समझने की सूझ देता है। गुरू भीतर का ज्ञान देता है, जो कलाकार को समझदार, ज्ञानी और परिपक्व बनाता है। शुक्र + शनि का योग कथा - निर्देशन और दिव्यदृष्टि की पारख देता है। इन ग्रहों के साथ कलाकार को लम्बें समय तक अपने पद और प्रतिष्ठा कायम रहने का बल नेप्चून देता है। इसके साथ-साथ व्यक्ति की कुण्डली में कौन सी दशा चल रही है और वह ग्रह किस नक्षत्र में है, यह जानना भी आवश्यक है।

तन्त्र ज्योतिष

आदमी की औसत काम (कर्म) करने की आयु 60 वर्ष है। अतः कुण्डली की बारह भाव की औसत भी पांच वर्ष होते हैं। प्रथम भाव में आदमी का जन्म होता है। जन्म के पांच वर्ष बाद वह अपने परिवार का सदस्य बनता है, जो कुण्डली का दूसरा भाव है। वहाँ से जब सफर (10 वर्ष) शुरू हुआ तो तीसरे भाव में प्रवेश (15 वर्ष) करते वक़्त वह भाई-बंधू एवं मित्रों के साथ वह जीवन में अपना पराक्रम प्रारम्भ करता है। इस पराक्रम का अर्थ साहस, आत्म विश्वास को माने। इसके बाद वह माता (चतुर्थ भाव) के सम्बन्धों को समझते हुए 20 वर्ष घर की जिम्मेदारी महसूस करता है। चतुर्थ भाव से कैसी और कितनी शिक्षा होगी यह पता चलता है। (यह पंचम भाव से अधिक महत्वपूर्ण है) तब पंचम भाव में शिक्षा का सदुपयोग किस विषय में और कितना होगा, यह पता चलता है। साथ ही प्रेम की मात्रा और प्रेम रोमांस के पात्र का पता चलता है। यह भाव ही (25 वर्ष) हमें काम (सेक्स) की समझ और उसके अमल का दर्शन बता देता है। इस काम, क्रोध, मद, मोह के बाद हम षष्ट (छटे) में रोग, शत्रु के बाद सप्तम में साझेदारी का अहसास होता है। यह कितनी और कैसी होगी, यह दर्शाता है। अष्टम (40) हमारे जीवन के गुप्त विषय को उजागर एवं प्रकट करता है। जहाँ हम अपनी सार्थकता खींचकर निकालते हैं। नवम भाव (45) हमारे पूर्व जन्म के फल को दर्शाता है। पंचम भाव आने वाले जन्म का पूर्वाभाष है कि वह कैसा होगा। दशम भाव हमारे गत पिछले जन्मों (50) का लेखा-जोखा बताता है। यह सिर्फ पितामह (दादा) के कर्म को ही नहीं, बल्कि पूर्व जन्म के पाप-पुण्य की व्यथा भी होती है।

जानवरों से नसीहत

हमने धर्मशास्त्र एवं नितिशास्त्र से बहुत कुछ सीखा है। हमारे धर्म पुस्तक एवं गुरू भी हमें नसीहत देते रहते हैं। किन्तु इंसानों के अलावा; जानवर से भी हम प्रेरणा लेकर बहुत कुछ सीख सकते हैं।

1. सिंह :- सिंह जिस प्रकार अपनी पुरी शक्ति लगाकर शिकार करता है, उसी प्रकार हमें भी अपने प्रत्येक कार्य को पुरी शक्ति, सामर्थ एवं तन्मयता से करना चाहिए।

2. कौआः- यह नसीहत देता है कि किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। संकल्प लेकर दृढ़ता से काम करना, आपस में एकता रखना और अवसर आये तो अपना घर बनाना। एकान्त में सहवास करना और दिखावा नहीं करना। अपने रंग, रूप पर नहीं चछताना !

3. मुर्गा :- मुर्गा हमें यह सिखाता है, कि प्रातः जल्दी उठना अपने परिवार के साथ रहना, खाना और पत्नी को काबू में रखना।

4. कुत्ता :- कुत्ते से हम यह जानने को मिलता है, कि हमें अपने स्वामी पर भक्ति रखाना चाहिए। सुख से कहीं भी सो जाना। अपनी भूख जितना ही खाना एवं सन्तोष रखकर जीना।

5. गधा :- गधे से यह जानने को मिलता है, कि जीवन में कैसी भी भारी जिम्मेदारी का बोझ हमें मिले, उसे हर मौसम, हर घडी निभाना और कभी अपने भाग्य पर न कभी पछताना और न कभी अपनी परेशानी के लिए किसी और को भी दोष देना चाहिए।

यह तमाम जानवर चुप रहकर हमें बहुत कुछ सीख देते हैं। इनकी जीभ बड़ी होती है, लेकिन वह बोल नहीं पाते। हम अपनी छोटी जीभ द्वारा ज़रूरत से ज़्यादा बोलते हैं ? चुप रहना और थोड़े में बहुत कुछ समझा देना एक कला है।

समुन्द्र शास्त्र

समुन्द्र शास्त्र में व्यक्ति के शरीर, हाथ, पांव, कपाल एवं तील को दूर से देखाकर उसके आतित, वर्तमान एवं भविष्य के विषय में जाना जा सकता है। जिस प्रकार हाथों में रेखायें होती हैं, उसी प्रकार पांव के तलवे एवं माथे पर भी रेखाऐं होती हैं। स्त्री हो या पुरूष की कुण्डलियां हाथ की रेखाओं को देखने के पूर्व जातक (स्त्री, पुरूष) देह, गंध एवं शरीर की बनावट के साथ-साथ; उसके उठने-बैठने, चलने की आदत और व्यवहार से बहुत कुछ जाना जा सकता है। जातक को देखाकर उसे किताब की तरह पढ़ा जा सकता है। सिर्फ उसे ध्यान से अभ्यास और अनुभव करें, कि उसके कोई भी अंग में खोट न हो। टेढ़ा-मेढ़ा या असमान्य न हो। अन्दर से यह ठीक नहीं होते। स्त्री के पांव में एवं पुरूष के हाथ में भाग्य लिखा रहता है।

उन्नत एवं चमकदार कपाल वाले मानवी समृद्ध होते हैं। कपाल पर पांच स्पष्ट रेखाऐं लम्बी आयु देते हैं। चार या उससे कम रेखाऐं उम्र को लम्बी; किन्तु क्रमशः थोड़ी कम होती है। कपाल पर त्रिशुल का चिन्ह वह समाज में प्रतिष्ठित एवं प्रधान होता है। कपाल पर एक भी स्पष्ट रेखा अच्छी आयु एवं अर्ध चन्द्रकार सत्ता एवं वैभव देता है। झुका हुआ या नसों से मुक्त शुभ नहीं होता है। कपाल और बाल के बीच तीन अंगुली का फासला अच्छा होता है। स्त्रियों में उससे कम या बहुत अधिक फासला दुःख, परेशानी और सुख में कमी लाता है।

सामान्यतः पुरुषों का दांया एवं स्त्रियों का बांया हाथ देखना चाहिए। किन्तु जो पुरुष कमाते नहीं या शर्मिले, स्त्री जैसे नाजुक हो तो उसके बांया हाथ भी देखना चाहिए। उसी प्रकार जो स्त्री साहसी, मजबूत कद-काठी की और पुरुष जैसी व्यवहार करे, उसका दांया हाथ ज़रूर देखें।

हाथ का अंगूठा, आत्मशक्ति और दृढ़ता को दर्शाता है। अंगूलियां यदि हथेली के प्रमाण में बड़ी हों तो वह बुद्धिशाली बनाता है। हथेली यदि बड़ी हो तो वह व्यवहारिक दृष्टिकोण से सीखाता है।

वैसे हाथ में तील व्यापार में लाभ देता है। किन्तु आम आदमी को कभी-कभी बदनामी भी देता है। यात्रा होती है। दाहिने अंगूठे के मध्य में यदि यव बना हो, तो जन्म दिन, शुक्ल पक्ष में होता है। बांये में यव, कष्ण पक्ष एवं रात्री में जन्म होता है।

किन्तु एक ज़रूर बात समझने की यह है कि किसी एक चिन्ह से शुभ-अशुभ का निर्णय नहीं करना चाहिए ! दूसरी ज़रूरी वस्तु भी जाननी ज़रूरी है। यदि हम हाथों की अंगूलियों की बात करें तो यह भी हाथ की जीवन रेखा से हटकर जातक की आयुष्य के विषय में बताता है। यदि छोटी अंगूली के उपर का भाग अनामिका (दूसरी अंगूली के तीसरे पर्व से उपर पहुँच जाता है, वह लम्बी आयु भोगता है। यदि तीसरे पर्व के समान हो तो मध्य आयु और तीसरे पर्व से नीचे हो, तो उससे प्रमाण में थोड़ा कम होती है। किन्तु इसके साथ हाथ का अंगूठा भी सीधा औश्र कनेर हो तो आयु को दृढ़ता से जीता जा सकता है। अंगूठा बहुत लचिला न हो। ललाट उन्नत हो एवं उस पर रेखाऐं हों।

आवाज :- भारी एवं गम्भीर आवाज़ वाला व्यक्ति के शरीरिक संरचना एवं दूसरे पक्ष यदि शुभ हो तो वह धनी मानी और उच्च स्थान पर पहुँचने वाला होता है। उसमें आत्मविश्वास, स्वाभिमान, सम्मान और महत्वाकांक्षी,

यशमान एवं धन के साथ, उच्च वर्ग के लोगों के सम्पर्क में लाता है। वाहन, घर एवं हर प्रकार की सुविधा भोगता है। आवाज़ फस-फसी, पतली, धीमी हो तो वह शुभ-लाभ नहीं देता।

दांत :- उसी प्रकार दांत एक जैसे सुन्दर साफ-सुथरे, एक दूसरे से जुड़े और संख्या में बत्तीस हो, तो यह भाग्यवान बनाता है। स्त्रियों को छोटे-सुन्दर एक जैसे दांत हर प्रकार का सुख-सुविधा देता है। यह शान्ति मन, सरलता से काम करते हैं। सच्चाई पसन्द होते हैं। खाने-खिलाने के शौकिन होते हैं। बड़े दांत विद्वानों के होते हैं। उपर की अपेक्षा नीचे के जबड़े में अधिक दांत माँ के प्यार में कमी लाता है। छोटे-बड़े, आड़े-टेढ़े गँदे दाँत व्यक्ति को धन-सम्पत्ति एवं अच्छी पत्नी बेशक दे दे, किन्तु ऐसे लोग अपनी दुनियां में जीते हैं। थोड़े स्वार्थी, लापरवाह, साहसी और बेबाक होते हैं। दांतो को साफ रखने वाला नियमित और व्यवस्थित जीवन जीता है। दाँत यदि समय के पहले तकलिफ दे तो यह जीवन में खुशी का नाश होने लगता है। परिवार में अशान्ति और दुःख आते हैं।

होंठ :- यह सर्व प्रकार का सुख और सम्पन्नता देता है। छोटे होंठ हिसाबी और कंजूसी के साथ-साथ व्यवस्थित जीवन जीने की कला देता है। लम्बे होंठ खुले दिल के जीवन का आनन्द लेना चाहते हैं। नीचे के होठों के मध्य में हल्की खड़ी रेखा भौतिक सुख के साथ खर्चिला स्वभाव और शौकिनी देता है। थोड़े खुले होंठ शुभ है, किन्तु दांत दिखने नहीं चाहिए। ऐसे लोग खुले विचारों के और आधुनिक विचारों को स्वीकारते हैं। होंठ काले, फटे या टेढ़े-मेढ़े बाहर निकला हो तो यह दुःख, चिन्ता और परेशानी के कारण सुख भोग नहीं पाते। टेढ़ें होठ ठीक

नहीं होते। यह व्यक्ति को चपल या धूर्त बनाता है। जल्दी खाने, चलने और बोलने वालों में भले ही जोश और क्रोध हो, होश और धर्य नहीं होता!

नाक :- नाक के दोनों छिद्र सामने से दिखने नहीं चाहिए। वरना ऐसे स्त्री-पुरुष, साहसी, आक्रमक और मनमौजी होते हैं। नाक चेहरे के प्रमाण में थोड़ी नोकीली हो तो शुभ होती है। सब प्रकार का सुख मिलता है। बहुत बड़ी; चिपटी या टेढ़ीं नाक न हो। यह सुख और सन्तोष नहीं देता। नाक दरअसल हमारी इज्जत होती है। बात करते हुए इसे बार-बार छूने वाले इज्ज़त, शोहरत के भूखे होते हैं।

आँख :- आँख हमारे मन का आइना है, जो सुख-दुःख, प्यार नफरत और छूपे हुए सारे भेद चुप रहकर भी बता देता है। यह हंसती भी रोती भी है। आँखें हमारी मानसिक एवं शारीरिक बीमारी का राज बताती है। आप चाहकर भी मन की बात छूपा नहीं सकते। घमती हुई आँखें मन की चंचलता बताती है। साफ सुथरी, सुन्दर लम्बी आँखे यादि प्रभावशाली और खिली हुई हो तो यह बहुत आकर्षक, दिल के साफ, सुख-सम्पन्नता पाने वाले होते हैं। बहुत छोटी या नज़दिक आँखें डाह और दूसरों के सुख से जलने वाली होती है। अधिक पीली, लाल और बदरंगी आँखे मन का मैल बताता है। ऐसे कामी, क्रोधी और बेसब्र होते हैं। बिल्ली जैसी आँख पर विश्वास करना मुश्किल है। किन्तु ऐसे लोग अपनी धुन के पक्के, दृढ़ निष्चिय, शौकिन, जिद्दी, अभिमानी और स्वतन्त्र जीवन चाहते हैं। बन्धन और परिवारिक ज़िम्मेदारियों से कतराते हैं। पति को बस में रखना जानती हैं। भंवे बहुत घनी और आपस में न जुड़ी हो। रात को भी काले चश्मा पहनने वाले को परख पाना मुस्किल है। दोहरा व्यक्तित्व चपल एवं मतलबी होते हैं।

कान :- कान हमारी शरीरिक बनावट के अनुसार प्रमाण में हो तो शुभ है। बड़े कान ज्ञानी और विद्वान के होते हैं, जो अक्सर अनुशासित, प्रमाणिक, सच्चे एवं ईमान्दार होने के साथ सरल जीवन जीते हैं। छोटे कान ठीक नहीं। यह मन को कुटिल और स्वार्थी बनाता है। बड़े कान के नीचे की भाग बड़ा हो यह दिर्घायु के साथ समाज में प्रतिष्ठा देता है। टेढ़े कान, टेढ़ी नाक व्यक्ति को क्रोधी और टेढ़ा बनाता है। फटे कान दुःख देते हैं। सूप की तरह बाहर बड़े कान आलसी, चपल, होशियार और सजगता देता है। खिलाड़ियों पहलवान के कान अलग होते हैं।

अक्सर स्त्री एवं पुरूष की चाल में थोड़ा अन्तर होता है। बात सिर्फ तेजी या धीमें चलने की नहीं, बल्कि वह कैसे चलते हैं, इस पर भी निर्भर करती है। एक जैसे सोच विचार एवं सहज भाव से हाथी की तरह धीमें चले यदि वह निरोगी हो। वह धीर-गम्भीर स्वतन्त्र साहसी एवं सर्व प्रकार का भौतिक सुख पाते हैं। वैसे ही शेर की तरह आवाज़ किये बिना धीमें एवं ध्यान से पांव उठाकर चले वो महत्वाकांक्षी, चपल, हिम्मतवान, स्वाभिमानी एवं गम्भीर होगा। उन्हें अक्सर प्रभावशाली मनमौजी, दृढ़-निश्चयी एवं अधिकार प्राप्त करने की चाहत के साथ, महत्वकांक्षा ऊँची होती है। तेजी से चलने वाले सफलता प्रगती के भूखे एवं परिश्रमी होते हैं। साथ ही कठोर नियम, सजगता और सच्चाई पसन्द होती है। तेजी से सदैव चलने वाली स्त्री को बहुत मेहनत और भाग दौड़ के बाद भी शान्ति नहीं होती। चलते वक़्त जूते-चप्पल यदि जमीन में बार घर्षण से आवाज़ करे, वह बोझल, लापरवाह और दिशाहीन जीवन देता है। जमीन पर चलते वक़्त आवाज़ नहीं होनी चाहिए। चाल भी नियमित एक जैसी हो।

खड़े रहते वक़्त या बैठे हुए शरीर की स्थिति कैसी है ? नज़र इधर-उधर कैसे घूमती है ? हाथ कहाँ रखा है ? पांव कैसे

रखो हैं ? आप कितने स्थिर हैं ? किस चीज़ पर ध्यान जाता है ? क्या चीज़ उठाते हैं ? हाथों में थामी चीज़ संवारते हैं या तोड़ते हैं ? यह सब आपकी वर्तमान मानसिक परिस्थिति, प्रश्न एवं चिन्ता दर्शाता है। दाँतों से नाखून चबाना बेमतलब की चिन्ता परेशानी और तनाव दर्शाता है।

रुद्राक्ष के रहस्य (Rudraksh)

रुद्राक्ष हमारे शास्त्र में बहुत शुभ एवं मंगलकारी माना गया है।

1- एक मुखी रुद्राक्ष :- यह भगवान का प्रतिरूप है। यह शुभता के साथ सर्वश्रेष्ठ है। यह आध्यात्मिक आनन्द के साथ संसारिक सुख भी देता है। भक्ति एवं मुक्ति देने वाला एक मुखी पवित्र होने से पापों से रक्षा करता है।

2- दो मुखी :- यह शिव-शक्ति का रूप हमें गृहस्थ जीवन में शान्ति, प्रेम एवं परिवार का सुख देता है।

3- तीन मुखी :- यह अग्नि का तेज देता है, जिसकी ओज और शक्ति हमें प्रभावशाली व्यक्तित्व बनाता है।

4- चार मुखी :- ब्रह्मा का यह स्वरूप है। इसे धारण करने से स्वस्थता एवं आरोग्य के साथ धनी एवं पराक्रमी बनाता है। यह मानसिक कष्ट कम करता है।

5- पंच मुखी :- यह ब्रह्म रूप बहुत व्यापक प्रमाण में मिलता है। यह दुःख एवं पापों से मुक्ति देता है।

6- छः मुखी :- यह विद्या प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है।

7- सात मुखी :- यह लक्ष्मी का स्वरूप है। यह कम मिलता है। यह धन, वैभव, यश, सम्मान देता है।

8- आठ मुखी :- यह गणेश जी का प्रतिरूप है। यह शत्रुओं को परास्त करते हुए जीवन में विजय दिलाता है।

9- नौ मुखी :- यह धर्मराज का स्वरूप है। यह वीरता, साहस, साहस, धैर्य के साथ-साथ सहनशीलता और दृढ़ता देता है। उसे किसी का भय नहीं रहता।

10- दस मुखी :- भगवान विष्णु का यह रूप सभी ग्रहों को शान्त करते हुए उन्नती देता है। यह न सिर्फ भाग्योदय कराता है, बल्कि भूत-प्रेत, भय, सर्प आदि से रक्षा करता है।

11- ग्यारह मुखी :- यह रूद्र की शक्ति है, जो शंकर के आशिर्वाद से भाग्योदय एवं सुख देता है।

12- बारह मुखी :- यह सूर्य अर्थात (आदित्य) का स्वरूप है। यह पापों से रक्षा एवं प्रायश्चित कराता है। जीवन सुख-शांति से गुजरता है।

13- तेरह मुखी :- स्वामी कार्तिकेय का यह स्वरूप राज, सम्मान, प्रतिष्ठा एवं मनो-कामना की पूर्ति कराता है।

14- चौदह मुखी :- शिव नेत्र से प्रकट यह रूद्राक्ष हनुमान का रूप है। यह दुर्लभ, प्रभाव शाली और शुभ है। यह उद्योग, हानि, रोग एवं शत्रु से रक्षा करता है।

अनिष्ठ कारक ग्रह
और
उसका उपचार

शास्त्रकारों ने जन्म कुंडली में ग्रहों को मुख्यतः दो श्रेणियों में विभाजित किया है। एक को शुभ ग्रह कहा तथा दूसरे को पाप ग्रह। इसी प्रकार शुभ भाव और पाप भाव, शुभ स्थिति तथा पाप स्थिति। इन बातों का आधार मान कर ही फलाफल करने की प्रथा प्रचालित हुई। विद्वानों ने मंगल, राहु, केतु शनि तथा कुछ ने सूर्य को भी नैसर्गिक पापी माना। बुध, शुक्र तथा गुरू को सौम्य या शुभग्रह माना। चन्द्रमा के विषय में कोई विशेष धारणा व्यक्त नहीं की गई। क्षीण चन्द्र का फल अशुभ पाया गया है। क्षीण चन्द्र का तात्पर्य कुण्डली में सूर्य ग्रह से 72 डिग्री के अन्दर आगे या पीछे माना है। उसके आगे पीछे चन्द्रमा क्षीण नहीं होता।

ग्रहों के विषय में शुभ या अशुभ का माप दण्ड क्या है? मैं अब तक समझ नहीं पाया। पानी ग्रह हम किसे कहेगें? सूर्य ग्रह आत्मा का कारक है। आत्मा को हम क्रूर या पापी की संज्ञा कैसे देगे? चन्द्रमा मन का घोतक है। शनि ग्रह सूर्य के पुत्र हैं। बुध ग्रह चन्द्रमा की संतान है। इसे क्या पापी कहेंगे? मंगल भूमि पुत्र कहा गया है। राहु-केतु तो एक छाया ग्रह है। इसकी अपनी शक्ति कहां?

अपने अनुभव में हमने गुरू जैसे शुभ ग्रह को कई बार मारक होते हुए देखा है। बुध और शुक्र भी कई बार दुखःऔर मृत्यु के कारण बन जाते हैं। गुरू ज्ञान का कारक होते हुए भी अशुभ स्थिति में अपनी शुभता खो बैठता है। जैसे कोई बुद्धिशाली व्यक्ति यदि गलत रास्ते पर भटक जाये तो खतरनाक बन जाता है। अपनी तेज बुद्धि का वह दुरूपयोग करने लगता है। इसी प्रकार गुरू चूंकि बहुत ज्ञानी तथा बुद्धिशाली ग्रह है। अतः कुंडली में यदि वह अपने दोनों भावों से अशुभ स्थिति में यदि बैठ जाये तो अपना विवेक और पवित्रता खो बैठता है। ऐसी स्थिति में वह गलत कार्य हीं करता है। शनि राहु जैसे ग्रह तो

निम्नकोटि के ग्रह माने गये हैं। इन ग्रहों की यदि शांति कराई जाये तो उनकी अशुभता नष्ट हो जाती है। परन्तु गुरू जैस तीक्ष्ण बुद्धिवाले ग्रह को शान्त कराना कठिन है। यदि यह बहक गया तो दुष्परिणाम अवश्य होगा॥

बुध ग्रह की चर्चा करे। बुध एक द्विस्वभाव राशि वाला एक नपुंसक ग्रह है। इसकी अपनी कोई विशेष शक्ति या प्रतिभा नहीं। यह जिस राशि या भाव में कुंडली के अन्दर बैठता है, उसी के अनुरूप फल देता है। यदि शुभ राशि या शुभ भाव में, कारक ग्रह के साथ बैठे तो शुभ फल देगा और यदि अशुभ भाव में, अकारक राशि के साथ या वक्री अवस्था में कहीं बैठ जाये तो अशुभ फल ही देग॥ जैसे बुध यदि सूर्य और मंगल जैसे प्रचंड और अग्नि कारक ग्रह के साथ यदि बैठ जाये तो यह भी उसकी गर्मी ग्रहण करके स्वयं भी उसी के अनुसार फल देने लगता है। यदि बुध इसी अवस्था में वक्री हो जाये तो और भी क्रूर बन सकता है। तब वह सूर्य मंगल का दुष्प्रभाव स्वयं खींचकर पापी बन सकता है।

शुक्र एक आनन्द-प्रमोद में लीन रहनेवाला ग्रह है। इसे सिर्फ सुख की चाह है। संगीत कला तथा भौतिक सुविधा प्राप्त करने की इच्छा में स्वार्थी बन जाता है। इसे दीन दुनिया की क्या फिक्र होगी? इसे खूद अपना होश नहीं। शुक्र ग्रह की अशुभ स्थिति जातक को उल्टी दिशा में ही ले जाता है। कुण्डली में यदि यह ग्रह अकारक हो तो शुभ भाव को पीड़ित कर देगा। पाप अवस्था में यह जातक को भूलावे में रखकर मारक बन जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कुंडली में कोई भी ग्रह यदि अकारक हो तो पापी बन जाता है। गोचर में विचरण करने वाले किसी भी ग्रह को हम दावे के साथ शुभ नहीं कह सकते। इस बात को कुछ उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

प्राचीन काल से अब तक विद्वानों ने केन्द्रश (लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम) स्थान में गुरू की उपस्थिति को अत्यंत ही शुभ माना है।

केन्द्र स्थल में स्थिति गुरू सर्वबाधाओं की दूर करता है तथा दीर्घजीवी बनाता है। परन्तु अनुभव और प्रयोग से मेरी धारणा, सत्य प्रतिशत इस बात को नहीं मानती। केन्द्रेश गुरू शुभ अवश्य है, किन्तु हर लग्न में नहीं। कुंभ लग्न के प्रथम भाव में बैठा गुरू को मैं शुभ नहीं मानता। विशेषकर यदि वह राहु या मंगल जैसे ग्रह के साथ पीड़ित होकर बैठा हो। कुम्भ लग्न में गुरू द्वितीये भाव तथा एकादश भाव का स्वामी होता है। यदि वह लग्न में बैठे तो यह उसकी अशुभ स्थिति होगी, क्यों कि वह द्वितीये भाव से द्वादश स्थान तथा एकादश भाव से तृतिये स्थान में स्थित है।

कुंडली में त्रिक स्थान (तृतिये, षष्ठ, अष्ठम एवं द्वादश भाव) को अशुभ स्थान कहा गया है। यह बिल्कुल सही है। यह बात फलादेश करते वख्त सदैव याद रखनी चाहिए। कोई भी ग्रह अपनी भूल राशि से 3,6,8 या 12 भाव में बैठा हो तो वह अशुभ फल देगा। वह भाव या राशि कोई भी हो सकती है। कोई भी ग्रह अपने से 3,6,8,12 भाव में जिस राशि या भाव में बैठता है, उस से संबंधित हानि करता है। उपर के उदहारण में कुंभ लग्न में प्रथम भाव का गुरू अपनी अशुभ स्थिति में तन भाव (शरीर) की हानि या कष्ट देगा।

अब प्रश्न यह है कि किसी ग्रह की अशुभ स्थिति क्या सदा बूरा ही फल देती है? नहीं, हमेशा नहीं। कुंडली में ग्रह की बूरी स्थिति अपनी दशा में ही उस भाव से संबंधित फल में अशुभ फल देता है। जैसे मेष लग्न की कुंडली से यदि उदाहरण प्रस्तुत करें तो पायेगे कि एकादश भाव में बैठा गुरू पापी बन जाता है। मेष लग्न में अकारक गुरू नवम तथा द्वादश भाव अशुभ है। अतः गुरू आधा पापी बन जाता है। यदि वह एकादश स्थान में बैठे तो यह उस कुण्डली की सबसे खराब स्थिति कहलायेगी। यह अपने दोनों भावों नवम से तृतिये तथा द्वादश से द्वादश भाव में अशुभ तथा अकारक होने के कारण पापी बन जायेगा। चूंकि वह एकादश भाव में बैठा है, अतः आय एवं बड़े भाई को अनिष्ठ फल देगा। गुरू की दशा में निश्चय ही बड़े भाई या बहन की मृत्यु होती है।

इसी प्रकार मेष लग्न में दशम भाव का गुरू भी जातक की कुण्डली में मारक बन जाता है। इसका कारण यह है कि यह आयु स्थान (अष्ठम) से तृतिये तथा तृतिये भवन से अष्ठम स्थान में स्थित है। यहां गुरू निर्बल हो जाता है। अतः आयु को नाश करेगा।

मेष लग्न में पंचम भाव का बुध भी अकारक होता है। तृतिये भाव मिथुन राशि का स्वामी बुध पंचम भाव में अपने से तृतिये स्थान होगा और षष्ठ स्थान से द्वादश भाव की स्थिति होगी। अतः यह संतान तथा शिक्षा संबंधी अशुभ फल बुल की दशा में देगा। विशेषकर तबजब पंचम भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि हो तथा पंचमेश और बुध ग्रह भी गोचर में अशुभ स्थिति में आ जाये। इसी प्रकार मेष लग्न में यदि नवम भाव में शुक्र हो तो अपनी दशा में माता के लिए खराब फल देगा। शुक्र द्वितीयेश होकर अपने से अष्ठम तथा सप्तमेश होकर अपने तृतिये स्थिति में कैसे शुभ फल देगा? यह मातृ स्थान (चतुर्थ भाव) से चूंकि षष्ठ स्थान में बैठा है, अतः माता के लिए अशुभ ही करेगा।

बृषभ लग्न में चतुर्थ भाव का बुध भी अशुभ स्थिति का कहलायेगा। यह अपने दोनों (मिथुन और कन्या) राशियों से बूरे भाव में बैठा है। चतुर्थ स्थान चूंकि माता का भाव है अतः माता के लिए बूरा फल ही देगा। बृषभ लग्न में शुक्र की दशा में आर्थिक तथा शारीरिक कष्ट मिलता है। इस लग्न में शुक्र की त्रिकोण राशि षष्ठ स्थान होती है। अतः यह लग्न का फल न देकर षष्ठ (रोग भाव) का फल देगा। ऐसे में यदि लग्नेश शुक्र अष्ठम में बैठे तो यह अपने दोनों राशियों बृषभ (लग्नेश) से अषठम तथा क्रूर ग्रह की दृष्टि तैय करती है। इसी प्रकार बृषभ लग्न का मंगल द्वितीये भाव में तथा दशम भाव का गुरू अपनी दशा में अशुभ फल देगा।

मिथुन लग्न की एक कुंडली में मैंने एक आठ वर्ष की बच्ची को कैंसर से मरते देखा है। इसका लग्नेश बुध तृतिये स्थान में पाप ग्रहों से पीड़ित था। बुध लग्नेश अपने से तृतिये और चतुर्थेश अपने से द्वादश स्थिति में बैठा था मिथुन लग्न की अन्य कुंडली में सप्तम में शुक्र तथा

नवम में गुरू की दोनों स्थिति अशुभ कहीं जायेगी। इसकी दशा खराब ही जायेगी।

मिथुन लग्न की एक कुंडली में नवम भाव में वक्री गुरू मैंने 17 वर्ष की एक बच्चे की देखी, जिसकी पानी में डूबने से मृत्यु हुई। द्वितीये भाव में राहु मंगल, अष्ठम में शनि और केतु था। गुरू की महादशा में केतु की अन्तर्दशा में उसकी मृत्यु का कारण थी। सप्रमेश तथा दशमेश गुरू की स्थिति अपने से अशुभ भाव में थी।

कर्क लग्न की एक कुन्डली में गुरू सबसे अशुभ और मंगल सबसे शुभ होता है। यदि गुरू सप्तम में नीचे का हो तो पत्नी भाव को प्रभावित करेगा। तथा अष्ठम भाव में अशुभ स्थिति आयु को कम करेगा। इस लग्न में षष्ठ स्थान का शुक्र भी अपनी दशा में परेशानी देता है। लग्न में शनि पति सुख कम करेगा।

सिंह लग्न में सप्तम स्थान का गुरू पत्नी भाव को पीड़ित करेगा तो लग्न में बुध खूद जातक पर दुष्प्रभाव डालेगा। इसका कारण इन ग्रहों की अशुभ स्थिति आप खूद देख सकते हैं। फिर अपनी दशा में यह कैसे बूरा फल नहीं देगे? यदि अकारक या क्रूर दृष्टि किसी अन्य ग्रह की हो तो फिर भगवान हीं बचाये।

कन्या लग्न में यदि बुध द्वादश में पीड़ित हो और उसकी दशा चले तो वह ठीक नहीं कही जायेगी। उसी प्रकार षष्ठ में गुरू, या दशम में मंगल की स्थिति भी पापमय होगी।

सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर सभी ग्रह कुंडली में दो भावों के स्वामी होते हैं कोई भी ग्रह अपने एक भाव से तृतिय, षष्ठ, अष्ठम या द्वादश भाव में हो तो अशुभ फल देग। चाहे वह कोई भी ग्रह हो। यदि कोई ग्रह अपने दोनों भावों से अशुभ स्थिति में चला जाये तो अपनी दशा में ज्यादा बूरा फल देगी। सूर्य और चन्द्रमा भी अपने भाव से 3, 6, 8, या 12 में बैठे तो अपनी दशा में भाव संबंधी दुष्परिणाम देगा।

तुला लग्न में भाग्य स्थान का मंगल, तृतिये में शुक्र पंचम में गुरू और एकादशा का बुध अपनी महादशा में शुभता प्रदान करने के बदले

अनिष्ठ कर सकता है। पुराने सिद्धान्त के अनुसार त्रिकोण में कोई भी ग्रह शुभ फल देते हैं। परन्तु उपर के उदाहरण में यह बात सच नहीं लगत। यदि ये ग्रह किसी क्रूर ग्रह से पीड़ित हो या वक्री बन जाये तो कहाँ से अच्छा फल देखने को मिल सकता है?

बृश्चिक लग्न में चतुर्थ भाव में बैठा गुरू, दशम स्थान में बुध की स्थिति शुभ नहीं कहीं जायेगी। इसी प्रकार धनु लग्न में तृतिये भाव का गुरू, नवम भाव का बुध और सप्तम का मंगल यदि किसी अन्य ग्रह से पीड़ित है तो अपनी दशा में अशुभ फल देगा। मकर लग्न में द्वितीय भाव में गुरू, अष्ठम में बुध, द्वादश में शुक्र अपनी दशा में कभी शुभ फल नहीं देगा। मीन लग्न की एक कुंडली में नवम भाव को गुरू ने अपनी दशा में एक जोहरी की जान ले ली। उनकी कुंडली में चतुर्थ का मंगल भी पापी बन कर बैठ गया था। गुरू पर राहु और शनि की दृष्टि ने उसे और क्रूरता प्रदान कर दी।

शनि राहु और केतु स्वयं जल्दी मारक नहीं बनते। यह अपनी दृष्टि द्वारा किसी भी भाव या राशि को दुषित या पीड़ित अवश्य करते हैं। सूर्य मंगल की दृष्टि आग में घी डालते हैं। किसी भी ग्रह की अशुभ स्थिति में शनि राहु केतु या मंगल सूर्य की दृष्टि कभी-कभी दुष्परिणाम देती है। फलादेश करते वख्त वक्री ग्रहों की स्थिति, महादशा तथा गोचर ग्रहों का तात्कालिक भ्रमण ध्यान में रखाना चाहिए।

अनिष्ठ ग्रह निवारणः-

कुंडली में जब कोई ग्रह अशुभ स्थिति में आ जाये तो उससे संबंधित रत्न या उपरत्न नहीं धारण करना चाहिए। ग्रहों की अशुभ स्थिति का निर्णय लग्न, चन्द्र और सूर्य कुन्डली तीनों से करना चाहिए। ऐसी स्थिति में जब कोई भी ग्रह अपनी दोनों भावों से अशुभ स्थान (3, 6, 8, 12) भाव में बैठे हो या गोचर में भी वह ग्रह अपने से (3, 6, 8, 12) भावों में बैठ जाये तो उससे संबंधित रत्न धारण करने से अनिष्ठ फल प्राप्त होगा।

जैसे यदि किसी का शनि कुण्डली में उच्च का हो और शनि की महादशा चल रही हो। गोचर में शनि कन्या राशि में भ्रमण कर रहा हो तो उससे संबंधित रत्न पहनने से कुछ अकल्याणकारी फल ही मिलेगा। चूंकि शनि की उस समय अपने से द्वादश स्थिति होगी अतः रत्न पहनने पर द्वादश भाव संबंधी फल, जैसे खर्च, कर्ज परेशानी और झंझट होगी।

कोई भी रत्न पहन लेने से पहले कई बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। मेरे विचार से लग्न के कारक ग्रह की स्थिति यदि कुंडली में अच्छी हो तो प्रथम भाव के स्वामी के ग्रह से संबंधित रत्न पहनना चाहिए। द्वितीये प्रचम, नवम, दशम, या एकादश भाव के स्वामीका रत्न भी लाभकारी होग। कुंडली में दो शुभ स्थान के स्वामी से संबंधित रत्न लाभकारी होते हैं। जिस ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा चल रही हो वह यदि कुंडली में अशुभ स्थिति में न हो तो उससे संबंधित रत्न अवश्य पहनना चाहिए। परन्तु भावेश की स्थिति यदि अशुभ हो तो उससे संबंधित रत्न पहनने के बदले, उस ग्रह की शान्ति करानी चाहिए। इसके लिए दान, धर्म, पूजा-पाठ नितान्त आवश्यक है। एक बात और भी ध्यान रखनी चाहिए। कोई भी शुभ रत्न सारी जिन्दगी नहीं पहनना चाहिए। इसके लिए कुछ समय के अन्तरात में विद्वान ज्योतिष का अभिप्राय जानना आवश्यक है। कोई भी रत्न पुराना या किसी का उतारा हुआ नहीं धारण करना चाहिए।

****

MEDICAL ASTROLOGY
SOME COMBINATIONS

As we Know that 3rd, 6th, 8th and 12 hours is called bad and the ruler of 3,6,8 & 12th hours is also considered as malefic planets where ever it will placed in, it will give adversed effect.

1. The 8th house is important as far as surgical diseased are concerned. A malefic planet here usually gives rise to hernia, hydrocele, epedncitis or eye applications.
2. Mars with Wenus is 8th house indicate uterus diseases.
3. Mars + Venus in First of 7th house Creats some times syphilis.
4. The 12 house is the house of happiness in the bedroom Here, if the planets are weak and debilitated, handicape or hindrances are experenced.
5. Application of Jupier or Venus in responsible for dibetes. Mostly if in Ist, or 8th house is applicted by malefic planets.
6. In the birth chart malefics in the 4th house cause disorders of chest, Loungs any malefic planets, Like Mars, Rahu, or saturn is affected that house or ruler of forth house.
7. If the Lord of first house is placed in 3rd, 6th, 8th or 12th houses then it is not good for health.
8. If Mars if present in 5th house (Cancer Sign) gives a possibility of Asthma, and in combinatin with saturn cardiac disorders, or kidney disorders.

******

पंचम भवन

आज के आधुनिक युग में लोगों ने अपनी मेहनत, बुद्धि, लगन एंव भाग्य से धन का उपार्जन तो कर लिया है। किन्तु तमाम भौतिक सुखों को भोगने के उपरान्त भी कई लोग दुनिया में सन्तान सुख से बंचित है। मेरे पास अनेकों ऐसी कुन्डलियाँ है, जिनमें पुत्र सुख की कामना तो व्यक्त की गई है किन्तु कई वर्षो के बाद भी उन्हें सन्तान का सुख नहं मिला है। इसके लिए न जाने कितनी पूजा-भक्ति-दान, डाक्टरों का इलाज किया गया, मिन्नतें मानी गई है। किन्तु सब व्यर्थ

कुंडली में पंचम स्थान को सन्तान भवन स्थान या विद्या स्थान भी कहते हैं। सन्तान के लिए सामान्यतः पंचम भवन प्रमुख है। किन्तु उसके साथ एकादश तथा द्वितीये भवन का भी विशेष स्थान है। द्वितीये भवन परिवार का भवन है। नये बालक का जन्म परिवार में बृद्धि करता है। अतः उस स्थान का महत्व है। एकादश भवन चूँकि पंचम भवन को। सप्तम दृष्टि से देखता है तथा वह सप्तम पति या पत्नी। भवन से पंचम स्थान। सन्तान भाव होता है। अतः उसका स्थान भी महत्वपूर्ण है। अर्थात पुत्र सुख के लिए द्वितीये, पंचम तथा एकादश स्थान को ध्यान में रखना चाहिए।

स्त्रियों के लिए पंचम भवन तथा पुरूषों के लिए एकादश स्थान विशेष महत्व का है। पंचम भवन में बैठे ग्रह तथा उसकी राशि भी पुत्र के लिए जिम्मेदार हैं। यह देखना भी आवश्यक है कि पंचमेश तथा पंचम भाव में बैठे ग्रह किस राशि में है तथा किस नक्षत्र में है। उसका नक्षत्राधिपति कौन है। पंचम भाव या पंचमेश पर किस शुभ या अशुभ ग्रह की दृष्टि है।

पंचम भाव में अधिक पाप ग्रह पुत्र सुख में कमी लाते हैं। जैसे मंगल, सूर्य या केतु जैसे ग्रह उस भाव में सन्तान का क्षय अर्थात पुत्र का नाश या गर्भनाश (एबोर्शन) होता है। यदि केन्द्र में चन्द्रमा हो तो एक सन्तान का क्षय अर्थात एबोर्शन होता है। सन्तान नाश होने के और कई कारण है। यदि पंचम भवन, पंचमेश या गुरू पर किसी पाप या वक्री ग्रह

की दृष्टि हो तो पुत्र सुख में बाधा अर्थात पेट में पल रही संतान नष्ट हो जाती है। जैसे यदि द्वितीये भवन में मंगल बैठा और तृतिये में शनि या लग्न पंचम या नवम भाव में राहु या केतु ग्रह बैठे या वह अपन दृष्टि डाले तो संतान को नष्ट करती है। विशेषकर जब एबोर्शन अर्थात गर्भनाश अवश्य होगा। विशेष कर जब चतुर्थ या दशम में चन्द्रमा हो तब।

पंचम भवन में यदि स्त्री राशि हो (शनि, शुक्र या बुध) जैसे ग्रह हो या एकादश भाव में यही बैठे हो तो पुत्री सुख मिलता है। यदि पंचम या नवम में पुरुष राशि गुरु, मंगल आदि ग्रह हो या कोई भी एक ग्रह वक्री अवस्था में हो तो अवश्य पुत्र होगा। पंचम में उच्च का गुरु हो तो लड़की होती है। किन्तु यदि ह ग्रह वक्री हो तो पुत्र होग॥ पंचम में उच्च का गुरु यदि विद्या देगा तो सन्तान सुख में कमी ला देगा। यदि उँची शिक्षा देगा तो पुत्र सुख में कमी लायेगा क्योंकि ह उस भाव का कारक है।

इस प्रकार कोई भी शुभ ग्रह यदि पंचम भाव में उच्च का हो तो पुत्री देगा किन्तु वह वक्री या नीच का हो तो पुत्र सुख देगा। लग्न में गुरु भी पुत्र सुख देता है। पंचमेश या पंचम भाव में मंगल ग्रह बैठे तो एक या कभी दो पुत्र देगा। इससे अधिक कदापि नहीं। यदि अधिक होगा तो बचेगा नहीं।

निःसन्तान योग

सन्तान योग के लिए द्वितीये, पंचम और एकादश भाव को ध्यान में रखना आवश्यक है। इसके अलावा पंचमेश तथा सन्तान कारक गुरु की स्थिति भी जान लेनी चाहिए कि वह अशुभ स्थिति या अशुभ दृष्टि से पीड़ित तो नहीं।

विवाहिक जीवन में स्त्री के लिए गुरु एवं पुरुष के लिए शुक्र जिम्मेदार है। पुरुष की कुंडली में चन्द्रमा की स्थिति से पत्नी का सुख तथा स्त्री की कुन्डली में सूर्य की स्थिति से पति की स्थिति एं उससे सुख का पता चलता है। शुक्र पुरुष को प्रजन्न शक्ति प्रदान करता है। पुरुष को वह हारमोंस या वीर्य प्रदान करता है। सूर्य पौरुष देता है। स्त्री

का डिम्ब उत्पादक मंगल है। तथा मंगल ही पति या पत्नी को शारीरिक शक्ति प्रदान करता है। चन्द्रमा उन्हें मानसिक रूप में समागम के लिए तैयार करता है। अंतः में गुरू ही पुरूष के शुक्राणुओं को सन्तान का अंतिम रूप प्रदान करता है। अतः पुत्र या पुत्री योग के लिए चन्द्रमा, मंगल, शुक्र तथा गुरू का विशेष महत्व है।

यदि वजह है कि मंगल के दोष के कारण औरतों को मासिक दोष, पेट की तकलीफ कमर दर्द सर दर्द आदि होता है। पंचम भाव में सूर्य, मंगल, बुध, राहु जैसे पाप ग्रह गर्भनाश तथा गर्भाशय में घाव (इन्फेशन) करता है। कन्या सन्तान ही होती हे। पाप ग्रह के साथ बुध भी पापी होता है।

प्रथम भाव, चतुर्थ भाव तथा दशम भाव में बैठे हुए ग्रह यदि पंचम या एकादश भाव के निर्देषक हो तो सन्तान सुख में कमी लाते हैं। इसका कारण यह है कि प्रथम भाव द्वितीये से द्वादश होता है तथा पंचम भाव से चतुर्थ एवं एकादश से दशम भाव द्वादश स्थान होता है। अतः द्वादश भाव में बैठे (लग्न, चतुर्थ तथा एकादश) ग्रह सन्तान सुख में कमी लाते हैं। जैसे बृश्चिक लग्न में यदि गुरू वक्री होकर चतुर्थ भाव में बैठे और लग्न तथा दशम कस्प में कोई ग्रह बैठे तो पुत्र सुख में नहीं देगा।

फलादेश करते वख्त यह भी ध्यान रखना चाहिए कि शनि और बुध नपुंशक राशि है। सूर्य और मंगल राशि भी बंध्य राशि है। यह सन्तान योग में बाधक बनता है। जैसे लग्न का संबंध शनि बुध से हो तो पुत्र सुख में कमी लाता है। पंचम भवन, पंचमेश तथा गुरू आदि किस नक्ष में है, यह जानना भी आवश्यक है। नक्षत्र स्वामी यदि स्त्री ग्रह होगा तो पुत्री सुख देगा और यदि पुरूष ग्रह होगा तो पुत्र सुख देगा। नपुंसक ग्रह सन्तान सुख में कमी लायेगा। इसी प्रकार दशा महादशा का भी बहुत प्रभाव होता है।

पंचम भवन से बुद्धि का पता चलता है। किन्तु इसके लिए द्वितीये भवन तथा चतुर्थ भाव का भी महत्व है। द्वितीये भाव वाणी तथा विद्या का

भाव है। अतः विद्या और बुद्धि से ही उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। चतुर्थ भाव में पाप ग्रह उच्च शिक्षा में व्यवधान डालता है। चतुथ भावनाओं का भाव है। बुध बुद्धि का अतः कुंडली में इसका भी महत्व है।

किसी भी विषय में सफलता या असफलता मिलने का श्रेय बहुत कुछ जातक की कुंडली में चल रही दशा अन्तर्दशा पर निर्भर करती है। इसके अलावा दशम (कर्म भाव) तथा लग्न की शुभ अशुभ स्थिति भी व्यक्ति को यश, धन तथा मान प्रदान करने या न करने का जिम्मेदार है।

पंचम भाव से लौट्री या सट्टे में लाभ हानि का पता चलता है। यह बड़े भाई की पत्नी या बड़ी बहन के पति के विषय का परिचायक भी है। इनके द्वारा बहुत कुछ जाना जा सकता है। पंचमेश यदि उच्च को हो या वह लग्न में बैठे या किसी भी अन्य भावेश के साथ ग्रह परिवर्तन हो तो वह बहुत शुभ स्थिति होती है।

संक्षेप में यदि एक नियम याद रखा जाये तो बहुत उपयोगी होगा। यदि भाव, भाव का स्वामी तथा भाव का कारक तीनों ही शुभ और बलवान हो तो उस भाव का शुभ फल मिलता है। यदि तीनों में से दो बलवान हो तो आध फल तथा एक बलवान हो तो बहुत थोड़ा फल प्राप्त होता है। यह नियम किसी भी भाव पर लागू होता है।

आप यदि अपने पुत्र को डाक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते हैं तो यह कोई आवश्यक नहीं कि आपकी इच्छा पूरी हो जाये। भले ही आप उदेश्य की प्राप्ति के लिए कितनी भी अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करें। कड़ाई बरते, ध्यान रखे। यदि उसके भाग्य कुंडली। में व्यवसायी बनना लिखा है तो आप उसे बदल नहीं सकेते।

जातक की कुन्डली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार जीवन में उतार चढ़ाव या बदलाव आता है। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ कि पंचम भवन मुख्य शिक्षा का भवन है। किन्तु शिक्षा और व्यवसाय में अन्तर है। जब किसी भी व्यक्ति की जिन्दगी में उसकी पढ़ाई का असर नोकरी या रोजगार में अवश्य महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। व्यक्ति

जिस विषय संबंधी शिक्षा को ग्रहण करता है, उसे ही व्यवहारिक जीवन में उपयोगी बनाता है। किन्तु समाज में ऐसे अनेकों उदाहरण मिल जायेंगे। जो विज्ञान या कला के क्षेत्र में डिग्रियाँ तो लेते हैं किन्तु आगे जाकर कपड़ें या जवहरात का धन्धा करते हैं। कॉमर्स पढ़कर कोई दुकान खोल लेते हैं। आखिर कारण क्या है।

क्यों नहीं व्यक्ति वह शिक्षा ग्रहण करे जो भविष्य में उसके आजीविका का साधन बने। यही वह जगह है, जहाँ हम ज्योतिष विषय का सहारा लेकर, कोई निर्णय ले सकते हैं। कुंडली देखकर एक अच्छा ज्योतिषी यह बता सकता है कि यह आदमी किस विषय में पढ़ेगा।

गोचर में जितने ग्रह हैं, वही व्यक्ति के जीवन में हर पक्ष को प्रभावित करता है। शिक्षा के लिए भी हर एक ग्रह, अपने अपने ढंग असर करता है। पंचम भवन में अलग अलग ग्रहों का प्रभाव हम देख सकते हैं।

पंचम भवन में सूर्य उच्च का हो तो आर्ट्स विषय। (अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति शास्त्र) में उपलब्धी मिलती है। किन्तु सूर्य यदि दूसरे ग्रहों के साथ हो तो पढ़ाई में अन्तर आयेगा। सूर्य शुक्र या सूर्य चन्द्र अच्छा नहीं है। सूर्य शनि शिक्षा में व्यवधान और फेरबदल करेगा। सूर्य राहू या केतु भी ठीक नहीं। सूर्य मंगल विज्ञान विषय में रूचि देता है। पंचम में गुरू भी बहुत अच्छा नहीं है, क्योंकि ह उस भाव का कारक है। चन्द्र बुध अच्छी शिक्षा देता है। विशेष कर गणित में।

पंचम भवन में चन्द्रमा यदि पाप प्रभाव में न हो तो यह अच्छा गुण है। चन्द्र जिस ग्रह या राशि में बैठता है, उसे पर प्रभाव डालता है।

पंचम भवन में राहु हर तरह का डिविजन देता है। शिक्षा में रूकावट और बदलाव आता है। राहु गूढ़ रहस्य विज्ञान मंगल ग्रह विज्ञान में रूचि देगा। मंगल की शनि पर दृष्टि इंजीनियर बनाता है। शुक्र, गुरू और मंगल का दृष्टि संबंध डाक्टरी विषय में रूचि देता है।

बुध ग्रह बुद्धिमता का है। यह गणित, इतिहास, कानूनी शिक्षा देता है। बुध शुक्र का संबंध अर्थशास्त्र या कॉमर्स विषय प्रदान करता है। बुध

और गुरू भी पंचम भवन में शुभ है। बुध एक चंचल और नपुंसक ग्रह है। यह शनि, राहु केतु के साथ अच्छा फल नहीं देता।

गुरू पंचम भवन का कारक होने के कारण, बहुत अच्छा फल नहीं देता। किन्तु यह धर्मशास्त्र, कला इतिहास, अर्थशास्त्र गणित आदि विषय देता है। गुरू केतु हेम्योपेथ या आर्युवेद में रूचित देगा। किन्तु शिक्षा में व्यवधान होगा। केतु ग्रह जब किसी शुभ ग्रह के साथ होता है तो उस ग्रह तथा भाव में दस गुना बुद्धि अनुकुल या प्रतिकूल परस्थितिवश करता है।

शनि मुख्यतः विज्ञान विषय ही देता है। इसके अलावा इतिहास, खनिज, मशीनरी, आदि में रूचि देगा। उस पर मंगल की दृष्टि कल कारखाना, इंजीनियरिंग, ठेकेदारी या किसी काली वस्तु का व्यापार देगा। शनि यदि वक्री हो या अशुभ स्थिति में हो तो ठीक नहीं। सूर्य शनि ी ठीक नहीं, क्योंकि यह आपस में शत्रु हैं।

पंचम भवन संबंधी फलादेश करते वख्त कई बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। उपर जिन ग्रहों से संबंधित विषयों की चर्चा की गई है वह यदि किसी अन्य ग्रहों के शुभ या अशुभ प्रभाव में होगा तो शिक्षा में अन्तर आ जायेगा। पंचम भवन में जैसे कोई उच्च का ग्रह बैठा हो, वह भले ही शुभ हो, परन्तु यदि वह क्रूर, अकारकया पाप दृष्टि से संबंध स्थापित रखता हो तो सन्तान या पढ़ाई में अशुभ फल देगा। इसके अलावा जातक की कुन्डली में चल रही दशा अन्तर्दशा का बहुत प्रभाव पड़ता है। जैसे यदि पंचम भवन की शुभ स्थिति हो किन्तु राहु की महादशा चल रही हो तो निश्चय ही शिक्षा में व्यवधान, घर से दूर रहकर पढ़ना आदि होगा। राहु या उस पंचम भवन में बैठे ग्रह की स्थिति का भी बहुत फल शिक्षा में पड़ता है।

अतः पंचम भवन या कोई भी फलादेश करते, वख्त बहुत बातें ध्यान में रखनी चाहिए। आप कितने सक्षम है यह अनुभव, व्यवहार और अंतः प्रेरणा पर निर्भर करता है।

****

षष्ठ भाव

कुंडली में षष्ठ भाव मुख्यतः रोग एवं शत्रु को दर्शाता है। इसके आलावा छोटे मामा, भय, चोर, कर्ज, दुर्घटना, अंतड़ी, असफलता, व्यसन तथा पागलपन के विषय में जाना जा सकता है। इस भाव के विषय में कोई भी फलादेश करने से पूर्व थोड़ा अध्ययन करना आवश्यक है।

1. षष्ठ भाव में कौन सी राशि है।
2. षष्ठ भाव में कौन सा ग्रह बैठा है। किसके साथ है।
3. षष्ठेश किस भाव और किस राशि में बैठा है। किसके साथ है।
4. षष्ठ भाव तथा षष्ठेश पर अन्य ग्रहों की दृष्टि।

षष्ठ भाव का कारक ग्रह मंगल है। अतः षष्ठ भाव का फलादेश करते वक्त, मंगल ग्रह की स्थिति भी जान लेनी चाहिए। इस लेख में विशेषतः हम रोग एवं शत्रु के विषय में चर्चा करेंगें। षष्ठ भाव में जो ग्रह या राशि होती है, उससे संबंधित शत्रु या रोग, कष्ट आदि होता है। षष्ठ भाव से संबंधित ग्रह या राशि यदि शुभ स्थिति में है तो जातक के शरीर का वह अंग ठीक रहेगा और यदि वह अन्य ग्रहों से पीड़ित है तो कष्ट संभव है।

यहाँ एक बात का ध्यान रखना आवश्यक है। रोग के लिए लग्न की स्थिति भी जान लेनी चाहिए। प्रथम भाव को तनु भाव अर्थात व्यक्ति के शरीर और मन का भाव भी कहते हैं। इसलिए यदि लग्न या लग्नेश किसी पाप ग्रह से पीड़ित है तो शरीर सुख में बाधा अर्थात रोग, कष्ट आदि संभव है। जैसे यदि लग्न में पाप ग्रह या वक्री ग्रह हो और लग्नेश षष्ठ भाव में बैठ जाये। षष्ठेश यदि पाप ग्रह से पीड़ित हो तो रोग अवश्य होगा। कुंभ लग्न में यदि शनि षष्ठ भाव में वक्री हो। लग्न में एक या दो पाप ग्रह या वक्री ग्रह को। षष्ठेश यदि सप्तम भाव में बैठा हो तो निश्चय ही उसे लग्न में बैठे पाप ग्रह अवश्य देखेंगे तब रोग होगा। अब रोग क्या होगा, यह देखो।

षष्ठेश चन्द्रमा गले से नीचे छात तक के अंग से संबंध रखता है। अतः उस व्यक्ति को गले के नीचे और पेट के ऊपर का रोग देगा। यह रोग कब होगा? यदि यह जानना हो तो दशा-अन्तर्दशा और ग्रहों की गोचर स्थिति जान लेनी चाहिए। पापी ग्रह से पीड़ित षष्ठेश की दशा या षष्ठेश जिस राशि में बैठा है, उसकी दशा यदि चल रही हो, उस दशा में तो रोग संभव है। कई बार लग्नेश जब षष्ठ भाव में गोचर श पहुँचता है या चन्द्र लग्न से द्वादश भाव में बैठे ग्रह की स्थिति भी रोग प्रदान करती है।

षष्ठ भाव में यदि क्रूर या पापी ग्रह बैठ जाये तो उस भाव को मजबूत कर देते हैं किन्तु स्वयं निर्बल हो जाते हैं। यदि उसमें शुभ ग्रह बैठा तो उस भाव को कमजोर कर देते हैं और खूद मजबूत हो जाते हैं। अतः षष्ठ भाव में शुभ ग्रह शुभ नहीं होते। किन्तु यहाँ कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। प्रथम तो यह जान लेना चाहिए कि लग्न कौन सा है। उसके लिए कौन सा कारक या अकारक ग्रह है षष्ठ भाव या षष्ठेश पर किन ग्रहों की दृष्टि है। कौन सी दशा चल रही है तथा गोचर में ग्रह की स्थिति क्या है।

षष्ठ भाव आपके शत्रु का भाव है। षष्ठ से षष्ठ अर्थात एकादश स्थान आपके शत्रु के शत्रु हुए। इसके द्वारा आप यह जान सकते हैं कि आपके शत्रु कैसे होंगे और जिनकी मदद से आप अपने शत्रु को पराजित कर सकेंगे। अगर आपको यह जानना हो कि शत्रु कैसे होंगे तो यह देखिए कि कुंडली में षष्ठ भाव का सम्बंध किस पापी भाव से है।

यदि षष्ठ या षष्ठेश का संबंध लग्न या लग्नेश से हो तो व्यक्ति अपना दुश्मन आप होता है। वह असंयम और गलत रह अपना लेने के कारण कष्ट भोगता है। यदि लग्न पाप ग्रह से पीड़ित हो तो उसको बिमारी का ईलाज कोई भी डाक्टर नहीं कर पाता।

यिद षष्ट या षष्ठेश का संबंध द्वितीये भाव या भावेश से हो तो शत्रु परिवार के कोई अपने लोग होते हैं। मामा से विशेष लाभ नहीं मिलता। षष्ठ का तृतीये से पाप संबंध, छोटे भाई बहन मित्र या पड़ोसी में

से कोई शत्रु उत्पन्न करता है। उसी प्रकार चतुर्थ भाव से षष्ठ का किसी प्रकार का पाप संबंध यह बताता है कि माता से व्यवहार ठीक नहीं रहेगा। वाहन या जीवन के सुख में कमी आयेगी। उसी प्रकार पंचम से षष्ठ का संबंधा पुत्र या शिक्षाक से अनबन। षष्ठ का सप्तम से पाप सम्बंध पत्नी से मतभेद या पार्टनर से अनबन। इसी तरह अन्य भावों का भी फल समझा जाना चाहिए।

बीमारी के विषय में यदि जानना हो तो पहले यह देखे कि षष्ठेश या षष्ठ स्थान की राशि का कौन सा तत्व है। जैसे मेष, सिंह और धनु अग्नि तत्व प्रधान राशि है। बृषभ, कन्या और मकर पृथ्वी तत्व है। मिथुन, तुला और कुंभ वायु तत्व है। कर्क, बृश्चिक और मीन जल तत्व प्रधान राशि है। यह रोग को समझने में मदद देती है। अब अन्य ग्रहों के विषय में थोड़ा समझें।

1. सूर्य-आत्मा दाहिनी आँख, हड्डी, हृदय, पेट का प्रतिनिधि है। गर्भ ग्रह है। यह स्थिर राशि तथा अग्नि तत्व है।
2. चन्द्रमा-रक्त बाँयी आँख, फेफड़ा, स्तन छाती याददास्त, गठिया कल्पना आदि। यह जल तत्व और ठंढा है।
3. मंगल-मसल्स, मष्तिस्क, हड्डी, नाक, मांस, कान, अंडकोष, स्नायु संस्थान का कारक है। यह गर्भ ग्रह है तथा आप्रेशन कराता है। जलाता है।
4. बुध-त्वचा, जीभ, सांस की नली मूँह अंतड़ी, पेट, केश बुद्धि, वाणी तथा नपुंसकता दे सकता है। यह जिस ग्रह या राशि में बैठता है, उसका असर देता है। विशेषकर तब जब वक वक्री हो।
5. गुरू-चर्बी, लीवर, जिगर, वायु, कान तथा नितम्ब आदि।
6. शुक्र-टांसिल, वीर्य, काम वासना, बाँया कान और गिल्टी।
7. शनि-पाँव, हड्डीयों का जोड़, नपुंसकता, दाँत, कफ, घूटना तथा ठंढक देता है।

राहु में शनि के गुण होते है और केतु में मंगल को राहु जहरिला ग्रह है, दुघर्टना देता है। केतु त्वचा कपर देता है। फिर भी यह देख लेना चाहिए कि यह किस राशि में, कौन से ग्रह के साथ बैठा है।

षष्ठेश या उस राशि में बैठे ग्रह की दशा अन्तर्दशा में रोग होने की संभावना अधिक होती है। जैसे यदि षष्ठ भाव का संबंध सूर्य से हो तथा वह पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो बुखार, दिल का दौरा, आँख या जलने को संभावना रहती है। चन्द्र की दशा कफ, ठंढक, छाती का कष्ट तथा पानी से खतरा देता है। मंगल की दशा में आप्रेशन होता है। गले की तकलिफ, रक्त कान या माथे का कष्ट बताता है। षष्ठ भाव में शुक्र कामूम प्रवृति है। शुक्र यदि उच्च का हो तो व्यक्ति स्वयं आराम तलबी तथा स्त्री की तरफ आसक्त रहेगा उसे जीवन में किसी एक सुख से बंचित रहना पड़ता है। फिर भी वह खर्चालू होगा। आराम तलबी तथा कपड़े एवं फिल्म का शौकिन होता है। पैसे बचते नहीं।

षष्ठ में मगंल व्यक्ति को कटू बचनी तथा स्पस्टवाद बनाता है। उसके शत्रु भी भयंकर होते है, मामूली नहीं। यह जीवन में आपरेशन कराता है। विशेषकर यदि मंगल, शनि के साथ बैठा हो तो पेट का आपरेशन संभव है। केवल शनि हो तो व्यक्ति शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। रोगी को मरने नहीं देता। यह हिम्मत और शिक्त प्रदान करता है। सूर्य षष्ठ भाव में रिश्तेदारों के साथ अच्छा संबंध नहीं रखता। षष्ठ भाव में राहु रोग एवं शत्रु पर विजय देता है।

षष्ठ भाव सिर्फ रोग का भाव है, मृत्यु का नहीं। मारकानि-राहु स्थिति अष्ठम भाव से पता चलती है। रोगी की कृत्यु किस रोग या स्थिति में होगी यह षष्ठ स्थान तथा अष्ठम के योग से होती है।

षष्ठ स्थान अशुभ स्थान है। यदि इसका स्थान अष्ठम तृतिये या द्वादश भाव (अशुभ) में बैठा तो ठीक होता है। कई बार इन तीन भावों यदि सभी या अधिक ग्रह बैठ जाते हैं तो व्यक्ति स्वस्थ्य एवं सबल होता।

काल पुरूष की बारह राशियों को हम बारह भागों में बॉट सकते हैं। जैसे मेष राशि व्यक्ति के प्रथम भाग अर्थात मस्तिष्क को दर्शाता है। इसका स्वामी मंगल रक्त, और कान का धोतक है। दूसरी राशि बृषभ है जो गले साँस की नली गिल्टी, टॉसिल आदि बताता है। तिसरी राशि मिथुन होती है जो कंधे, फेफड़ा, हाथ, रक्म, मांस, कफ पीत आदि का

धोतक है। कर्क छाती, हँसली तथा पेट का कुछ भाग। सिंह राशि पीत, कमर, हृदय, आँख आदि भाग को बताता है। कन्या राशि अंतड़ी, पेट, लीबर, गुर्दा आदि। तुला राशि कीडनी पेट में गड़बड़ चमड़ी आदि। बृश्चिक राशि शरीर के मध्य भाग का गुप्त अंग, तथा नपुंसकता। धनु राशि-जाँघ नितंब तथा कमर आदि। मकर राशि-ठेहुना, दाँत, घुटना, जोड़ आदि। कुंभ राशि पाँव, पाचन शक्ति घुटने के नीचे, दर्द तथा रक्त भ्रमण में बाधा। मीन राशि-पाँच सूजन खुजलाहट ऐड़ी आदि। इस तरह शरीर के बारह भागों को हम बारह हिस्से में बाँटते हैं। कुंडली में जो राशि और ग्रह पापी हो जाते हैं, व्यक्ति को उससे संबंधित अंग पर कष्ट होता है।

अब हम शरीर के कुछ अंग और उसकी बीमारी के विषय में चर्चा करेंगे। मंगल ग्रह की अशुभ स्थिति में आँखों में टेढ़ापन (भेंगापन) देता है तो शुक्र की अशुभ नीच या वक्री स्थिति बोलने में रुकावट डालता है। सूर्य अशुभ होने पर हृदय या आँखों में कष्ट। चन्द्रमा का अशुभ संबंध-यदि मंगल राहु या शनि जैसे दीर्घ कालीन रोग देनेवाले ग्रह से हो तो दमा या क्षय रोग संभव है। कैंसर रोग का कारण भी शनि-राहु है। यदि गले का कैंसर हो तो शनि-राहु का संबंध शुक्र और मंगल से होगा। बुध का संबंध यदि मंगल, सूर्य से हो तो वह पाप दृष्टि हो तो पेट के आस-पास का रोग संभव है। इस तरह अन्य रोग के विषय में जाना जा सकता है।

पहले हमने ग्रहों की चर्चा की। अब राशियों की करें:-

मेषः तुला का संबंध = कपाल, मस्तक या सरदर्द देता है।

बृषभः बृश्चिक = गला, सर्दी, खाँसी, टाँसिल आदि।

यदि तृतियेश बुध के साथ पीड़ित हो तो गले में कष्ट संभव है लग्न में राहु दाँत को कमजोर करता है, यदा-कदा शरीर कष्ट देता है। द्वादश भाव में सूर्य हो तो आँख में कष्ट संभव है। सप्तम में राहु गैस्ट्रीक ट्रेबुल होता है। इसके लिए सिंह राशि एवं पंचम भाव भी जिम्मेदार होता है। इसी प्रकार दिमागी परेशानी, हिस्टीरिया डर या बेचैनी में ''मोती'' रत्न लाभ देता है। वैसे भी आयुर्वेद में रत्न के भस्म से

रोग का इलाज होता है। जैसे मोती में कैल्सियम होता है। अतः शरीर में यह कैल्शियम की कमी को पूरा करता है।

जैसे दमा (अस्थमा) के रोग का कारण दो कारणों से होता है। एक तो साँस की नही ( ) में विकार होना और दूसरे कर्क राशि, चतुर्थ भाव, चन्द्रमा यदि राहु, शनि या कोई अकारक अथवा क्रूर ग्रह द्वारा पीड़ित हो गया हो तो सम्भव है।

कैंसर ( ) के लिए भी शनि एवं राहु ही जिम्मेदार है। कुन्डली में जो भाव या भावेश तथा उसका कारक ग्रह यदि पाप प्रभाव में हो तो उस स्थान विशेष में रोग संभव है।

इस तरह हम देखते हैं कि जन्म कुण्डली में षष्ठ स्थान रोग स्थान है फिर भी यदि कोई अन्य भाव या भावेश तथा उसकी कारक राशि पाप ग्रह से पीड़ित हो तो उस स्थान विशेष में कष्ट होता है। जब राहु पीड़ित होता है या उसकी दशा चलती है तो आदमी में मानसिक, शारीरिक चिन्ता, परेशानी, झंझट, दुर्घटना मतभेद, कार्य में रूकावट, व्यर्थ की दौड़धूप, मेडीसीन रियेक्शन या फूड पॉयजन होता है। तब उन्हें यदि गोमेद रत्न धारण कराया जाये तो लाभ होता है।

रत्न या उपरत्न कोई चमत्कार नहीं है। जिस तरह बीमारी के लिए दवा उपयोगी सिद्ध हो सकती है, उसी प्रकार अशुभ ग्रहों के चलते शारीरिक, मानसिक या आर्थिक पक्ष को दूर करने के लिए रत्न उपरत्न थोड़ा लाभ दे सकते हैं, रिलिफ दे सकते हैं। प्रकृति के नियम को तो हम नहीं रोक सकते, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि यदि पानी पड़ रहा हो तो छाता और रेनकोट पहनकर पानी से बच सकते हैं। बस यही काम रत्नों का है। यह क्रूर ग्रह की क्षमता को कम कर सकता है। जिस प्रकार ठंढक में बर्फ गिरने को हम नहीं रोक सकते, परन्तु गर्म कपड़े पहनकर अपनी रक्षा तो कुछ कर ही सकते हैं। ठीक यही कार्य रत्न उपरत्न करते हैं।

******

सप्ततेश व्यय भाव में

उच्च वर्ग की वैश्या	व्यभिचारी व्यक्ति	स्त्री पर अत्याचार

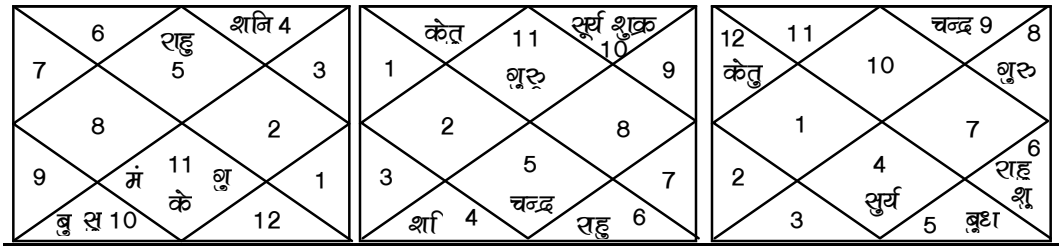

1 2 3

कुण्डली में हर भाव तथा ग्रहों की अपनी उपयोगिता है। सप्तम भाव से मुख्यतः पत्नी के विषय में जाना जा सकता है। किन्तु मेरे विचार से आधुनिक युग में, विवाह की व्यख्या और उसका अर्थ बहुत बदल गया है। पश्चिमी सभ्यता से ग्रस्त इस समाज में, विवाह से पूर्व, युवा प्रेमियों के भावात्मक और शरीरिक सम्बंध को आप क्या कहेंगे? यह सम्बन्ध एक से अधिक भी हो सकते हैं। मेरी नज़र में यह शादी का दूसरा नाम है। किसी जातक की कुण्डली में प्रथम विवाह योग यदि सत्रह वर्ष की उम्र में हो, तो इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि उसकी शादी उस समय में हो ही जायेगी। हाँ, यह सच है कि सत्रह वर्ष में, उसे स्त्री का सुख, अवश्य मिलेगा।

यहाँ सप्तम भाव की चर्चा करते हुए यह बताना चाहता हूँ कि इससे केवल पत्नी या पति के विषय में ही नहीं जाना जा सकता है, बल्कि व्यभिचार, व्यापारिक साझेदारी, संगीत, यात्रा का टूटना और गोद लिए जाने आदि के विषय में भी जाना जा सकता है।

हमने अपने अनुभव में पाया है कि कुण्डली में, हर भाव के स्वामी का द्वादश भाव में बैठना शुभ फल प्रदान करता है। बस उसके साथ एक शर्त यह है कि वह ग्रह पीड़ित होकर वक्री या नीच का द्वादश में बैठा हो अन्यथा कई बार शुभ फल देखा है।

नपुंशक	क्रूर पति	कई पत्नी की मृत्यु
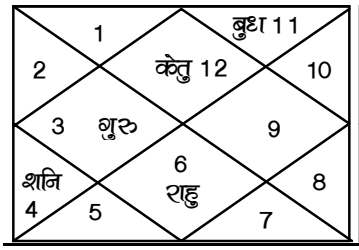	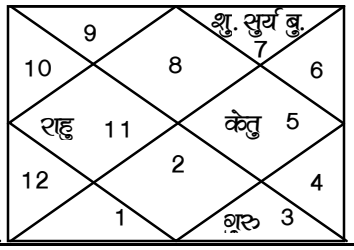	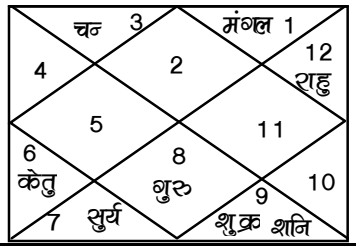
4	5	6

सप्तमेश का द्वादश भाव में बैठना, न सिर्फ व्यक्ति में कामुक प्रवृति एं गलत दिशा में भटकन देता है, बल्कि विवाहिक जीवन में क्रूरता तथा व्यापारिक साझेदारी में मतभेद उत्पन्न करता है। उपर कुछ कुण्डलियों का उदाहरण दे रहा हूँ।

दर्जनों कुण्डलियों का अध्ययन करने के पश्चात मैंने विभिन्न ग्रहों के अलग-अलग फल (नेगेटिव) बूरे रूप में ही देखें हैं। पुरूष की कुण्डली में शुक्र यदि मंगल शनि या सूर्य से पीड़ित न हो तथा चन्द्र एवं सप्तमेश अच्छी स्थिति में हो। उसी प्रकार स्त्री की कुण्डली में सूर्य, गुरू, तथा सप्तमेश पापी ग्रहों से पीड़ित न हो तो विवाहिक जीवन सम्भल सकता है वरना सप्तमेश के द्वादश भाव में स्थिति से अधिकांशतः पति पत्नी के जीवन में मतभेद और कटूता लाता है।

यदि सप्तमेश मंगल द्वादश भाव में हो तो व्यावाहीक जीवन न केवल कष्ट में होगा बल्कि व्यभिचार एवं पत पत्नी की मृत्यू आदि सम्भव है। बार-बार शादी या गैर स्त्री पुरूष के सम्बन्धा के बावजूद, भी स्थिति परेशानी होती है। कई बार ऐसे में अलगाव या तलाक की नौबत आती है। यदि स्त्री और पुरूष दोनों की कुण्डली में यदि द्वादश के मंगल का दोष हो तो दुख की मात्रा घटती है, किन्तु चिन्ता की स्थिति बनी रहती है। मंगल क्रुर एवं गरम ग्रह है यदि इस पर शुभ एवं कारक ग्रहों की दृष्टि न हो तो कष्ट बड़ेगा। ऐसे में अधिकतर पति पत्नी एक दुसरे पर नपुंसकता, अत्याचार या कोई झुठा सा आरोप मढ़ कर अलग हो जाते हैं और स्वयं को निर्दोष समझते हैं। इसके लिए पहले

नम्बर की कुण्डली देखें इसमें अकारक गुरू वक्री हो कर सप्तम भाव में बैठा है, जिसपर राहु एवं मंगल की क्रूर दृष्टि तथा नीच के सूर्य एवं शुक्र-शनि का अशुभ योग है। ऐसे में जीवन साथी की मृत्यु और दुखद व्यवाहिक जीवन होना स्वभाविक है।

सप्तमे शनि यदि द्वादश भाव में, पाप ग्रह के रूप में बैठे तथा उस पर अकारक एवं पापी ग्रहों की दृष्टि हो तथा गुरू-शुक्र पीड़ित हो तो व्यवाहिक जीवन सुखमय नहीं होता। यह योग मंगल इतना भंयकर प्रभाव तो नहीं लाता किन्तु फल बुरा ही होता है प्रथम कुण्डली में सप्तमे शनि पर सूर्य तथा वक्री बुद्ध की दृष्टि है। सप्तम भाव पर राहू की अशुभ दृष्टि तथा। सप्तम भाव में मंगल के साथ गुरू है एक ऐसी औरत की कुण्डली है जिसने अपने कई पति को बदले और आज समाज में बदनाम है।

यहाँ एक बात फिर से स्पष्ट कर दूँ कि स्त्री की कुण्डली में, पती के लिए सूर्य वैवाहिक जीवन के लिए गुरू और सास के लिए शुक्र की स्थिति से जानकारी सही मिल सकती है। उसी प्रकार पुरूष की कुण्डली में चन्द्रमासे पत्नी एवं शुक्र तथा सप्तमेश से वैवाहिक जीवन के विषय में स्थिति स्पष्ट हो सकती है। अतः पति या पत्नी के विषय में कोई फलादेश करते वक्त इन बातों को सदैव अपने ध्यान में रखना चाहिए।

सप्तमे सूर्य की द्वादश भाव में स्थिति व्यक्ति में कामुकता, क्रोध नेत्र कष्ट, विष एवं अग्नी भय प्रदान करता है। विवाह पूर्व किसी स्त्री से भावात्मक या शारिरिक सम्बन्धा स्थापित करता है। सूर्य यदि शनि के घर में हो तो अपने से बड़े उम्र की स्त्री से अनैतिक रिश्ता कायम होता है। शादी देर से होती है। बूरे ग्रहों की स्थिति विवाह उपरान्त जीवन साथी से विमुक्ता की स्थिति लाता है। द्वितीये कुण्डली में सूर्य शुक्र के साथ है जिस पर राहू की दृष्टि है। सप्तम के चन्द्र पर भी वक्री गुरू की दृष्टि ने इस व्यक्ति को सराबी, व्यभिचारी और बड़ी उम्र की औरतों से सम्बन्ध बनाया। तीस वर्ष के उम्र के बाद भी शादी नहीं हुई है।

सप्तमेश चन्द्र यदि द्वादश में पीड़ित हो तो व्यक्ति चंचल अविश्वासी एवं गलत राह पर जाने वाला हो। मानसिक उलझन, पागलपन, आत्म हत्या या पति पत्नी में दूरी लाता है। तृतिये कुण्डली में सप्तम भाव में सूर्य है उस पर गुरू तथा केतु की दृष्टि तथा सप्तमेश चन्द्र द्वादश में बैठा है। इसका जीवन बड़ा दुखद है।

सप्तमेश बुध व्यय भाव में हो तो जातक में जन्म, शक्ति, (सेक्स) अर्थात काम शक्ति का अभाव रहता है। बुध नपुंसक ग्रह है अपने आप में इसकी कोई उपयोगिता नहीं है। जबतक में ग्रह वक्री या नीच का न हो तब तक स्वतंत्र फल नहीं देता। यह जिस भाव राशि और ग्रहों के साथ बैठता उसी का फल प्रदान करता है। शुभ के साथ शुभ, अशुभ के साथ अशुभ। सप्तमेश बुध के द्वादश भाव में बैठने के जीवन साथी का अन्य नारि पुरूष के प्रति झुकाव और गलत सम्बन्ध देता है। उपर के कुण्डली में चतुर्थ सप्तमेश बुध व्यय भाव में वक्री गुरू से दृष्टि है तथा सप्तम भाव राहू शनि से दृष्टि है। शुक्र भी सुर्य से पीड़ित है। इस अफसर की पत्नी भाग किसी ओर के साथ भाग गई। कुछ ऐसी स्थिति सप्तमेश गुरू के द्वादश भाव में बैठने से होता है। इसमें जातक स्वयं पति धर्म का पालन नहीं कर पाता॥

सप्तमेश सूर्य का व्यय भाव में बैठना जातक में विलासिता, व्ययभाव, शौक, खर्च, कर्ज में डुबाता है। व्यक्ति निर्दयी तथा व्यभिचारी होता है। विवाह के पूर्व प्यार में चोट खाना किसी स्त्री से अनैमिक सम्बन्ध रखना तथा विवाह के पश्चात पत्नी को घृणा करने वाली स्थिति रहती है। प्रस्तुत कुण्डली में (पंचम) सप्तमे शुक्र पर वक्री गुरू एं राहू की दृष्टि है। शुक्र स्वयं विपरीत है यह व्यक्ति याश, दुष्ट, मनमौजी, बेपरवाह, वेविचारी और पत्नी के प्रति क्रूर है।

इस तरह सप्तमेश का द्वादश भाव में बैठना, निश्चय ही वैवाहिक जीवन के लिए दुखद परिणाम लाता है। यह अनुभव पच्चासों कुण्डलीयों को देखने से मिला है। अधिकांशतः बुरे परिणम ही देखने को मिले है। ऐसी स्थिति में विवाह के बाद, सात डेढ. साल के अन्दर ही, वैवाहिक जीवन में कटुता, वैमनुष्य और तलाक की स्थिति आ जाती है।

किन्तु यदि कारक ग्रहों की स्थिति अच्छी हो और सप्तमेश पीड़ित न हो तो वैवाहिक जीवन में वर्ष डेढ़ वर्ष के बाद, पत्नी-पति के बीच समझौता, प्रेम और लगाव बहुत लम्बे समय तक रहता है। खतरा केवल वर्ष भर के अन्दर ही रहता है। वरना कुछ कुंडलीयों में लम्बा वैवाहिक जीवन भी देखने को मिला है।

पति क्रूर मिला (तलाक)	पत्नी को मारकर भगाया (तलाक)	पति से नहीं बनता

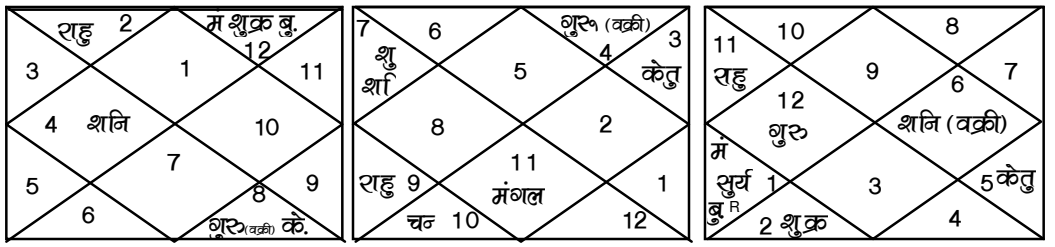

7 8 9

****

:-: विवाह एवं सप्तम भाव :-:

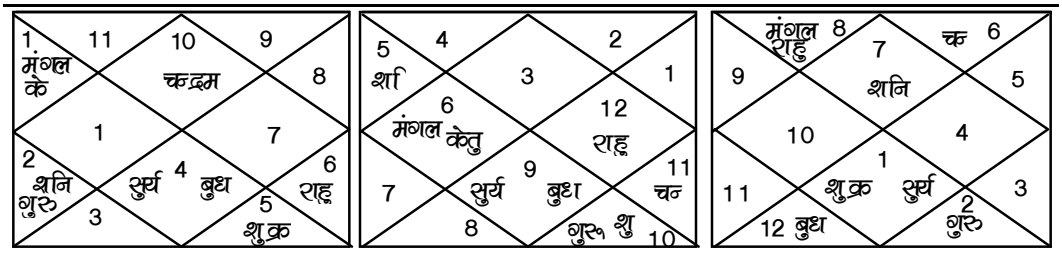

1 2 3

जीवन में विवाह का अपना महत्व है। लोग इस विषय में कुछ चिन्तित भी रहते हैं। विशेषकर वह लोग जिनकी शादी नहीं हुई है, या वह लोग, जो विवाह के बाद पछता रहे हैं। आज हमारे समाज में लड़कियों के विवाह की समस्या प्रधान है। मेरे पास अनेकों युवतियों

अपनी बढ़ती हुई उम्र से परिशान होकर दबी जुबान में शादी का प्रश्न करती है। उन के माँ-बाप की समस्या अलग है।

जन्म कुण्डली में सप्तम भाव जीवन साथी (पति या पत्नी) और व्यापारिक साझेदारी का विशेष द्यातक है। इसे अंग्रेजी में लाईफ पार्टनर या बिजनेस पार्टनर कहते हैं।

स्त्री की कुण्डली में गुरू, सप्तम भाव, सप्तमेश से विवाहिक जीवन के बारे में जाना जा सकता है। पति के लिए सूर्य की स्थिति भी महत्व रखता है। उसी प्रकार पुरूष की कुण्डली में शुक्र सप्तम भाव, और सप्तमेश से पत्नी के विषय में जाना जा सकता है। इसमें चन्द्रमा की स्थिति पत्नी के लिए अलग महत्व रखता है। यदि उपर के ग्रह शनि, राहु, केतु या किसी अकारक ग्रहों द्वारा पीड़ित हो तो विवाह में विलम्ब या कूट विवाहिक जीवन संभव है।

सप्रेम भाव में सूर्य-बुध का योग ठीक नहीं। स्त्री कुण्डली में विवाह देर से कराता है। सूर्य-बुध का सम्बन्धा अन्य भावों में शुभ फल (व्यापार में) देता है। सप्रेम भाव में यदि शुभ ग्रह वक्री हो या किसी पापी या क्रूर ग्रह के साथ बैठा हो तो भी विवाह में विलम्ब सम्भव है।

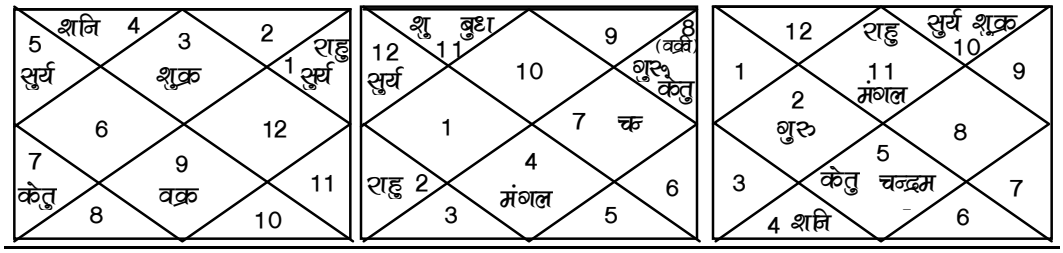

4 5 6

पच्चासों बड़ी उम्र के अविवाहितों की कुण्डलियों को अध्ययन करने के बाद, मैंने पाया कि यदि लगन द्वितीये, द्वॅादश या षष्ठ, सप्तम और अष्ठम भाव में शनि बैठा हो तो स्वामी के रूप में विवाह में व्यवधान या विलम्ब संभव है। ऐसे में एक जगह शादी का सम्बन्धा तथा होते- होते टूट जाता हूँ या जहाँ इच्छा होती है वहाँ (प्रेम) विवाह नहीं

होता, दूसरी जगह रिश्ता तय हो जाता है। कई बार शुक्र-शनि या शुक्र-मंगल का योग विवाह में विलम्ब तथा कटू विवाहिक जीवन देता है। शुक्र का अंश अधिक होने पर कई बार ऐसे में पति या पत्नी वफादार नहीं होते।

आज के आधुनिक युग में विवाह की परिभाषा बदल गई है। स्त्री पुरूष का भावात्मक या शारीरिक सम्बन्ध एक मामूली सी बात रह गई है। इसे समाज विवाह नहीं कहेगा। किंतु ज्योतिष शास्त्र में यह विवाह का एक रूप है।

पहले बाल विवाह की प्रथा थी। वह कोई रूढ़िवादी प्रचलन मात्र नहीं था। बहुत हद तक यदि किसी कन्या की कुण्डली में चौदह वर्ष की उम्र में शादी का योग होता तो व्यवस्थित ढंग से किसी किशोर या युवक से उसका विवाह, समाज में होता था।

किन्तु आज ऐसी बात नहीं है। किसी युवक या कन्या को पन्द्रह-सोलह की आयु में, विवाह योग कुण्डली में बनता भी हो तो वह नहीं हो पाता। किन्तु इसे हम ज्योतिष शास्त्र की गलत परिभाषा नहीं कहेंगे। भले ही उस कन्या या किशोर का समाज में धार्मिक ढंग से, किसी से न भी हो, परन्तु उस उम्र में यह निश्चित सत्य है कि किसी अन्य से उस का भावात्मक (इमोशनल) या शारीरिक सम्बन्ध अवश्य होता है। इसे कोई रोक नहीं सकता। चाहे वह किसी भी रूप में हो यह संबंध एक से अधिक भी हो सकता है। सामाजिक नियमों के अनुसार इसे हम विवाह कदापि नहीं कहेंगे। किन्तु नैतिक दृष्टि से ज्योतिष शास्त्र इसे विवाह का अव्यवस्थित या असवैधानिक रूप ही कहेंगे। अब कई पुराने नियम आधुनिक युग में बदल गये हैं। पहले किसी सुखी व्यक्ति को अथाह धन, अनेक सन्तानें तथा हाथी या डोली का सुख प्राप्त होता था। किन्तु आज यदि ज्योतिष शास्त्र के पुराने नियम लागू करें तो फलादेश गलत हो जायेगा। आज एक धनी व्यक्ति की पहचान हजारों बीघा जमीन और एक बड़ी कोठी नहीं है। बल्कि शहर में अमीर आदमी के पास, कई आलीशान मकान और लाखों रूपये होंगे। अब

डोली की जगह मोटर साईकिल और हाथी की जगह मोटर का सुख प्राप्त होता है। अब पुरी आयु किसी की सौ वर्ष की नहीं सत्तर या पच्चहत्तर वर्ष होती है।

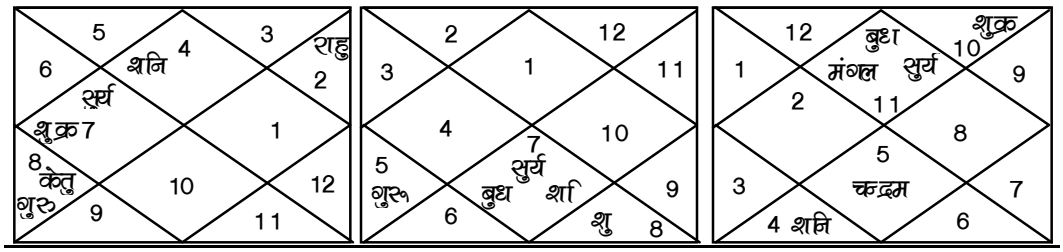

7 8 9

ऊपर की कुछ कुण्डलियों को देखने से पता चलेगा कि विवाह में बाधक या साधक ग्रह कौन-कौन से है। सप्तम भाव या स्पतमेश के पापी या अकारक ग्रहों से पीड़ित होने या गुरु-शुक्र की अशुभ स्थिति शादी में अड़चन डालता है तथा पति-पत्नी के सम्बन्धों में दरारें उत्पन्न करता है।

सप्तमेश का यदि कई ग्रहों से सम्बन्ध हो तो जातक को विवाह पूर्व दूसरे लोगों से भावात्मक या शारीरिक सम्बन्ध होता है।

कई बार सप्तम भाव को देखने वाले ग्रह भी कई अन्य लोगों से सम्बन्ध स्थापित करता है। विभिन्न ग्रहों से उक्त सम्बन्धों की व्याख्या संभव है। जैसे बुध, शुक्र, गुरु क्रमशः छोटी उम्र से बड़ी उम्र तक का सम्बन्ध दर्शाता है। शनि जातक को अपने से बड़ी उम्र से सम्बन्ध जोड़ता है। राहु या केतु नीची जाति या विधवा से अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कराता है। इस वस्तु की जानकारी अनुभव के आधार पर ज्योतिषी कर सकते हैं। कई बार चन्द्र-मंगल का सम्बन्धा किसी युवक या युवती को व्यभिचारी या जीवन में जबरन चरित्र हनन कराता है। कई बार (स्त्रियों) की कुण्डली में कई बार चन्द्र-मंगल सम्बन्ध मासिक दोष या रक्त सम्बन्धा कष्ट दर्शाता है।

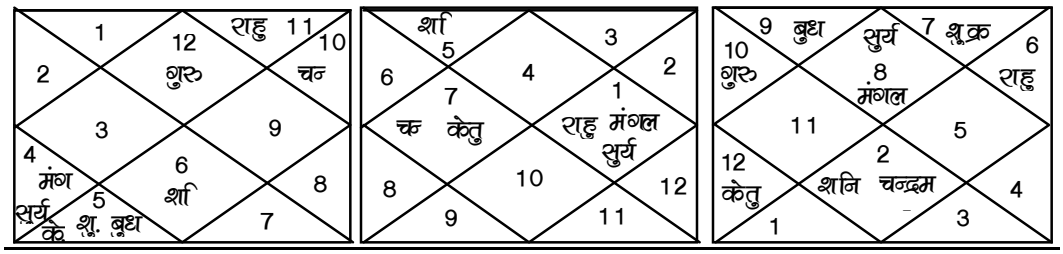

10 11 12

एक वयक्ति की कुण्डली (नम्बर 10) में सप्तम भाव का शनि जातक को विवाह में विलम्ब तो करा रहा है, किन्तु इसने किशोरावस्था से ही अनेको कन्याओं और स्त्रियों से शारीरिक सम्बन्ध अनाऐं है। इसके जीवन में प्रेम से अधिक शरीर सुख का महत्व आज भी है। इसके लिए स्पतमेश बुध का दो अन्य ग्रहों के साथ बैठना तथा राहु की दृष्टि एवं सप्तम के शनि को वक्री गुरू की दृष्टि भी व्यभिचारी बनने की शिकायत कर रहा है। इसके लिए चन्द्र-मंगल का सम्बन्ध भी आग में घी डाल रहा है।

कुण्डली (नम्बर 6) में एक 32 वर्ष के युवक की है। इसके सप्तम भाव में केतु-चन्द्र है तथा उस पर मंगल, राहु एवं गुरू की दृष्टि है। सप्तमेश सूर्य भी शनि से दृष्टि होकर शुक्र के साथ बैठा है। सप्तम भाव से इतने ग्रहों का सम्बन्ध व्यक्ति के चरित्र भ्रष्ट होने की कहानी कह रहा है।

इस प्रकार एक अन्य कुण्डली भी देखी जा सकती है। कुण्डली में सप्तम भाव का अलग महत्व है। आइये अब विवाह सम्बन्धी प्रश्न को सुलझाने का प्रयास करें। इसके पहले विवाह में देरी और अनैतिक सम्बन्धों की कुछ चर्चा हो चुकी है।

विवाह के लिए समय का कोई निश्चित, निर्धारण नहीं हैं। फिर भी अपने अनुभव में मैंने युवक युवतियों की कुण्डली में देखा है कि जबः-

1. द्वितीयेष, सप्तमेश या एकादेश सम्बन्धी ग्रहों की दशा जा रही हो तो विवाह का योग बनता है।

2. किसी कन्या की कुण्डली में द्वितीय, सप्तम या एकादश भी से किसी कुण्डली में, गुरू गोचर में गुजर रहा हो तो भी शादी का योग बनता है।

3. इसके लिए पहले यह देखना आवश्यक है कि लग्न, चन्द्र या सूर्य कुण्डली में कौन सा बलवान है। कई बार लग्न कुण्डली की अपेक्षा चन्द्र या सूर्य कुण्डली से भी विवाह का योग निकल आता है।

4. एक और आवश्यक बात ध्यान देने योग्य है कि सप्तम या सप्तमेश, द्वितीय तथा एकादश भाव या उन के ग्रहों पर कोई अशुभ दृष्टि तो नहीं है। यदि ऐसा हुआ तो विवाह के लिए बातचीत तो होगी, किन्तु कोई अंतिम निर्णय नहीं होगा। रिश्ता टूट सकता है।

अविवाहित पुरूषों की कुण्डलियों में मैंने शुक्र की दशा में विशेष तौर पर शादी या पारी सम्बन्धों को देखा है। चाहे वह कुछ समय के लिए भी क्यों न हो। शुक्र भौतिक सुख का कारक है। यह स्त्रियों से नैतिक या अनैतिक रिश्ता जोड़ेगा ही। कई बार सप्तम भाव से पुरूष का कुण्डली में जब शुक्र गोचर से गुजरता है तो भी कामशक्ति बढ़ जाती है या स्त्री सुख प्राप्त होता है।

****

द्वादश स्थान (व्यय भाव)

मनुष्य की कीर्ति तथा मौक्ष को दर्शाने वाले स्थान द्वादश भाव को हमारे विद्धवानों ने सही माना है काल पुरूष की कुण्डली में प्रथम भाव को मेष राशि अर्थात मस्तम (प्रथम स्थान) तथा द्वादश भाव को मीन राशि यानि काल पुरूष का पैर माना है। मस्तिष्क का कार्य सोचना और योजना तैयार करना है तथा पाँव का काम, उस पर अमल करना तथा गतिशील रहतना है।

परम्परागत रूप से द्वादश भाव में पड़े हुए ग्रहों को ज्योतिषियों ने अच्छा नहीं माना है, और न इसकी दशा को शुभ कहा है। ऐसी

मानना है कि द्वादश भाव से यय (खर्च) ने प्रदोष, हानि, दंड (जेल), नींद का टूटना झगड़ा मन की व्यथा, पाँच अधिकार की सम्प्रति कर्जदारी तथा मृत्यु के अलावा विदेश गमन, पिता की सम्प्रति, दान-धर्म, वैराग्य और यश-मग्न का भी पता चलता है। द्वादश भाव का स्वामी जहाँ बैठता है, वह षष्ठेश और अष्ठमेश की तरह ही, अनिष्ठ कारक अर्थात व्यक्ति को उस भाव सम्बन्धी बातों से पृथक कर देता है।

द्वादश भाव में पड़े ग्रह अति बलवान हो जाते हैं। यह उस भाव से सम्बंधी फल अच्छे रूप में देते हैं, जिसका ह स्वामी होता है केवल ह ग्रह, वक्री, नीच, कम अंश का और पापी ग्रहों से पीड़ित न कई बार द्वादश के ग्रहों की महादशा बहुत शुभ देखी है।

अतः द्वादश भाव सम्बन्धी फल करने से पूर्व कई बातें ध्यान में रखनी चाहिए किसी दुबले से व्यक्ति को रोगी कह देना और हष्ट-पुष्ट नजर आने वाले को स्वस्थ्य मान लेना ठीक नहीं है। बात उल्टी भी हो सकती है।

सूर्य आँखों का घोतक भी है। व्यय भाव में इसकी उपस्थिति आँखों के अधिक उपयोग यानि अधिक पठन-पाठन से जातक अपनी आँखें बिगाड़ लेता है। जल्द चश्मा आता है।

चन्द्र एक भावात्मक और चंचल ग्रह है। द्वादश भाव में इसके होने पर मनुष्य भावूक तथा अस्थिर विचारों का हो जाता है। भय, आंशका, तथा आदि मन में पाले रहता है। चन्द्र के साथ कोई अन्य ग्रह हो तो फल में थोड़ा परिवर्तन हो जायेगा।

व्यय भाव में सामान्यतः बुध बुछिद का अधिक उपयोग एवं आवश्यककता अधिक वाणी का उपयोग करता है। इसी प्रकार गुन की बेजरूरत भी दूसरों को ज्ञान की बातें बताने में समय नष्ट करता है।

शुक्र स्वयं भौतिक, रसिक एवं व्यय कारक ग्रह है। इसकी द्वादश भाव में स्थिति से जातक शौकिन, खर्चालू, कसा साहित्य तथा रत्नों में रूचि रखने वाला होगा।

कामूक एवं सुन्दरता में प्रिय होने के कारण, वीर्य का अधिक खर्च करेगा। पुरूष या स्त्री दीर्घ जीवी होता है पर कई बार पति पत्नी में मन मुटाव देखने को मिला है। द्वादश तथा षष्ठ स्थान में शुक्र की स्थिति से यह फल देखने का मिलता है, क्योंकि दोनों ही हालत में शुक्र का सम्बन्ध व्यय (खर्च) के भाव से होता है। यदि ऐसे शुक्र पर शनि या राहु-केतु की दृष्टि हो तो व्यक्ति कई बार व्यभिचारी एवं अधिक उम्र की स्त्री के सर्म्पक में आता है। वक्री या नीच के ग्रह भी कभी अच्छा फल नहीं देते। राहु केतु की दृष्टि नीच जाति की स्त्री से सम्पर्क कराता है।

द्वादश भाव में शनि व्यक्ति में स्नायु के अधिक प्रयोग से सुखा तथा चिड़चिड़ा स्वभाव का झगड़ाले बनाता है। ऐसे में अशुभग्रहों की दृष्टि से स्थित और भी विकट हो जाती है। योग कारक ग्रहों से कुछ लाभ होता है।

मंगल की द्वादश भाव में स्थिति परिश्रम एवं पुठ्ठों के अधिक प्रयोग से मसल्स की तकलिफ, क्रोध एवं पन देता है। पत्नी के लिए अकारक एवं हानिकारक होता है।

द्वादश भाव में राहु या केतु स्वतंत्रता रूप से यदि शुभ दृष्टि से देखे जाये तो मनुष्य कई बार धर्म और योग विद्या की तरफ बढ़ने लगता है। कई महापुरूषों की कुण्डली में यह योग देखने को मिला है। परन्तु द्वादश में राहु, केतु पापी तथा अकारक ग्रहों से पीड़ित होने पर चिन्ता परेशानी, पुत्र कष्ट गलत काम, देर से शदी, छोटे आदमी से मित्रता अच्छे से शत्रुता जेल जाने, केस में फँसने तथा स्त्री पुरूष के पथ भ्रष्ट होकर बड़ी उमर के लोगों से या निकट सम्बन्धी से अनैतिक सम्बन्ध देखने को मिलते हैं।

द्वादश भाव में पड़े हुए ग्रहों का अच्छा बूरा फल तो मिलता ही है। परन्तु कुण्डली देखते वख्त वक्री तथा नीचे या उच्च ग्रहों को स्थिति और दशा-महादशा जान लेना बहुत जरूरी है। जातक के जीवन में अस्सी प्रतिशत फल मैंने अष्ठातरी या विशोत्तरी महादशा और

अन्तर्दशा का देखा है। एक बात और ध्यान देने योग्य है। द्वादश भाव में पड़े हुए उत्तर भारत में विंशोत्तरी दशा का ही प्रचार है परन्तु दक्षिण में तथा पूर्व के कुछ भागों में अष्ठोत्तरी दशा भी लोग मानते हैं। स्वर शास्त्र में बताया गया है कि जिसका जन्म शुक्ल पक्ष में हो उसका अष्ठोत्तरी दशा तथा जिसका जन्म कृष्ण पक्ष में हो उसका विंशोत्तरी दशा द्वारा शुभ अशुभ जानना चाहिए।

ग्रह जातक की लग्न कुण्डली, सूर्य या चन्द्र कुण्डली में क्रूर अकारक या पापी ग्रह है या कारक, यह जान लेना भी आवश्यक है। इसके अलावा द्वादश भाव में पड़े ग्रह के अंशी की भी अपनी उपयोगिता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, यदि फलादेश करें तो सत्यबातें स्पष्ट होगी।

****

नामांक 1

आपका व्यक्ति बहुत प्रभावशाली, आत्मविश्वास से भरे, प्रबल, और अपने आप में अनेकों प्रतिभाएँ छुपाए हुए है। आपमें स्वतंत्र विचार शक्ति है; जो सदैव प्रलोभन से बचाती है। निडर, निष्पक्ष और न्यायपूर्ण फैसला लेने में सक्षम हैं। आपमें नेतृत्व की क्षमता है और मन का संकल्प अवश्य पूरा करते हैं। अपनी खुबियों और क्षमता के सहारे सफलता की मंजिल पर पहुँचेंगे। हृदय में सदा कुछ नया कर गुजरने की हसरत रहेगी।

जन्म से सृजनात्मक और शोधक प्रवृति के कारण; जीवन में विचारशील और कर्मवीर होंगे और पूरे आत्म विश्वास के साथ सफलता पाएंगे। अपने कार्यपद्धति और व्यक्तित्व में निरंतर सजाने-सँवारने की प्रवृति है। शारीरिक शक्ति के साथ-साथ, आत्मशक्ति भी मजबूत है। अपने भविष्य के लिए जागरूक हैं और अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। अपनी जिम्मेदारियों को आप बहुत लगन और ईमानदारी से पूरा करते हैं। बहुत बुद्धिमान, चतुर और संघर्षशील स्वभाव है।

आपका आत्मविश्वास कभी ज़िद और गुस्से में भूल न कर बैठे इसके लिए सावधानी जरूरी है। छोटी-मोटी बातों पर ध्यान न देकर मतभेदों से दूर रहें तो अपने साहस और दृढ़ निश्चय से सुखद भविष्य की कल्पना साकार कर सकते हैं। आप आत्मविश्वासी तो हैं, किन्तु साथ-साथ आधुनिक युग में अपने आपको ढाल कर समय से आगे की भी सोच लेते हैं।

आप अपनी हर योजना बहुत सोच-विचार कर बनाते हैं। सिर्फ पैस कमाना ही आपका लक्ष्य नहीं। कोई भी काम उसकी गुणवत्ता और ठोस आधार पर करते हैं। थोड़े आलसी और मूडी तो हैं किन्तु स्वतंत्रता पूर्वक किसी के दखलअंदाज़ी के बिना अपनी मनोकामना पूरी करना चाहते हैं, संघर्ष से घबराते नहीं। आपके व्यक्तित्व में एक आकर्षण जो किसी को प्रभावित कर सकता है।

नामांक 2

जीवन में आप सदा प्रगतिशील और प्रयत्नशील रहेंगे। कला-संगीत और खूबसूरत चीज़ प्रिय है। आपका स्नेह और मैत्रीपूर्ण व्यवहार किसी को भी अपना बना सकता है। कल्पनाशीलता, सहनशीलता और सदा कुछ नई और निराली चीज़ ढूंढने में डूबे रहते हैं। किसी की आलोचना और वक्त बर्बाद करने के बजाए आपकी दुनिया अलग है। "जिओ और जीने दो" के सिद्धान्त को मानते हैं। सदा अपनी मेहनत बुद्धि और लगन के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं। जीवन में दया; माया और भावना की कद्र करते हैं। आपको सफलता सरलता से नहीं मिलेगी। मंजिल तक पहुँचने के लिए संघर्ष और मुसिबतों का सामना करना पड़ेगा। अगर तर्क और ज़िद को छोड़ दें और आत्मविश्वास और सहज ढंग से किसी को समझने का प्रयास करें तो उन्नति जल्दी होगी।

मित्रों की संख्या अधिक होगी और आय के साधन भी। आप कार्यशील और कुछ नया करने के जोश में रहते हैं। कभी-कभी घर-परिवार और स्थिति भी अनुरूप नहीं होती, सहयोग भी नहीं मिलता। फिर भी आप उतार-चढ़ाव से घबराते नहीं, शांत मन से आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। सदैव दूसरों के मददगार और दयालु स्वभाव रखते हैं। आपमें खुबी है कि बड़ी समझदारी से सबके साथ सम्बन्ध सुधारने का प्रयास करते हैं।

यदि आप योजनाबद्ध रूप से भविष्य का निमार्ण करें और आत्मविश्वास बनाये रखें तो और भी अधिक लाभ मिलेगा। फैसला लेने में संकोच ना करें। भावुकता, उदासिनता और आवेश को अंकुश में रखिए। दरअसल आपको सदा एक नैतिक सहारे और प्रेरणा की जरूरत है, पैसे की नहीं; जो आपको सहयोग और हिम्मत दिलाती है। आपमें किसी भी चीज़ को सीखने का हुनर है। झूठा दिखावा, और आडंबर से दूर हैं; जो सच्चाई और ईमानदारी से जीना चाहता है। आपके जीवन में चाहे कितनी हीं मुसिबत आए फिर आप शान्त और दृढता से मुकाबला करते हैं। आप एक दिन जरूर सफल होंगे।

नामांक 3

आप अपने काम और जिम्मेदारियों के प्रति सदा सजग और वफादार रहेंगे। ऊपरवाले ने आपको अच्छी स्मरणशक्ति और समझने का हुनर दिया है। सदा खुश रहने और दूसरों के साथ जीवन का आनन्द अपने ढंग से लेते हैं। सदैव कुछ नया, सुन्दर और अनोखा सोचने और करने की कला है। मन से महत्वकांक्षी और दृढ़ इच्छा शक्ति वाले हैं। अपने कार्य के क्षेत्र में सदा आगे आने का प्रयास करेंगे। आप जानबुझ कर कभी किसी का बूरा नहीं करते, फिर भी लोग गलत समझ बैठते हैं।

आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में धीरे-धीरे, किन्तु ठोस प्रगति होगी ! किसी भी वस्तु, परिस्थिति या व्यक्ति को समझने और परखने का हुनर है। साथ ही वक़्त और लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ाकर लाभ उठा सकते हैं। अपने भविष्य की योजना बड़ी सुझ-बूझ से करते हैं। छोटी से छोटी बातों का भी ध्यान रखते हैं। अपनी भूल को सुधारने का प्रयत्न भी रहता है। किसी भी काम की शुरूवात के पहले, उसके आगे के परिणाम भी ध्यान में रखते हैं। आपने किताबी पढ़ाई से अधिक अपने अभ्यास और व्यवहारिक ज्ञान से सीखा है। अत्यन्त बुद्धिशाली और चपल हैं। थोड़े से वक़्त में किसी भी व्यक्ति या विषय को समझने की सुझ-बूझ रखते हैं और किसी भी लोभ, मोह में जल्दी फँसते नहीं ! कला, संगीत या सुन्दरता के प्रलोभन से अपने को अलग नहीं कर पायेंगे। आपकी कल्पना शक्ति एवं जीवन शैली में एक अलग सी रोमानी खुबसूरती है। सदैव सृजनात्मक और सुनहरे भविष्य की कल्पना में खुश रहना चाहते हैं। आपको एक दैविक शक्ति हमेशा बूरे वक्त में मदद करती है, जो सदा अन्तिम समय में मुसिबत से उबार लेती है। आपको पूर्वजों का पूण्य मिला है। बड़े संस्कारी और भगवान के आशिर्वाद से आप नेक काम भी करना चाहते हैं। आपसे कई नेक और भले काम भी होंगे। आप हर किसी को दान नहीं करेंगे। सामने वाले पात्र या स्थान देखकर निर्णय लेते हैं। आपको यश, मान, धन प्रचुर मात्रा में मिलेगा !

नामांक 4

आपका जीवन औरों से बिल्कुल अलग और अनूठा है। स्वभाव से आप बुद्धिशाली, सरल, चंचल मन के हैं। विचारों की अनगिनत तरंगे दिमाग में सदा घूमती है। मस्तिष्क बहुत क्रियाशील है, जिसमें कई प्रकार के विचार घूमते हैं। बचपन से एक ही सपनों की दुनिया में जीते हैं। सच्चाई में आपकी जिन्दगी में एक खालीपन का एहसास रहेगा। भीड़ में भी आप अकेले से हैं। दोस्त और रिश्तेदारों का दायरा बहुत बड़ा होगा; किन्तु साथ देने वाला वक़्त पड़ने पर नजर नहीं आता। सच तो यह है कि आपको कोई समझ ही नहीं पाया। सुख के साथी दुःख में दिखते नहीं। सच्चा प्यार शायद हीं मिले। आपमें कई गुण हैं, लेकिन विचारों को बार-बार न बदलें।

प्रेम और विवाह के मामले में आपको भाग्य पर निर्भर रहना पड़ेगा। साझेदारी का व्यवसाय लम्बा नहीं चलेगा। आप अपने भाग्य का निमार्ण खुद करेंगे। जिन्दगी का हर फैसला भी आपका अपना होगा।

आपमें बहुत सारी प्रतिभा है। कुछ नया, अलग और मौलिक विचारशक्ति है। सबसे अनूठा है सोचने और लिखने का अन्दाज़ जो सबसे निराला और सुन्दर प्रदर्शित कर सकते हैं। इस अंक को अति या अल्प के नाम से भी जाना जा सकता है अर्थात यह रोडपति या करोड़पति बनाता है। एक तरफ जन्म के अनुकूल ग्रह और परिस्थिति आपको सफलता की ऊँची सीढ़ी पर ले जाता है, जहाँ दुनिया की सारा सुख और आराम मिलता है। किन्तु दूसरी तरफ कभी दुःखों और कठनाईयों की हद तक भी ले जाता है। फिर भी संघर्ष ही आपका जीवन है और उससे घबराते भी नहीं ! जिन्दगी में अपने अतित के कटू अनुभवों और व्यवहारिक ज्ञान सदा आपको किताबों से अधिक नसिहत और शिक्षा दी है।

एक स्थान पर अधिक समय रहना या एक जैसा काम; अधिक समय तक कर पाना आसान नहीं। हर बार कुछ नया विचार और विलक्षण शोध आपको एक नई राह पर ले जायेगा। किसी भी सुअवसर को पकड़ लेने की कला है। आपकी खुबियों की एक दिन कद्र होगी !

नामांक 5

आप आत्म विश्वासी, साहसी और बुद्धिमान हैं। किसी भी समस्या को सुलझाने का अन्त तक प्रयास करेंगे। मन से दृढ़, स्वतंत्रा प्रिय और सदैव क्रियाशील रहेंगे। तन, मन, धन से किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लग जाते हैं। अपनी प्रगति और लाभ के लिए पूरी ताकत लगा देते हैं। वैसे जीवन में प्रारम्भ से एक अलग संघर्ष की परिस्थिति रही है। किन्तु आप कभी डरे नहीं। डट कर वक्त का मुकाबला किया है। आपमें पूरी शक्ति, जोश और आक्रमक्ता रहेगी। आधे मन से कभी कोई काम नहीं करते। यदि कुछ पाने की सोच आई तो उसके लिए हर प्रकार का प्रयास करेंगें।

किसी के काम में बेजरूरत दखलअन्दाज़ी नहीं करते और न अपने जिन्दगी में किसी का हस्तक्षेप पसन्द है। आपके पास मौलिक विचार हैं और पूरी आजादी के साथ-साथ, सुव्यवस्थित ढंग से पूरा करने का हुनर है। आपके पास व्यवहारिक और व्यवसायिक दृष्टिकोण है। आपकी कार्य पद्धति औरों से भिन्न है। कभी-कभी आप अपने खुशमिजाजी और विनोदी स्वभाव से दूसरों का दिल जीत लेते हैं। कला, संगीत, साहित्य और हर सुन्दर चीजें प्रिय है।

आप सदा नई सदी और नये जमाने में जीना चाहते हैं। पुराने सिद्धान्तों को पकड़कर जीना पसन्द नहीं। हर चीज को व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखते हैं। रूढ़िवाद और अंधविश्वास की जगह आपमें अपना आत्मविश्वास है। आपके विचार और सिद्धान्त कुछ कठोर हो सकते हैं, जिसको आप पालन करना चाहेंगे। वक्त और वचन की कीमत समझते हैं। झूठ और आडंबर पसन्द नहीं। अपने सिद्धान्तों और नियम को किसी भी परिस्थिति में तोड़ना नहीं चाहेंगे। आप किसी भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझते। आप उसमें अच्छाई या बुराई का प्रमाण देखते हैं। यदि आप अपनी ज़िद और क्रोध के साथ शंकाशील स्वभाव पर काबू पा लें तो आपके जितनी शायद ही किसी में प्रतिभा देखने को मिले ! आप अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ करेंगे।

नामांक 6

यह अंक शुक्र का प्रतिनिधि है, जो सदा भौतिक सुख-सुविधा, सुन्दरता, कला, संगीत और सुव्यवस्थित जीवन जीना चाहते है। आपको हर प्रकार का भौतिक सुख सम्पन्नता, उदारता, प्रेम और आदर्शवादी जीवन जीने की प्रेरणा मिलती रहेगी। आपके व्यवहार और आचरण में एक अलग सी सहज, अनोखा और नाजुक सा अन्दाज है। रोज़ाना ज़िन्दगी में, बातचीत और रहन-सहन में भी नवाबी ठाठ होगा। छोटी और हल्की बातें पसन्द नहीं। पसन्द भी ऊँची होगी। आन-बान और शान का जीवन चाहते हैं। किन्तु इतने भी खर्चिले और बेफिक्र नहीं, कि अपने रूवाब में बर्बाद हो जाये ! आनन्द-प्रमोद में रूचि तो है, लेकिन अपनी सीमओं और हिसाब-किताब का पूरा ध्यान रखते हैं।

दिल से दयालु, न्याय प्रिय और मददगार होंगे। किन्तु हर चीज़ को ध्यान से और तर्क से सोच-विचार कर निर्णय लेते हैं। अपने भविष्य का निमार्ण में सुझ-बूझ से किया। थोड़े आराम तलबी और मुडी तो है, लेकिन इतने बेखबर नहीं, कि आस-पास की चीज़ों और अपनी जिम्मेदारियों को भूल जायें। लोगों को ध्यान हो न हो, लेकिन आपके आँख और कान खुले रहते हैं। आपमें शाम, दाम, दण्ड, भेद की निति है, जिससे आप युक्ति पूर्वक और बड़ी चपलता और समझदारी से किसी को भी बस में कर सकते हैं या अपने पन का अहसास दे सकते हैं।

आप अपने मान-सम्मान के प्रति हमेशा सजग रहते हैं। लोक-लाज और व्यवहारिक सम्बन्धों में खर्च करना भी जानते हैं। कभी-कभी तो ज़रूरत से अधिक भी आप खर्च कर बैठते हैं। जीवन में मिली खुशी को खोना नहीं चाहते। खाने-पीने का अच्छा शौक़ है। अकेले और अपने ढंग से परम आनन्द लेते हैं। आप को थोड़ा जागरूक होने और स्वास्थ का ध्यान भी रखना चाहिए। प्रलोभनों और चाटुकारों से सावधान रहें। कभी-कभी लोग आपके भलेपन का फायदा उठाते हैं। सुपात्रों को हीं दान दें। आप अपनी प्रतिभा के बल पर भविष्य को सुन्दर बना सकते हैं।

नामांक 7

आपके नाम के अनुरूप इस संख्या में एक गजब का जादू है, जो किसी को भी आकर्षित कर सकता है। आप किसी भी परिस्थिति में, अपने आप को ढालते हुए, हालात का अपने अनुकूल बनाने की अद्यभूत शक्ति है। यह सिर्फ आपकी समझदारी, बुद्धिमत्ता और धैर्य को नहीं दर्शाता, बल्कि प्रभावशाली व्यक्तित्व, गहन विद्या और मानसिक संतुलन का भी परिचय देता हे। आपके अन्दर कई प्रतिभाएं और अपार ज्ञान का सागर है, जो निःसन्देह प्रभावशाली और दूसरों का भला सोचने वाली है। अर्न्तज्ञान एंव गुढ़ शक्ति के प्रकाश से; असम्भव को सम्भव कर दिखाने की कला है। सांसारिक मोह-माया, आनन्द-प्रमोद, कला-संगीत और सुन्दरता से आपने आपको कदाचित्त बचा नहीं पायेंगे, लेकिन धन-मान और सम्मान के अलावा भी आपके कई सपने हैं, जिसे पाने के लिए भी आत्मा पुकारेंगी। पैसे आपकी कमजोरी नहीं, ज़रूरत है। इसे पाने के लिए आप खुद को बेच नहीं सकते।

स्वभाव से आप साहसी, सत्य को स्वीकारने वाले और आत्म विश्वासी है। अपने बर्हुमुखी प्रतिभा का ढिंढोरा आप पिटना नहीं चाहेंगे। वक़्त आने पर अपनी खुबियों को प्रदर्शित करेंगे। आपमें किसी भी स्थिति या व्यक्ति को परखने और समझने की क्षमता है। समाज के परम्परागत नियम कानून के बजाय अपने मन की पुकार पर यकीन करते हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म-काण्ड के बजाय व्यवहारिक दृष्टिकोण रखते हैं। सच्चे कर्म योग, न्याय और सुपात्रों को दान करना चाहेंगे। अन्याय और झूठा को कदापि स्वीकारते ! सत्य के चाहक है और आडंबर से दूर रहते हैं।

सरलता और सहजता से जीना चाहते हैं। आपकी अपनी एक काल्पनिक दुनिया है, जहाँ कोई मतभेद; लोभ या मोह नहीं। व्यवहारिक धर्म शास्त्र और दर्शन की व्याख्या आपके लिए कुछ और हैं। अर्न्तमन और विचार भी आईने की तरफ साफ है। दरअसल आप प्रत्येक वस्तु को तर्क से परखते हैं। किसी विशेष गुरू या पूर्वजों की आत्मा का विशेष आर्शिवाद आपके जीवनधारा बदल देगा।

नामांक 8

आपका अंक शरीरिक एवं मानसिक शक्ति का प्रतिक है, जो निरंतर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, ताकि अपना एक सुरक्षित स्थान बना सके। आप में किसी भी परिस्थिति में परिश्रम करने और परखने की प्रतिभा है। सदा आप आपने काम और व्यवसाय में श्रेष्ठता को प्राथमिकता देते है। छोटी और सस्ती चीजें पसन्द नहीं। आपकी महत्वकांक्षा बहुत ऊँची और बड़ी रहेगी। आपके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में छोटी-मोटी समस्याएँ आती रहती है, किन्तु आप अपने संकल्प की प्राप्ति में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। आपमें गजब का आत्मविश्वास और जोश है। आपने काम के प्रति सदा सजग रहेंगे।

ऊँचे लोगों की तरह आपकी पसन्द भी ऊँची हे। आपका सम्पर्क भी उच्च वर्ग के लोगों के साथ होंगे, जिसमें आप दोस्ती के दायरा बढ़ाने की कला जानते हैं। सम्पर्क का लाभ उठाकर आप बड़े से बड़ा काम करने में दक्ष हैं। ऊपर से आप शान्त और स्वाभाविक मुद्रा में दिखते हैं, लेकिन मन में विचारों की अनगिनत लहरें, सोई हुई समस्याओं की चट्टानों से टकराकर बार-बार लौटती है। जीवन में सदा आप बहादुर सिपाही की तरह मुसिबतों और दुःखों से लड़ते रहे हैं। सफलता के समुन्द्र में विपरित परिस्थिति की तेज लहरों के सामने तैरते हुए आगे बढ़ने का प्रयास किया है। कई बार पीछे भी हो गये, फिर भी डूबने से बच गये। आपने कभी हार नहीं मानी। अपने संकल्प को कभी नहीं छोड़ा। भले ही लोग छूट गये, काम छूट गया या जगह छूट गई। नई जगह पर नये जोश से नया और बड़ा काम करने का प्रयास किया। सभी ने आपको बहुत तंग किया, लेकिन आप हारे नहीं। मंजिल की तरफ बढ़ते ही गये।

आपमें दया भाव है। कुछ अच्छा और नेक काम भी करना चाहते हैं। बहुत सोच विचार कर निर्णय लेते हैं। सोचने में तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी रखते हैं। आधुनिक जीवन में कुछ नये वक्त के अनुसार खूद को ढालने में कुशल हैं। सच्चाई और मेहनत से आगे बढ़ना चाहेंगे।

नामांक 9

आप बुद्धिमान, आत्मविश्वासी और समझदारी से हर निर्णय लेते हैं। कोई काम या जिम्मेदारी लेने से पहले बहुत सोच-विचार कर भविष्य में क़दम उठायेंगे। आपमें साहस के साथ, आत्म सम्मान और महत्वकांक्षा भी है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में आपने एक अलग ढंग से संघर्ष किया है। बहुत उतार-चढ़ाव देखें। किन्तु आपने हारना कभी सीखा नहीं। अपनी बुद्धि, लगन और मेहनत के बल पर कोशिश करते रहे। सिर्फ अपना ही नहीं, परिवार का भी ध्यान रखा। अपनी सारी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निभाया। आपके जीवन में अचानक कई अजीब सी घटनाएं घटती रही हैं। कभी-कभी आप भावना में डूबकर निर्णय लेते हैं।

आर्थिक मामलों में सदा अच्छा फल मिलेगा ! ज़िन्दगी की सारी सुविधा मिलेगी। कभी-कभी धन कमाने के मामले में आप ज्यादा ही साहस करते हैं। आपने अपने व्यवहारिक ज्ञान का उपयोग सदा किया है। अपने जीवन को बड़े नियमित और अच्छे ढंग से जीते हैं। स्वभाव से कुछ कठोर और ज़िदी हैं। वक्त और वचन की कीमत जानते हैं। फूहड़ता पसन्द नहीं। जीने का ढंग निराला और शानदार है। आपके अपने कुछ निश्चित सिद्धान्त और नियम हैं, जिसे किसी भी कीमत पर तोड़ना नहीं चाहेंगे। सबसे अधिक अपनी कार्य कुशलता और तजुर्बे पर भरोसा है। कभी-कभी आपके कठोर नियम दूसरों के लिए भारी पड़ जाते हैं। कई बार इसके कारण मतभेद होने या आपको गलत समझने की लोग भूल कर बैठते हैं। आपने एक बार जो निर्णय ले लिया तो उसे बदलना नहीं चाहेंगे।

कठोर परिश्रम और लगनशीलता के बदौलत आप अपने काम-धंधे में आगे ही बढ़ते जायेंगे। पार्टनशीप के किसी भी काम में सावधानी रखें। किसी भी असम्भव काम को आप सम्भव कर सकते हैं। सदा आपके एक उत्साह, उमंग और नेतृत्व की क्षमता है। अपने व्यस्त जीवन में भी कई अलग प्रकार के जिम्मेदारियों को निभाते हैं। काम आपके लिए पहली प्राथमिकता है। भविष्य आपका सुखद है।

नाड़ी चक्र

हमारे अंग (नाभी) के अधोभाग में कन्द (मूलाधार) है। इसमें अंकूरों की भांति अनेकों नाड़ियां निकली हुई हैं। नाभी के मध्य में लगभग बहत्तर हज़ार नाड़ियां स्थित है। इन नाड़ियों ने शरीर के उदर, भाग के नीचे, दायें-बांयें सब ओर ये चक्राकार सर्प की तरह हैं। शरीर के भीतरी रचना का स्वरूप आज से लाखों वर्षो पूर्व, हमारे विद्वानों ने बांध कर लिया था। पश्चिम के वैज्ञानिक इसे मुश्किल से पांच सौ वर्ष पूर्व जान पाये हैं।

स्वर ज्ञान एक परम ज्ञान है। स्वर साधना सब में श्रेष्ठ, आत्मरूप, तथा सूक्ष्म होते हुए भी सहज एवं विराट है। इसके अभाव में न देवता की सिद्धी संभव है और न ही लक्ष्मी एवं कीर्ति की उपलब्धि सम्भव है। नाड़ियों एवं स्वस्थान के भेद को जानने वाला व्यक्ति परमयोगी है।

सच में मानव शरीर एक प्रकार का महासागर है। इसमें असंख्यों नस-नाड़ियां, नाद-नालों की तरह हमारे शरीर के भीतर बहती है। श्वांस-प्रश्वास के रूप में हमारे भीतर भी ज्वार भाटे उठते गिरते रहते हैं। जिस तरह समुन्द्र में उठने वाले तुफाते एवं ज्वार-भाटों से विद्युत उत्पन्न करने की तकनीक पश्चिम में खोज की गई है। उसी प्रकार मानव शरीर के भीतर एक मीनट में 15 या 16 बार श्वांस लेने की क्रिया द्वारा वायुमंडल से विद्युत आयनों को अन्दर प्रवेश कर उससे शक्तिशाली विद्युत संचार समस्त शरीर में कर सकते हैं। मस्तिष्क रूपी जनरेटर और हृदय रूपी विद्युत केन्द्र मिलकर यह उर्जा पूरे शरीर में उत्पन्न करते हैं।

योग शास्त्र के अनुसार (स्पाईनल कोर्ड) रीढ़ की हड्डी में एक ब्रह्म नाड़ी है। इसके अन्तर्गत इड़ा (नाड़ी चन्द्र) और पिंगला (सुर्य नाड़ी) दो शिरायें गतिशील है। इसे सिर्फ रक्त वाहिनी शिरायें ही नहीं समझनी चाहिए, बल्कि ये विद्युत धारा है। जिस तरह बिजली के

तार पर रबर का खोल चढ़ा रहता है। उसी प्रकार ब्रह्म नाड़ी रूपी रबर के खोल के भीतर इड़ा (ठंडा) और पिंगला (गर्म) तारों की तरह है। शल्य क्रिया द्वारा इन नाड़ियों का देखना संभव नहीं। इड़ा और पिंगला के समान विद्युत उत्पन्न करने वाली सुषम्ना नाड़ी तीसरी धारा का नाम है। इसका स्थूल रूप से अस्तित्व नहीं। यह सूक्ष्म रूप होते हुए भी व्यापक है। जीव चेतना जब इससे होकर भ्रमण करती है, तो ऐसा लगता है, वह किसी आकाशगंगा में प्रवाहित हो रहा है।

प्राचीन काल में योगियों का प्रत्येक क्रिया कलाप और निष्कर्ष, एवं प्रामाणिक वैज्ञानिक होता था। आज विश्व के अनेक डाक्टर वैज्ञानिक योग विद्या को मान्यता दे रहे हैं। अनेक प्रकार के रोगों पर योग साधना ने विजय प्राप्त की है। जहाँ विज्ञान की सीमा समाप्त होती है, वहीं से भारतीय धर्म आध्यात्म और योग प्रारम्भ होता है।

डलहौजी यूनिवर्सिटी (नौवात्कारिया) के डॉक्टर रोजीन आमीटिज और डॉक्टर रेमुण्डक्लींव ने अपने एक शोध लेख में प्रकाशित किया है कि बांये और दांये मस्तिष्क की गतिविधि का दांये और बांये नथुने से श्वास लेने में गहरा सम्बन्ध है। हर डेढ़ घंटे बाद हमारे दाहिना मस्तिष्क विराम चाहता है। तब बांया मस्तिष्कगतिशील हो जाता है। ऐसे में यदि नथुने से श्वास द्वारा जिसे साईकल कहते हैं, हम संगति बैठा लें तो मनुष्य की कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। शरीर में विशुप्त (निष्क्रय) पड़े केन्द्रों या अंगों की जागृति में भी इससे सहायता मिल सकती है।

स्वर साधना द्वारा न सिर्फ शरीर के भीतर की कार्य प्रणाली में सहायता मिल सकती है। बल्कि इस योग विद्या द्वारा आत्मि प्रगति एवं दिव्य दृष्टि प्राप्त हो सकती है। इस के द्वारा योगी प्राण प्रवाह पर नियंत्रण पाकर अपनी सूक्ष्म चेतना और अन्तर दृष्टि का विकाश कर लेता है।

इड़ा बायें भाग में तथा पिंगला दायें भाग में सुषम्ना मध्य देश में है। गंधारी का निवास बायें नेत्र में है। दांये नेत्र में हस्तजिह्वा, दायें कान में पृथा, बायें कान में यशस्विनी, अलम्बुषा मुख में होती है। कुहू लिंग देश में है। दायें कान में पृथा, बायें शंखिनी मूल (गुहा) देश में स्थित है।

हमारे नाभी में मध्य में मुख्य रूप से दस नाड़ियां हैं। इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना गान्धारी, हस्तिजिह्वा, पृथा, यशा, अलम्बुषा, कुहू और दसवीं शंखिनी है। यह प्रमुख नाड़ियां प्राणों का वहन करती हैं। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म कृकल, देवदत, और धनंजय, ये दस प्राण वायु है। इसमें प्राणवायु दसों का स्वामी है। इसमें नाग, कूर्म, कृकर, देवदत और धनंजय यह पांच उपवायु है। प्राण का निवास हृदय में है। अपान का गुदा में रहता है नाभि देश में सुमान, कंठ में उदान तथा पुरे शरीर में व्यान वायु रहती है अन्य तभी का शरीर रचना में महत्व कार्य, यह प्राण वायु रक्तता की शुद्धि एवं पूर्ति करता है। इसका निवास हृदय में है। अपानवायु द्वारा मलमूत्र आदि के त्याग से होनेवाली रिक्तता (कमी) को नित्य पूरा करता है। जीव में आश्रित यह प्राण स्वासोच्छवास और कास आदि द्वारा प्रमाण द्वारा (गमनागमन) करता है। इस लिए इसे प्राण कहते हैं। अपानवायु मनुष्य के भोजन पानी आदि को नीचे की ओर ले जाता है। मुत्र शुक्राणु को भी नीचे की ओर वहन करता है। अपानवायु मनुष्य के अहार और सुधे हुए पदार्थो को रक्त, कफ, पित्त एवं वात को समस्त अंगों में समान भाव से ले आता है। इसलिए इसे समान वायु कहते हैं। उदान वायु मुंह और होठ को स्पंदित करता है, नेत्रों की अरूणिमा बढ़ाता है। शरीर के मर्म (नाजुक) स्थानों को उद्विग्न करता है। इसलिए उदान कहते हैं। व्यानवायु अंगों को पीड़ित करता है। यह व्याधि को कुषित तथा कंठ को अवरूद्ध करता है। व्यापनशील होने से व्यान कहा गया है। नागवायु उद्गारे (डकार वमन,) कूर्मवाया नयनों के उन्मीलन (खोलने बन्द करने में) प्रवृत

होता है। कृकल वायु भक्षण में तथा देवदत वायु जंभाई का कार्य भार संभालता है। धनंजय वायु पवन का स्थान कोष है। यह मृत शरीर में भी व्याप्त रहता है। इसका निवास मस्तिष्क में है। यही कारण है कि मृत शरीर का अग्नि संस्कार करते समय कई खोपड़ी नहीं जलती तब उसे किसी प्रहार द्वारा तोड़ते हैं।

शरीर के मध्य भाग में सुषुम्ना स्थित है। वाम भाग में इंड़ा और दक्षिण भाग में पिंगला है। हमारी नांक में दो छिद्र हैं। इन दोनों छिद्रों से ही हम प्राणवायु लेते हैं। योग विज्ञान के अनुसार हमारे शरीर में भी सूर्य एवं चन्द्र हैं जो क्रमशः नाक के दाहिनी व बाये नथुने से प्रवाहित होते हैं, परन्तु दोनों में एक साथ प्राण वायु का संचार नहीं होता। नाक का एक छिद्र लगभग बन्द रहता है। इसे हम अंगूठे से नाक के दोनों छिद्रों को क्रमशः बन्द करके अनुभव कर सकते हैं। सांस हम किसी एक छिद्र द्वारा ही एक बार में लेते हैं, तब दूसरा भाग बन्द रहता है।

इंड़ा नाड़ी का प्रवाह नाक की बांयी ओर चलता है। इसे वाम या चन्द्र स्वर भी कहते हैं। यह उत्तेजक प्राण प्रवाह है। पिंगला नाड़ी का प्रवाह नाक की दांयी तरफ बहता है। इसे सूर्य स्वर (नाड़ी) कहते हैं। यह शामकप्राण प्रवाह है। मध्यस्था सुषुम्ना नाड़ी को संज्ञा सरस्वती से दी जाती है। यह संधी की स्थिति है, जो अल्प काल के लिए होती है। जब सूर्य बन्द होकर चन्द्र स्वर शुरू में बदलता है, तब कुछ क्षणों के लिए नाक के दोनों छिद्र खुल जाते हैं। उस क्षणिक स्थिति को सुषुम्ना नाड़ी (स्वर) कहते हैं।

शरीर की वायु नाड़ी उत्तराण तथा दक्षिणायन है। दोनों छिद्रों से निकलने वाली श्वासवायु विषुव कहलाती है। इस विषववायु का एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान से युक्त होना संक्रांती कहलाती है। शरीर के वाम भाग में इड़ा तथा दक्षिण भाग पिंगला स्थित है।

स्वर विज्ञान इड़ा और पिंगला की संधी स्थिति में सन्तुलन बैठाना है। असन्तुलन की स्थिति में इड़ा की प्रधानता शरीर में

उत्तेजना और आक्रामकता बढ़ा देती है। वैज्ञानिक इड़ा की संगति को अंग्रेजी में म्पिेथेटिक आरोनामिक नर्वस सिस्टम से बैठाते हैं। जिस प्रकार समुन्द्र की लहरों पर सूर्य एवं चन्द्रमा का प्रभाव पड़ता है। उसी प्रकार हमारे शरीर जिसमें पचहत्तर प्रतिशत तरल पदार्थ है, कि श्वास प्रक्रिया पर भी प्रभाव पड़ती है।

सूर्य स्वर के समय हमारे शरीर में दिन तथा चन्द्र स्वर के समय रात होती है। मनुष्य एक दिन में 21600 बार सांस लेता है। अर्थात एक मिनट में 15 या 16 बार श्वास क्रिया होती है। इससे अधिक बार सांस लेना रोग एवं भोग का लक्षण है। दीर्घजीवी होना उसकी श्वास क्रिया पर आधारित है। जो इस श्वास रूपी पूंजी का अपव्यय करता है। उसकी आयु उतनी ही कम होती है। अक्सर रोगी और भोगी की श्वास क्रिया अधिक होती है। श्वास क्रिया में बार-बार परिवर्तन या अनियामितता रोग का पूर्व लक्षण दर्शाता है। चन्द्र नाड़ी का अधिक चलना मनुष्य के शरीर में शीतलता (कफपित)बताता है। सूर्य स्वर शरीर में गर्मी की अधिकता देता है। ऐसे में क्रोध की मात्रा बढ़ जाती है।

साधारणतः प्रत्येक पखवारे में सांस की गति बदल जाती है। वैसे शास्त्र के नियम अनुसार शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सूर्योदय के समय इड़ा नाड़ी का चलना शुभ है। उसी प्रकार कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा की इसी समय पिंगला स्वर का चलना शुभ होता है। कार्य संपादन हेतु चन्द्र नाड़ी (इड़ा) का चलना। विवेक पूर्ण स्थायी निर्णय के लिए शुभ समय है। सूर्य नाड़ी (पिंगला) स्वर आदेश, साहसपूर्ण कार्यो के लिए उत्तम है।

चन्द्र स्वर (वाम नाड़ी) शुभ कार्यो में सिद्धी देने वाली अमृत रूपी है। जबकि सूर्य स्वर (दक्षिण नाड़ी) जगत को उत्पत्ति करने वाली है। स्वर साधना का महत्व हमारे दैनिक जीवन में बहुत ही है। इसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान जाना जा सकता है। स्वर साधना में चन्द्र स्वर की स्त्री एवं सूर्य स्वर के पुरूष माना गया है।

इन दोनों की अपनी एक निश्चित गति, रूप रंग और गन्ध है। वाम एवं दक्षिण स्वर में पंच तत्व का उदय कहा गया है। उन तत्वों में आठ प्रकार का विज्ञान कहा गया है। प्रथम भेद में तत्वों की संख्या कही गई है, दूसरे में श्वास सन्धि, तृतीय में स्वरों के चिन्ह, चतुर्थ में स्वरों के स्थान, पंचम में उसका वर्ण, षष्ठ में स्वाद का संयोग और अष्टम में गति के लक्षण हैं। प्रथम तत्व के पांच भेद हैं। पृथ्विनी, जल, तेज, वायु और आकाश।

एक प्राण वायु ही दस प्राण वायु के रूप में विभाजित है। देह के भीतर जो प्राणवायु आयाम (बढ़ना) है, उसे चन्द्र ग्रहण कहते हैं। वही जब देह से ऊपर तक बढ़ जाता है, तब उसे सूर्य ग्रहण मानते हैं।

प्राणायाम क्रिया में स्वर साधना का बहुत महत्व है। श्वास नियंत्रण की उपयोगिता जब तक हम नहीं समझेंगे तबतक योग साधना का महत्व को जान सकते हैं। प्रथम हम पूरक प्राणायाम की चर्चा करें। साधक अपने उदर में नाक की श्वास द्वारा जितनी वायु भर सकता है, वह धीरे-धीरे भर लें। यह देह को पूर्ण करने वाला पूरक प्राणायाम कहलायेगा।

फिर श्वास को कुछ क्षण के लिए रोककर शून्य परिपूर्ण कुंभ की भांति स्थित हो जाये तो उसे कुंभक प्राणायाम कहेंगे। तदनुन्तर मंत्र वेत्ता साधक ऊपर की ओर धीमी गति से एक नासिका द्वारा वायु को बाहर निकालें। इसे रेचक प्राणायाम कहेंगे। तत्ववेत्ता अपनी हर सांस का सदुपयोग करता है। योगी श्वात प्रश्वांस द्वारा दिन रात में इक्कीस हज़ार छः सौ की संख्या में अपने शरीर में विराजमान शिवरूप ब्रह्म का मंत्र जप करता है। यही ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर से संबंध रखने वाली आजपा नाम गायत्री है। चन्द्रमा अग्नि तथा सूर्य से युक्त मूलाधार निवासिनी आधा कुंडलिनी शक्ति हृदय प्रदेश में अंकूर की भांति स्थित है। सात्विक पुरूषों में वही योगी उत्तम है; जो इसे जगाने में सक्षम है।

हम जिसे मेरु दण्ड (रीढ़ की हड्डी) जो गले के पीछे से नीचे कमर तक पहुँचा है। इसमें सात चक्र है। इसमें सबसे नीचे मूलाधर चक्र है, जो हमारे शरीर में उर्जा उत्पन्न करता है। उसके बाद स्वाधिष्ठान चक्र हमारे भावात्मक एवं भौतिक शरीर रचना में सम्बन्ध रखता है। उसके बाद मवीपुर चक्र हमारे मनो कल्पनाओं एवं भविष्य के दृष्य के साथ-साथ स्वाभिमान को नियन्त्रण में रखाता है। इसके बाद अनाहत चक्र है, जो ऊपर एवं नीचे के तीन चक्रों को संतुलित रखता है। उसके बाद विशुद्धी चक्र हमारे ज्ञान तनुओं को संचालित करता है। उसके बाद आज्ञा चक्र सदैव मन, बुद्धि एवं हमारे अभिमान को काबू में रखता है। सबसे अन्त में सहस्त्रम चक्र में रुभी समाहित तन-मन को एक सुत्र में बाँधता है।

एक सफल ज्योतिष को नाड़ी चक्र का ज्ञान भी आवश्यक है। इसके साथ हठ योग एवं राज भोग की निपुर्णता प्राप्त करने से सोने में सुहागा हो जाता है। यूं तो ज्योतिष ज्ञान सारे विषयों का समिश्रण है। इसकी सम्पूर्ण रुप से प्राप्ति कठीन तो है, लेकिन असम्भव नहीं!